उठो! जागो! प्राप्त करो!

(कविताओं से संवर्द्धित)

विज्ञान मेला में आ. कनकनन्दी ससंघ

बाल विज्ञान एवं मातृसम्मेलन में उद्बोधन के पहले वैज्ञानिक मॉडलों के अवलोकन, परीक्षण, बाल वैज्ञानिकों को प्रश्न के अनन्तर उन्हें पुरस्कार में स्व-रचित ग्रन्थ प्रदान का एक दृश्य। (विद्या निकेतन सेमारी 2011)

आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव

ग्रन्थ एवं केलेण्डर विमोचन

आचार्य कनकनन्दी द्वारा रचित 4 कविताओं की पुस्तक 1 जीव विज्ञान की पुस्तक एंवं ''आ. कनकनन्दी की आध्यात्मिक यात्रा'' का केलेण्डर के विमोचन का एक दृश्य। (सेमारी-2011)

ग्रन्थ विमोचन

आचार्य कनकनन्दी द्वारा रचित ग्रन्थों का विमोचन करते हुए आचार्य महाश्रमण। विमोचन कराते हुए मणिभद्र जैन। (केलवा 2011)

उठो! जागो! प्राप्त करो!

(कविताओं से संवर्द्धित)

सृजेताः- अभिप्रेरक आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुवर

द्रव्यदाता

1. श्रीमती नीता देवी धर्मपत्नी श्री सुनील पेंढारी एवं पुत्री-पुत्र जागृति, गुञ्जन, पारस पेंढारी (मो. 9822473211)
   103, जयदेव अपार्टमेंट, छाप नगर, नागपुर (महा.)
2. 'जैनमित्र' शैलेन्द्र घीया, मुम्बई
3. श्री दि. जैन मन्दिर, बड़ावली
4. श्री दि. जैन मन्दिर, प्रगतिनगर, डूँगरपुर (राज.)

ग्रंथाङ्क - 86 द्वितीय संस्करण - 2011
(कविता से संवर्द्धित)
प्रतियाँ - 1000 मूल्य - 51/-रु.

-: प्राप्ति स्थान :-

धर्म दर्शन सेवा संस्थान, द्वारा - श्री छोटूलाल जी चित्तौड़ा,
चन्द्रप्रभ दि. जैन मन्दिर आयड़, आयड़ बस स्टॉप के पास, उदयपुर
(राज.) - 313001, मो. 9783216418

-: सम्पर्क सूत्र :-

डॉ. नारायणलाल कछारा (सचिव)
55, रवीन्द्र नगर, उदयपुर (राज.) - 313001
फोन नं. (0294) 2491422, मो. 9214460622
E-mail : nlkachhara@yahoo.com

सत्य-दर्शन

आचार्य कनकनन्दी जी के द्वारा 'उठो! जागो!! प्राप्त करो!!!' नामक पुस्तक लिखी गई है। पुस्तक का हेडिंग ही बता रहा है कि हे ज्ञानियों अब उठो और सोते हुये मत रहो, जागो और कुछ प्राप्त कर लो, यानि मनुष्य जन्म सार्थक कर लो। यह मनुष्य जन्म दुबारा मिलना महा मुश्किल है। प्रत्येक जिज्ञासु को इस पुस्तक का अवश्य ही स्वाध्याय करना चाहिए, इसको पढने के बाद पाठक को अवश्य ही कुछ न कुछ प्राप्त होगा। लेखक ने अच्छा परिश्रम किया है। सोते हुए को जगाने के लिए। अवश्य ही आत्म कल्याण होगा। लेखक समाज को कुछ न कुछ देने के लिए रात दिन परिश्रम करते रहते हैं। समाज का बड़ा पुण्योदय है जो इस प्रकार की कृतियां प्राप्त करते रहते हैं। इस पुस्तक का घर-घर प्रचार हो ऐसी शुभकामना करते हुए, लेखक को व प्रकाशक को आशीर्वाद।

ग.अ. कन्थुसागर

(प्रथम संस्करण से)

1. उत्तम कार्य के निमित्त कष्ट सहने से मत डरो। दीपक जले बिना प्रकाश नहीं दे सकता है और धूपबत्ती जले बिना सुगन्धि नहीं फैला सकती है।
2. पाप, अन्याय, भ्रष्टाचार को दूर करने के लिए क्षुद्रों की निन्दा से भयभीत मत हो। सूर्य क्या उल्लू के डर से अन्धकार को दूर नहीं करता है?
3. आत्मा की पवित्रता ही सर्वश्रेष्ठ शिक्षा, धर्म, संस्कृति है।
4. भ्रष्टों को देखकर स्वयं भी भ्रष्ट होना महान् व्यक्तियों की प्रकृति नहीं है। जैसा कि बगुलों को कीडे खाते हुए देखकर राजहंस कीडे नहीं खाते हैं।
5. दूसरों के ही आदर्श पर चलना महापुरुषों की पहचान नहीं है। स्वयं के आदर्श से दूसरों को प्रभावित करना महापुरुषों की पहचान है।
6. चलती हुई गाडी के पीछे उडती हुई धूली के समान जो दूसरों के पीछे ही भागते हैं उनका भी मूल्य धूली के समान है।
7. मच्छरों के समान गाना सुनाकर खून पीने वाले व्यक्ति से बब्बर शेर से भी अधिक सावधान रहो।
8. जो सच्चा व्यक्ति का अनादर करता है, वह सत्य, धर्म, न्याय, तथा विश्व का भी अपमान करता है।
9. 'जो एक्क हिलज्जई सो सव्वहिलज्जई' अर्थात् जो एक सत्य/द्रव्य/तत्व/पदार्थ को क्षति पहुँचाता है, वह सब को क्षति पहुँचाता है।

आचार्य कनकनन्दी

अथ मंगलाचार

जब तक सिंह सोता रहता है उसका पराक्रम भी सुप्त रहता है। जिस सिंह की दहाड से बड़े-बड़े वन्यप्राणी भी भयभीत हो जाते हैं, आत्मरक्षा के लिए भाग खड़े होते हैं वही सिंह जब सुप्त अवस्था में होता है उसके पास छोटे-छोटे प्राणी खेलते रहते हैं। यहाँ तक कि कुछ प्राणी तो उसके शरीर के ऊपर भी शरारत करते रहते हैं। इसी प्रकार महान् तेजपुंज, महान् विभूति, महान् शक्तिशाली, महा प्राज्ञ मनुष्य जब अज्ञान, मोह, प्रमाद, जडता, परतन्त्रता, निष्कर्मण्यता रूपी निद्रा में सोता रहता है तब छोटी बड़ी अनेक विपत्तियाँ उसे सताती रहती हैं। जिस प्रकार समर्थ गृहमालिक भी जब सोता रहता है चोर निशंक होकर चोरी करते हैं। कोई समर्थ गृह मालिक भी यदि जागता हुआ भी पुरुषार्थ पूर्वक चोर का मुकाबला नहीं करता है तो चोर चोरी करने में सफल हो जाता है। इस के लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ- एक बार एक चोर को एक घर में प्रवेश करते हुये देखकर गृह स्वामिनी स्वपति को सम्बोधन करते हुए बोलती है - स्वामी घर में चोर प्रवेश कर रहा है। गृह मालिक बोलता है कि मैं देख रहा हूँ। चोर जब चोरी करने लगा तब पुनः वह बोलती है - चोर चोरी कर रहा है। गृह मालिक बोलता है - मैं देख रहा हूँ और मेरे पास बन्दूक भी रखी हुई है। चोर चोरी करके जब जाने लगा तब धर्मपत्नी बोलती है - चोर तो जाने लगा है। तब भी गृहमालिक बोलता है - मैं देख रहा हूँ। इसी प्रकार जो व्यक्ति जानते हैं/समझते हैं तथापि पुरुषार्थ नहीं करते हैं वे भी अपना कार्य सिद्ध नहीं कर सकते हैं। कहा भी है-

आस्ते भग आसीन् स्योपर्ध्व तिष्ठति तिष्ठतः।
शेते निषद्य मानस्य चरति चरतो भगः।। (चरवैति चरवैति)

पुरुषार्थहीन होकर बैठे रहने से भाग्य भी बैठा रहता है। पुरुषार्थ से खड़ा होने से भाग्य भी खड़ा हो जाता है। पुरुष, पुरुषार्थहीन होकर सोने से भाग्य भी सो जाता है, प्रबल पुरुषार्थ से आगे बढ़ने से भाग्य भी आगे बढ़ता है। इसलिए हे पुरुषार्थी ! आगे बढ़ते चलो, बढ़ते चलो।

कलिः शयनो भवति संजिहानस्तु द्वापरः।
उत्तिष्ठस्त्रेता भवति कृतं संपद्यते-चरन्।। (चरवैति चरवैति)

पुरुष शयन करने से उसके लिए वह समय कलियुग होता है अर्थात् पुरुषार्थ नहीं करना, कलियुग का आह्वान करना है। पुरुषार्थ के लिए जाग्रत होने पर उसके लिए वह काल द्वापर युग हो जाता है। कार्य करने के लिए खड़े होने पर यह काल उसके लिए त्रेता युग हो जाता है, कार्य करने के लिए आगे बढ़ने से वह काल सत्युग हो जाता है। इसलिए हे पुरुषार्थी ! सत्य को प्राप्त करने के लिए आगे बढ़ते ही चलो। बढ़ते ही चलो।

कुछ व्यक्ति तो निष्क्रिय रहते हैं, अज्ञानी रहते हैं इसलिये वे भी स्व कार्य को सम्पादन नहीं कर सकते हैं। कुछ व्यक्ति सचेत रहते हैं परन्तु पुरुषार्थ हीन होने के कारण कार्य करने के लिये भी असमर्थ होते हैं। कुछ व्यक्ति क्रियाशील होते हैं परन्तु विपरीत क्रिया करते है इसलिये वे भी सफलता को प्राप्त नहीं कर सकते हैं। इसके लिए एक उदाहरण प्रस्तुत कर रहा हूँ- एक जंगल में दो कुटिया थीं। प्रत्येक कुटिया में एक अन्धा एवं एक पंगु रहते थे। एक दिन जंगल में आग लग गई। आग जंगल को भस्म करती हुई कुटिया की ओर बढ़ रही थी। उसमें से एक कुटिया में जो एक अन्धा एवं एक पंगु रह रहे थे उनमें से पंगु दूर से देख रहा है कि आग जंगल को जलाते हुए आगे बढ रही है परन्तु वह लंगडा होने के कारण चलने में असमर्थ था। इसलिये वह आग में जल कर मर गया। दूसरा अन्धा आत्मरक्षा के लिए वहाँ से भागा परन्तु अन्धा होने के कारण आग में गिरा और जलकर राख हो गया। इसी प्रकार एक देखता हुआ भी जानता हुआ भी क्रिया के बिना मरा, दूसरा व्यक्ति क्रिया करता हुआ भी दृष्टि शक्ति के बिना, ज्ञान के अभाव में मरा। दूसरी कुटिया में ऐसे ही एक अन्धा एवं एक पंगु रहते थे। उसमें से पंगु व्यक्ति दूर से आग को देखता है। परन्तु स्वयं चलने में असमर्थ होने के कारण वहाँ से अकेले चलने के लिये एवं सुरक्षित स्थान में पहुँचने के लिये समर्थ नहीं था। दूसरा व्यक्ति चलने में तो समर्थ था परन्तु अन्धा होने के कारण देख नहीं सकता था। दोनों विचार-विमर्श करके अन्धे के कन्धे पर पंगु बैठ जाता है और अन्धा चलने लगता है

तथा पंगु रास्ता दिखाता रहता है। इससे दोनों आग से बचकर सुरक्षित स्थान पर पहुँच जाते हैं। इसी प्रकार जो केवल जानता है परन्तु क्रिया नहीं करता है वह भी कार्य नहीं कर पाता है। जो क्रिया करता हुआ भी विपरीत क्रिया करता है वह भी कार्य सिद्ध नहीं कर पाता है। यह उदाहरण, यह सिद्धान्त प्रायः विश्व की हर घटनाओं में लागू होता है। इसलिए कहा है-

सम्यग्दर्शनज्ञानचारित्राणिमोक्षमार्गः।

अर्थात् सत्विश्वास, सम्यक्विज्ञान और सम्यक् आचरण से मोक्ष का मार्ग बनता है। किसी भी कार्य के लिए उस कार्य सम्बन्धी आत्मविश्वास, परिज्ञान एवं आचरण चाहिये। इन तीनों इकाई के सम्यक् समन्वय बिना केवल विश्वास से या केवल ज्ञान से या केवल आचरण से कार्य नहीं हो सकता। इतना ही नहीं, उपर्युक्त इकाई में से कोई दो इकाई के समन्वय से या तीनों इकाई के असम्यक् समन्वय से भी कार्य नहीं हो सकता है। विश्व में अनेक जो दुर्घटनाएँ, अप्रिय घटनाएँ घटती है उसके मूल में उपर्युक्त कारण ही समाहित रहते हैं। जिस प्रकार एक स्थान की कार से यात्रा करनी है तो कार की गति भी चाहिये, प्रकाश भी चाहिये और ब्रेक भी चाहिये। उसी प्रकार विकास के लिए उन्नति रूपी गति, ज्ञान-विज्ञान-शिक्षा रूपी प्रकाश तथा अनुशासन-न्याय-समता संयमरूपी ब्रेक चाहिए। उपर्युक्त मूलभूत तत्व के बिना विकास सम्यक् रूप से संभव नहीं है। यथा कार का प्रथम तत्व गति है। गति के बिना यात्री लक्ष्य-स्थल को प्राप्त नहीं कर सकता तथा विकास का प्रथम तत्व है प्रगति/उन्नति। जिस प्रकार नदी यदि प्रवाहवान् नहीं होगी तो वह नदी ही नहीं कहलायेगी। स्थिर नदी का पानी सड़ जायेगा, कीड़े उत्पन्न हो जायेंगे, दुर्गन्धित हो जायेगा, प्रदूषण फैलेगा, उस पानी को प्रयोग में लाने वाले रोगी हो जायेंगे। उसी प्रकार मानव समाज में, राष्ट्र में, विश्व में प्रगति नहीं होगी तो वे शव वत् हो जायेंगे। इसलिए विश्व को 'जगत्' कहते हैं। जगत् का अर्थ है 'गच्छतीति जगत्' अर्थात् जो गतिशील, परिवर्तनशील हो उसे जगत् कहते है। वस्तु का स्वभाव ही उत्पाद (नवीनता का प्रादुर्भाव, परिवर्तन), व्यय (प्राचीनता का विनाश) एवं ध्रौव्यात्मक (स्थिर, अविनाशी, शाश्वतिक) है। गति भी व्यवस्थित, लक्ष्यभिमुखी होनी चाहिए। विपरीत गति लक्ष्य स्थल से और भी

दूर कर देती है तो अव्यवस्थित गति लक्ष्य को प्राप्त कराने में बाधक बनती है। यदि पर्याप्त प्रकाश नहीं तो गति करने में विभिन्न बाधा उत्पन्न होती है, दुर्घटनायें घटती है। ब्रेक नहीं तो गति परिवर्तन में 'कार' को रोकने में तो कठिनाइयाँ होती है परन्तु रास्ते में गड्ढा, पत्थर मनुष्यादि हठात् आ जाने पर दुर्घटना घटेगी जिससे 'कार' भी बेकार हो जायेंगी और कार में बैठने वाले भी बेकार हो जायेंगे। इस ही प्रकार प्रगति, विकास भी आत्मानुशासित, विवेकपूर्ण, स्व-पर बाधा रहित नहीं हो तो विनाश का ही कारण बन जायेगा। वर्तमान आधुनिक वैज्ञानिक युग में अनेक क्षेत्र में विकास हुआ है और हो रहा है परन्तु विकास के साथ-2 विनाश भी कुछ कम नहीं हुआ है/न हो रहा है। विकास के साथ-साथ कुछ आनुषंगिक विनाश होना स्वाभाविक है। यथा- अंकुर होने से बीज अवस्था का विनाश, युवक होने के लिए बालक अवस्था का नाश, फल बनने के लिए फूल का विनाशादि। यह विनाश विकास के सहकारी है। ऐसा विनाश आपेक्षित है, स्वागत योग्य है। जैसा की शिक्षा से अशिक्षा-अवस्था का नाश स्वागत योग्य है परन्तु शिक्षा से स्वावलम्बन, नम्रता, अनुशासनादि का विनाश स्वागत योग्य नहीं है।

व्यक्ति से लेकर विश्व तक जो विकास के नीचे विनाश हो रहा है वह नहीं हो ऐसी महती पवित्र भावना से मैंने इस जागो। उठो।। प्राप्त करो।।। (विकट समस्याओं का व्यापक समाधान) नामक कृति की संरचना की है। मैंने जो प्रायोगिक अनुभव, अन्वेषण, शोध-बोध अध्ययन किया है उसके आधार पर ही मुख्य रूप से इस कृति की रचना की है। किसी की निन्दा करने के लिए मैंने यह नहीं लिखा है परन्तु दोषों को दूर करके सर्वे सुखी बने, सर्वे मंगलमय बने, सर्वे पवित्र बने, ऐसा महान् अखिल विश्व कल्याण के उद्देश्य से लिखा है। यह कृति अखिल मान व जगत् के स्वरूप दर्शन के लिए स्वच्छ दर्पण का कार्य करें जिससे व्यक्ति स्वयं में लगी हुई कालिमा को दूर करें।

इस कृति का अध्ययन करके विश्व जगें, शुभ कार्य के लिए पुरुषार्थ करें एवं विश्वकल्याण करें ऐसी शुभ- भावना के साथ-

आचार्य कनकनन्दी

आचार्य श्री विद्यानन्दजी गुरुदेव का पत्र
(आ. श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव के लिए)

उपगूहन-स्थितिकरण-वात्सल्य-प्रभावना हेतु
श्री कुन्दकुन्द भारती ट्रस्ट प्राकृत भाषा भवन
18- बी इन्स्टीटयूशनल एरिया नई दिल्ली- 110067
दूरभाष : 26564510, 26513138 वी.नि. 2534

दि. 25/11/2006

**"ये व्याख्यन्ति न शास्त्रं ददाति शिक्षादिकञ्च शिष्याणाम्।
कर्मोन्मूलनशक्ता ध्यानरतास्ते साधवो ज्ञेयाः।।"**

-क्रियाकलाप, पृष्ठ 143

जो न तो व्याख्यान देते हैं, न शास्त्र रचना करते हैं और न ही शिष्यों को शिक्षा आदि देते हैं, ऐसे कर्मों के विनाश में समर्थ ध्यानलीन पुरूषों को साधु जानना चाहिए।

धर्मानुरागी आचार्यश्री कनकनन्दी जी

प्रतिवंदना! आशा है आपका रत्नत्रय वृद्धिंगत होगा। आचार्य भरतसागरजी मुनिराज को मैं बहुत अच्छी तरह जानता हूँ। वे लगभग दो वर्ष तक मेरे साथ रहे थे। वे बहुत ही शान्त स्वभावी और सरल हृदयी थे। कभी किसी को कोई अपशब्द नहीं कहते थे। सच्चे साधु की भाँति उनकी वाणी पर हमेशा सत्यमहाव्रत, भाषासमिति और वचनगुप्ति की लगाम होती थी। फिर भी आज जो लोग उनके बारे में और उनकी समाधि के बारे में मिथ्या बोल रहे हैं, उनकी वाणी सर्वथा अनर्गल है, बेलगाम है, शास्त्रसम्मत नहीं है।

अतः मेरा आपसे यही कहना है कि आप शान्ति रखें। यह कलियुग हैं, इसमें कलहपाहुड के उपदेशक बहुत मिल रहे हैं। क्या करें, इसमें ऐसा ही चलता है। आप तो बहुत सज्जन हैं और अत्यधिक अध्ययनशील हैं। आप बहुत तोल-मोल कर ही हर शब्द बोलते हैं। आपकी अध्ययनशीलता का तो आज हमारे सर्व साधुओं को

अनुकरण करना चाहिए।

आपको स्मरण होगा कि श्रवणबेलगोला में आपको एक माह तक तेज बुखार रहा था और मैंने आपकी सेवा की थी। साधुओं में इस प्रकार का हार्दिक वात्सल्य ही होना चाहिए, ईर्ष्या-द्वेष-मत्सर नहीं। पारस्परिक द्वेष अज्ञानता और दुर्जनता का सूचक है

आपश्री का विश्वासु
आचार्य विद्यानन्द मुनि

विश्व शान्ति हेतु प्रार्थना

तर्ज - हेSSS नीले गगन के तले, धरती का प्यार पले....

हो SSS नीले गगन के तलेSS सर्वत्र/(सर्वथा) शान्ति फैलेSS
मानव हो या प्रकृति/(पशु) भी हो सदा ही शान्ति पाले SSS....स्थायी....
मानव मिलकर राष्ट्र में रहकर वैश्विक भाव धरें SSS.... हो SSS नीले गगन
मानव पशु पक्षी कीट या पतंग सबसे प्यार पले SSS.... हो SSS नीले गगन
कोई न अपना कोई न पराया वैश्विक कुटुम्ब पले SSS.... हो SSS नीले गगन
काहूँ न राग काहूँ न द्वेष सर्वत्र साम्य पले SSS.... हो SSS नीले गगन
जाति व पन्थ राष्ट्र के कारण काहूँ न बैर पले SSS.... हो SSS नीले गगन
अनीति अनादर पाप व अत्याचार कोई न ऐसा करे SSS.... हो SSS नीले गगन
हिंसा व भ्रष्टाचार शोषण दुराचार ऐसा न कोई करे SSS.... हो SSS नीले गगन
प्रजा हो राजा नेता हो नागरिक सब में मैत्री पले SSS.... हो SSS नीले गगन
प्राणी व प्रकृति सभ्यता संस्कृति सब में शान्ति झरे SSS.... हो SSS नीले गगन
शोषक शोषित मजदूर मालिक वैषम्य भाव टले SSS.... हो SSS नीले गगन
प्रकृति शोषण सञ्चय प्रदूषण कोई कभी न करे SSS.... हो SSS नीले गगन
ग्लोबल वार्मिंग भूकम्प अतिवृष्टि कहीं भी कभी न पले SSS.... हो SSS नीले गगन

सुनामी हीन वृष्टि ओजोन छेद भी विश्व से सभी टले SSS.... हो SSS नीले गगन
सदा हो सदाचार भाव में शुद्धाचार वचन हित ही बोले SSS.... हो SSS नीले गगन
शरीर मन में वचन आत्मा में सदा ही शान्ति झरे SSS.... हो SSS नीले गगन
पर्यावरण की सुरक्षा हेतु सब संकल्प करें SSS.... हो SSS नीले गगन
धर्म व विज्ञान परस्पर मिलकर विश्व कल्याण कर SSS.... हो SSS नीले गगन
मेरा लक्ष्य है सत्य साम्यमय सुखामृत झरें SSS.... हो SSS नीले गगन
कनकनन्दी का आह्वान विश्व को उदार भाव धरे SSS.... हो SSS नीले गगन
वैश्विक समता शान्ति के हेतु है सभी प्रयास करेंSSS.... हो SSS नीले गगन

सामूहिक आह्वान गीत
(क्रान्तिवीर स्वागतम्)

(तर्ज - बंगला राग...)

स्वागतम् स्वागतम् स्वागतम्
क्रान्तिवीर स्वागतम् स्वागतम् ... (स्थायी) ...

1. क्रान्ति हो नीति की, क्रान्ति हो शान्ति की SS...2
   क्रान्ति हो राष्ट्र की शान्ति की SS... स्वागतम् SSS
2. क्रान्ति हो न्याय की, क्रान्ति हो शिक्षा की SS...2
   क्रान्ति हो आत्मा के शान्ति की SS... स्वागतम् SSS
3. क्रान्तिवीर जागो! उठो! शान्ति हेतु आगे बढ़ो SS...2
   क्रोध मान माया त्यागो, वीरता से युद्ध करो... स्वागतम् SSS
4. कुण्ठा स्वार्थ त्याग करो, धैर्य धरो कूच करो SS...2
   सत्य अहिंसा के द्वारा, अन्याय का घात करो... स्वागतमSSS
5. आत्म दौर्बल्य त्यागो, मोह माया को भी नाशो SS...2
   आत्म स्वतन्त्रता हेतु, कर्म शत्रु से ही लड़ो... स्वागतम् SSS

6. कर्म नाश हेतु सदा, ध्यान अध्ययन करो SS...2
   आत्म पुरुषार्थ द्वारा, क्रान्तिवीर मोक्ष वरो... स्वागतम् SSS

नव वर्ष का सन्देश

राग- (1. नगरी-नगरी... 2. वह शक्ति हमें दो...)

नववत्सर नव उत्साह नव सन्देश लाया है।
पुरा अवसाद संक्लेश दोषों को विनाश करने आया है।।

हुत गौरव पुरा स्वाभिमान पुनः जगाने आया है।
आत्मलोकन आत्मशोधन पुनरावर्तन हेतु आया है।।

नववर्ष का उदित सूर्य दिव्य सन्देश लाया है।
अन्तर तमस शीघ्र हटाकर ज्ञान ज्योति प्रगटाया है।।

ज्ञान ज्योति से तन-मन विकसे खिल जाये आत्म-कमल है।
आत्म-कमल से महक उठे गुण सुखमकरन्द/(सुखामृत) झर जाये है।।

आलस प्रमाद निद्रा दूर कर कर्त्तव्य में हो जा तत्पर।
स्व-पर विश्व कल्याण के हेतु आगे बढ़ो हे कर्मवीर।।

सूर्य के समान तेजस्वी बनकर कर्त्तव्यशील सदा है बनो।
नव वर्ष का यह है सन्देश तन मन से है अपनाओ।।

केवल मनोरंजन फैशन व्यसन से नव वर्ष का अपमान है।
आत्म पतन से कभी न होता नव वर्ष का आह्वान है।।

स्वहत्या करके शवयात्रा में क्या करणीय महोत्सव है।
आत्मिक संस्कृति विनाश के द्वारा अनुचित महोत्सव है।।

हिम्मत हो तो मानव

(तर्ज- जीवन में कुछ करना है तो...)

हिम्मत हो तो मानव आगे-आगे बढ़ते चलना,
सत्य के मार्ग पर पीछे कभी नहीं हटना।। (टेक)
मार्ग में पहाड़ हो तो स्वार्थ के काटो उसे,
जंजीर हो मोह के छिन्न-भिन्न करो उसे,
अन्धेरा हो राह में तो जला डालो तुम उसे,
विघ्न व बाधा आवे नष्ट-भ्रष्ट कर उसे।। (1) हिम्मत...
विषम को समकर आगे बढ़ो भाव से,
विषम के विष को भी अमृत कर दो भाव से,
गिरने से टूटे कांच वज्र कभी नहीं टूटे,
दीपक बुझे हवा से सूर्य कभी नहीं बुझे।। (2) हिम्मत...
ईशा सम क्षमावान् प्रताप सा धैर्यवान,
विक्रम सा नीतिवान अभय सा हो बुद्धिमान,
जम्बू सा हो वैराग्यवान् यथार्थ से हो महान्,
स्वार्थ के बन्धन में स्वयं को न मानो महान्।। (3) हिम्मत...
तुम नहीं महान् हो धन युक्त होने से,
अहंकार ईर्ष्यायुक्त राग द्वेष मोह से,
आहार भोग निद्रा हिंसा में तू है पशु सम,
इससे तू ऊपर उठकर त्याग दे सारे गम
परतंत्रता में कभी कोई नहीं होता महान्
"कनकनन्दी" के आह्वान से स्वतंत्र बन जाओ इन्सान।। (4) हिम्मत...

नया इतिहास रचें हम

तर्ज - (एक नया इतिहास रचें हम....)

एक नया इतिहास रचें हम, सत्य मार्ग पर चले हम।

लकीर के फकीर चलते सब, हम सत्य तथ्य का शोध करेंगे।
संकीर्ण रूढ़िवादी छोड़कर, उदार प्रगतिशील बनेंगे।।
सफलता लिए अन्धी दौड़ न करके, सफलता को खींच लायेंगे।
शान्ति के लिए हम नहीं दौड़ेंगे, शान्ति स्वयं में प्राप्त करेंगे।। एक नया....
धर्म के लिए कट्टर बनते सब, सहिष्णु उदार हम बनेंगे।
जीवन में स्वार्थी बनते सब, निस्वार्थी उपकारी बनेंगे। एक नया....
प्रतिस्पर्द्धा से अन्य को न जीतेंगे, निर्द्वन्द पुरुषार्थी बनेंगे।
स्वगति से हम आगे बढ़ेंगे, अन्य को न पछाड़े आगे रहेंगे
भूत के गौरव को मानेंगे, नवीन कीर्तिमान बनेंगे।। एक नया....
फूट से राज्य हम नहीं पायेंगे, संगठन से शासक होंगे।
साक्षरता से नौकर बने सब, साक्षरता से ज्ञानी हम बनेंगे।। एक नया....
धर्म जाति पर तोड़ते सब, हम प्रेम का पाठ सदा पढ़ेंगे।
अन्य से ईर्ष्या करते सब, विश्व बन्धु भी हम बनेंगे।। एक नया....
काष्ट जलकर कोयला होता, हम जलकर कुन्दन ही होंगे।
गाड़ी के पीछे धूली उड़ती, हम सुमेरु सम स्थिर होंगे।। एक नया....
भीड़ में हम नहीं खोयेंगे, अन्य के मार्ग दर्शक होंगे।
आकाश सम विशाल बनकर, अनन्त गुणों के स्वामी बनेंगे।। एक नया....
उन्नत भाव से उन्नत भाग्य, भाग्यशाली बन मोक्ष जायेंगे।
"कनकनन्दी" तो भावना भाय, समस्त जीव मोक्ष ही पायें।। एक नया....

महान् बनने के लक्षण

(तर्ज - आत्मशक्ति से ओतप्रोत...)

महान् लक्ष्य भाव कर्त्तव्य से, होता है जीव महान् रे।

धन जन मान भोग-विलास से, न होता कोई महान् है।। (टेक)
जीव है चेतन अचेतन धन, धन से नहीं महान् रे।
धनादि त्याग से महान् होते हैं, तीर्थंकर साधुजन रे।। महान्... (1)
धनादि निमित्त होता है अन्याय, अत्याचार पापाचार है।
अन्याय अर्जित अन्याय कारक, धन से न बड़ा नर रे।। महान्... (2)
स्वार्थ से प्रेरित स्वार्थ के कारक, जन से न बड़ा नर रे।
भेड़ चाल व भेड़ियाचाल सम, होते हैं स्वार्थान्ध नर रे।। महान्... (3)
मान मद्य सम नीच कर्म करे, अष्टधा मद के रूप रे।
जाति कुल, रूप, ज्ञान, तप, बल, आदि मान के स्वरूप रे।। महान्...(4)
मद्य से भी महामद उत्पादक, पापाचार के जनक रे।
ऐसे मद को करे जो मानव, न होता श्रेष्ठ जनक रे।। महान्... (5)
भोग-विलास में रत जो मानव, वह है इन्द्रियदास रे।
दास कभी भी प्रभु न होता, यह है त्रिकाल सत्य रे।। महान्... (6)
महान् लक्ष्य भाव कर्त्तव्य से, जीवन होता पावन है।
पावन जन ही महान् होते हैं, अन्य हैं अधम जन रे।। महान्... (7)
पावन को जो नवधा माने हैं, वे भी न बनते पावन हैं।
अधम को जो नवधा माने हैं, वे भी बनते अधम हैं।। महान्... (8)

हे मानव! तू न बन अपावन

तर्ज :- (मेरा जूता है जापानी...)

धरती का भगवान्, क्यों बना हैवान
सर्वभक्षी, मांसाहारी, स्वभक्षी नराधम... (टेक)
समुद्र पृथ्वी और गगन, सब के ऊपर तेरा शासन... 2
पशु पक्षी कीट पतंग तरुगण, सब के निवास में तेरा भवन... 2 ।।धरती।। (1)
सब प्रदूषणों के तुम निर्माता, सब व्यसनों के तुम भोक्ता... 2

सब पापों के तुम हो कर्त्ता, प्रकृति के विनाश कर्त्ता... 2 ।।धरती।। (2)
तुम्हारी तृषाग्नि अति ही दाहक, समस्त वस्तु का होता पाचक... 2
जड़ चेतन या भौतिक साधन, भस्मासुर सम करते दहन... 2 ।।धरती।। (3)
तेरे अत्याचार से प्रकृति क्षोभित, ग्लोबल वार्मिंग से लेती प्रतिशोध... 2
बाढ़ दुष्काल व भूकम्प सुनामी, तेरी ही दुष्कृति बनी है जननी... 2 ।।धरती।। (4)
मनु के अनुगामी बनो हे मानव, दानवता छोड़ बनो सुमानव... 2
असुरत्व छोड़ जगाओ दिव्यत्व, दिव्यत्व से पाओ तुम अमरत्व... 2 ।।धरती।। (5)

(1) प्रातः काल जब माता सोते हुए बच्चों को उठाती है तो कुछ बच्चे माता से रूठ जाते हैं इसी प्रकार कुछ अबोध व्यक्ति बोध देने वालों से नाराज हो जाते हैं।

(2) बीज अंकुर से पुनः बीज तक विकास करता है उस ही प्रकार जीव आदर्श का अनुकरण करते हुए स्वयं आदर्शमय बन जाता है।

(आ. कनकनन्दी)

स्वसंघ के आदर्शों के द्वारा जैन धर्म का प्रचार-प्रसार विश्व स्तर पर संभव

(आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के संघ की नियमावली)

1. संघ में चातुर्मास, केशलोंच, (दीक्षा जयन्ती, आचार्य पद जयन्ती, जन्म-जयन्ती आदि नहीं मनेगी) की आमंत्रण पत्रिका नहीं छपेगी। वैसे गुरुदेव इन पत्रिकाओं को पहले से ही छपवाने के पक्ष में नहीं थे, अगर श्रावक अपनी स्वेच्छा व भक्ति से चातुर्मास की पत्रिका छपवाते भी हैं तो गुरुदेव संघस्थ उनको नहीं भेजेंगे, श्रावक ही भेजेंगे। इसलिए सूचना हेतु सामान्य व कम मात्रा में ही श्रावक पत्रिकाएँ छपाये। संगोष्ठी, शिविर, दीक्षा-महोत्सव आदि विशेष कार्यक्रम की पत्रिका के लिए उपर्युक्त प्रावधान नहीं है।
2. प्रवचन-विधान/पंचकल्याणक/मठ-मन्दिर-मूर्ति निर्माण/वेदी प्रतिष्ठा/शिविर/संगोष्ठी/साहित्य प्रकाशन/देश-विदेश में धर्म प्रचार कार्य/विश्व-विद्यालयों में शोधकार्य/विश्व-विद्यालयों में आचार्य कनकनन्दी साहित्य कक्ष की स्थापना इत्यादि कार्य पहले से ही स्वेच्छा, सहजता-सरलता से होते थे तथा आगे भी होंगे।
3. जिससे श्रावक पर अधिक आर्थिक बोझ पड़ता हो ऐसे कार्य स्वयं श्रावक अपनी शक्ति-भक्ति स्वेच्छा से करते हैं तो स्वयं करें, संघ ऐसे कार्यों को करने हेतु दबाव नहीं डालेगा।
4. आचार्य भगवन् की अनुमति के बिना संघ के कोई भी सदस्य (साधु/साध्वी, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी-श्रावक) किसी भी प्रकार की वस्तु श्रावक से नहीं माँगेंगे और न आदेश देंगे।
5. किसी भी प्रकार की बोली हेतु संघ दबाव नहीं डालेगा।
6. संस्था के विभिन्न वैज्ञानिक उपकरण आवश्यकता के बिना संघ में

नहीं, संस्था में ही रहेंगे।

7. संकीर्ण पंथवादी, अर्थलोलुपी, अयोग्य, अनुशासनविहीन, अविनयी, गृहस्थ, विद्वान, पंडित, ब्रह्मचारी-ब्रह्मचारिणी, साध्वी, साधु (स्व या परसंघ) के लिए भी संघ में अनुमति नहीं है। उपर्युक्त गुणों से युक्त व्यक्ति से लेकर साधुओं को संघ में स्वीकार्य करने का कार्य आचार्य गुरुदेव के निर्णय पर ही होगा।
8. संघ में संकीर्ण मतवाद, पंथवाद, परम्परावाद, संतवाद, ग्रन्थवाद, जातिवाद, राष्ट्रवाद से परे उदार सहिष्णु, सनम्रसत्यग्राही, अनेकान्तमय वैज्ञानिक पद्धति से स्व-पर-विश्वकल्याणकारी विचार-व्यवहार-कथन लेखन-अनुसंधान-प्रचार-प्रसार को ही महत्व दिया जा रहा है, आगे भी दिया जायेगा।
9. जिस द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, परिस्थिति, समाज में उपर्युक्त उद्देश्य एवं कार्य सम्पन्न होंगे ऐसे क्षेत्रादि विशेषतः योग्य ग्रामादि, शहरादि में ही संघ का विहार निवास, चातुर्मास अधिक से अधिक होगा।
10. संघ के सभी सदस्य स्वावलम्बी बनेंगे यानि अपना कार्य स्वयं करेंगे तथा स्वानुशासी यानि संघ के नियम-कानून-अनुशासन का पालन करेंगे एवं प्रत्येक कर्त्तव्य समय पर करेंगे।
11. स्वास्थ्य की विशेष समस्या के कारण अपवाद से जो उपचार के रूप में पंखादि, औषधि आदि का प्रयोग होता है उस समस्या का समाधान होने के बाद उसका प्रयोग नहीं करना।
12. संघस्थ सभी सदस्य परस्पर में वात्सल्य, सेवा, सहयोग, स्थितिकरण, उपगूहन से युक्त होंगे।

I आहार सम्बन्धी नियम-

1. रसोई गैस से बना भोजन-पानी-दूध का त्याग-

करोड़ों त्रस जीवों के शरीर से निर्मित, असंख्य स्थावर जीवों के हिंसाकारक, विस्फोट से घर के जलने से लेकर अनेक नर-नारियों के मृत्यु के कारक तथा अनेक रोगों के कारणभूत गैस से निर्मित भोजन आदि का त्याग का नियम है। विस्तृत विवरण आचार्य कनकनन्दी के साहित्यों से प्राप्त करें।

2. मटर, टमाटर, ग्वारफली, बेसन, उड़द, मसूरदाल, तुन्दरू (टिंडूरी,टोंडले), सेंगरी (मोगरी), तरबूज, खरबूज, सेमफली, लाल मिर्च, तेल आदि का त्याग।
3. शक्कर, नमक आदि का कम प्रयोग।
4. अधकच्चा-अधपका भोजन अभक्ष्त्य एवं स्वास्थ्य के लिए हानिकारक होने से त्याग।
5. कच्चा खट्ट फल, खट्ट दही-मट्ठ आदि त्याग।

II योग्य निवास-

स्वास्थ्य रक्षा, ध्यान, अध्ययन, अध्यापन, साहित्य-लेख-कविता आदि लेखन, धार्मिक कक्षा, शिविर, संगोष्ठी, देश-विदेश में धर्म की प्रभावना, विश्राम-शयन, आहार क्रिया आदि के योग्य स्थान-ग्राम-नगर में आचार्य श्री कनकनन्दी ससंघ का विहार, प्रवास, चातुर्मास आदि होंगे।

III शौच क्रिया योग्य स्थान-

साधुओं के मूलगुण स्वरूप प्रतिष्ठान समिति (शौचक्रिया), प्रातः- सन्ध्या भ्रमण, योगासन, प्राणायाम, ध्यान आदि के लिए योग्य प्रदूषणों से रहित-शान्त-स्वच्छ स्थान (निवास स्थान से 2-3 कि.मी. दूर तक) सहित ग्राम-नगरादि में श्री संघ सहित आचार्य श्री निवास-चातुर्मास आदि करेंगे।

IV आचार्य कनकनन्दी की स्वास्थ्य सम्बन्धी समस्याः-

आचार्य श्री कनकनन्दीजी गुरुदेव की विदग्ध अम्लपित्त (हाईपर एसिडिटी) शारीरिक गर्मी, एलर्जी के कारण उपरोक्त योग्य भोजन, निवास स्थान आदि की आवश्यकता है अन्यथा आचार्य श्री की स्वास्थ्य समस्याएँ (वमन (उल्टी-कै) चक्कर, बेहोशी, हैजा, पीलिया, सुस्ती आदि) हो जाती है। आचार्य श्री शीत-ऋतु को छोडकर अन्य समय में गरम करके ठंडा किया हुआ पानी, दूध, भोजन आदि आहार में लेते हैं।

V विविध ज्ञानार्जन के नियमः-

अनुशासन, समयानुबद्धता, समय की कमी के कारण धर्म, दर्शन, विज्ञान, गणित, आयुर्वेद, भाषा, व्याकरण, नैतिक शिक्षा, सामान्य ज्ञान, प्रूफ रीडिंग, प्रबन्धन आदि का अध्ययन-अध्यापन-प्रशिक्षण, चर्चा, शंका समाधान आदि सामुहिक रूप से कक्षा, शिविर, संगोष्ठी आदि संघ में होता है। विशेष परिज्ञान आचार्य श्री कनकनन्दी जी गुरुदेव के साहित्य से प्राप्त कर सकते हैं।

VI स्वास्थ्य सम्बन्धी सामुहिक प्रशिक्षण के नियमः-

स्वास्थ्य रक्षा के नियम, रोग दूर करने के उपायभूत आदर्श आहार, विचार, दैनिकचर्या, प्राणायाम, योगासन, ध्यान आदि का प्रशिक्षण संघ में सामूहिक कक्षा, शिविर, संगोष्ठी में ही दिया जाता है तथा आचार्य श्री के विभिन्न साहित्यों में भी वर्णित है किन्तु व्यक्तिगत नहीं दिया जाता है अतः कक्षा आदि से लाभान्वित हों परन्तु व्यक्तिगत न चाहें, न ही पूछें, न ही कुछ मांगे। विशेष परिज्ञान आचार्यश्री के साहित्यों से प्राप्त कर सकते हैं। ऐसा ही अन्यान्य समस्या/शंका-समाधान सम्बन्धी जान लेना चाहिए।

VII त्याग-व्रत-नियम-वचन सम्बन्धी अनुशासनः-

(A) किया गया त्याग एवं लिया गया व्रत-नियम पालन करेंगे।

(B) त्याग किया गया गृहस्थ जीवन सम्बन्धी विषय (शादी,विवाह, व्यापार,

कुटुम्ब, परिवार, नौकर-चाकर, पढ़ाई, नौकरी आदि) चर्चा नहीं करेंगे, न ही लिखेंगे अर्थात् नव कोटि से त्याग रहेगा।

(C) गृहस्थी सम्बन्धी किसी भी प्रकार के विषयों को मन-वचन-काय, कृत, कारित, अनुमोदना से त्याग करेंगे।

(D) विकथा, निन्दा, चुगली, वाचालता, राग-द्वेष-ईर्ष्या-घृणा-लड़ाई-झगडा-फूट डालने योग्य वचन, कठोर आदि वचन पूर्ण त्याग करेंगे। अतः उपरोक्त विषयों की चर्चा संघ के साथ अन्य कोई गृहस्थ-श्रावक-साधु-साध्वी आदि न करें।

(E) संघ में किसी भी प्रकार ख्याति, पूजा, लाभ, प्रसिद्धि, चन्दा-चिट्ठा, याचना, किसी भी प्रकार से दूसरों के ऊपर दबाव डालने के काम पूर्णतः वर्जित है।

सुविचार :-

1. जो व्यर्थ बात है चाहे वह किसी के द्वारा कही गई हो, उसका उत्तर देने का सवाल ही कहाँ उठता है? आप खुद ही सोचिये! उसे उत्तर देने योग्य मानकर आप उसे सार्थक नहीं मान लेते हैं?/बना देते हैं?
2. झूठे शब्द सिर्फ खुद में बुरे नहीं होते बल्कि वे आपकी आत्मा को भी बुराई से संक्रमित कर देते हैं।
3. संस्कारवान् का परिचय :- किसी मनुष्य या स्त्री की संस्कृति या संस्कार का पता इस बात से लग जाता है कि वे झगड़ने के समय कैसा व्यवहार करते हैं। (जार्ज बर्नार्ड शॉ)
4. **सत्साहसी का परिचयः-** दबाव, तनाव और विपदा की स्थिति में भी मर्यादा का परिचय देना, साहस की बस यही परिभाषा है। (अर्नेस्ट हेमिंग्वे)
5. कोई यदि योगी बाहर के शक्ति जगत से अपने को पृथक् करके एकान्त में रह तो वह सब तरह के रोगों से मुक्त हो सकता है। (महर्षि अरविन्द घोष)
6. संसार में वही सबसे अधिक भाग्यवान् है, जिसके मन की प्रवृत्तियों को

संसार की शृंगारिक वस्तुएँ अपनी ओर खींचने में असमर्थ रहती है। (टॉलस्टाय)

-उपरोक्त नियम के सारांश-

आचार्यश्री कनकनन्दीजी गुरुदेव आगम, विज्ञान, मनोविज्ञान, द्रव्य, क्षेत्र, काल, भाव, अनुभव, स्वास्थ्य, साधना, शान्ति, स्वाध्याय, ध्यान, स्वप्न, शकुन, अंगस्फुरण, पूर्वाभास, समाज, परिस्थिति, पर्यावरण, साहित्य लेखन एवं प्रकाशन तथा देश-विदेश में आचार्यश्री के शिष्यों द्वारा हो रही धर्म प्रभावना की दृष्टि से आहार, विहार, निवास, चातुर्मास आदि करते हैं एवं आगे भी करेंगे।

विषयानुक्रमणिका

अ.क्र.	विषय एवं गीत क्रमाँक	पृ.क्र.
1.	आशीर्वाद	3
2.	अथ मंगलाचार	4
3.	आचार्य विद्यानन्द का पत्र	8
4.	विश्व शान्ति हेतु प्रार्थना (वैश्विक शान्ति भावना)	9
5.	सामूहिक आह्वान गीत (क्रान्तिवीर स्वागतम्)	10
6.	नव वर्ष का सन्देश	11
7.	हिम्मत हो तो मानव	12
8.	नया इतिहास रचें हम	12
9.	महान् बनने के लक्षण	13
10.	हे मानव तू न बन अपावन	14
11.	स्वसंघ के आदर्शों के द्वारा जैनधर्म का प्रचार-प्रसार विश्व स्तर पर सम्भव (आचार्य कनकनन्दीजी गुरुदेव के संघ की नियमावली)	16

प्रकरण- 1

सुख एवं दुःख के उपाय

1.	सुखी होने के उपाय	26
2.	आदर्श जीवन चर्या	27
3.	सुखी बनने के लिए गुणी बनना चाहिये	28
4.	नवयौवन में महान् लक्ष्य प्राप्त करो	28
5.	यौवन रूपी सुअवसर का सदुपयोग	29
6.	प्रौढ़काल का सदुपयोगः आत्मकल्याण	30
7.	दुःख के विश्वरूप एवं सुख प्राप्ति के उपाय	31
8.	व्यक्तिगत दुःख	32
9.	सुख-स्वरूप एवं सुख-प्राप्ति के उपाय	33
10.	स्वास्थ्य एवं शान्ति प्राप्ति के उपाय	33
11.	उत्थान-पतन तथा शाश्वतिक उत्थान	35
12.	विनाश होता है धीरे धीरे (-) नकारात्मक विकास के सूत्र	36
13.	विकास होता है धीरे धीरे (+) सकारात्मक विकास के सूत्र	38
14.	परपीड़क का विनाश एवं साम्यभावी का विकास (साम्यभाव की महिमा)	39
15.	मानव सुखी बने तो कैसे?	41

प्रकरण- 2

भारत की महानता एवं विकृतियाँ

1.	भारत महान् बनें तो कैसे?	47
2.	मेरे देश की संस्कृति!	51
3.	हे भारतीय पुनः जागो- स्वगौरव प्राप्त करो! (राष्ट्रीय आह्वान-प्रबोधनगीत)	52
4.	प्राचीन गौरव- आधुनिक बोध से हे भारतीय! पुनः विश्वगुरु बनो! (राष्ट्रीय उद्बोधन कविता) (नृत्य-परेड-बोध गीत)	53
5.	राष्ट्रीय झण्डा/प्रतीक हमें सिखाता है!	54
6.	भारतीय बने सुभावधारी।	55
7.	भारतीयों वैश्वीकरण अपनाओ! (प्रेरक गीत)	56
8.	हो भारतीय संस्कृति युक्त जापानी कार्य पद्धति	57
9.	इण्डियनों के पिछड़ापन के कारण एवं निवारण (भारत के पतन एवं उत्थान के कारण)	57
10.	सुखी एवं दुःखी होने के कारण (दुःखी की विकृत भावना)	59
11.	विश्वगुरु भारत बन गया बेईमानों का देश (सुधारपरक व्यंगात्मक कविता)	61
12.	आधुनिक इण्डियन की एक ही भाषा (व्यंगात्मक उद्बोधन परक कविता)	63

प्रकरण- 3

जैनधर्म को विश्वस्तर पर पहुँचाने के उपाय

1. जैनधर्म की प्रभावना/प्रगति कैसे हो? 67
2. वह जैनधर्म है मेरा! 72
3. जैन तत्त्व वर्णमाला (जैन तत्त्व परिचय मालिका) 73
4. भ. महावीर यदि भारत में होते अभी समस्याएँ होती भारी 74
5. अन्तर मम विकसित करो (आध्यात्मिक प्रार्थना) 75
6. भाव से भाग्य एवं भविष्य! 76
7. कब आदर्श जीवन होगा 77
8. स्व-पवित्र भाव ही स्वधर्म तथा स्व-अपवित्र भाव ही विधर्म (स्वधर्म से शान्ति-विधर्म से अशान्ति) 78
9. यदि यह न कर सको तो वह करो 79
10. सुभाव से जीवन निर्माण एवं निर्वाण 80

प्रकरण- 4

सर्वोदयी शिक्षा एवं संकीर्ण शिक्षा

1. सबसे शिक्षा लो... महान् बनो! 81
2. शिक्षा की गाथा-व्यथा-वृथा-आत्मा 82
3. शिक्षक की आत्मकथा (प्राचीन आध्यात्मिक शिक्षक से वर्तमान के लौकिक शिक्षक तक) 83
4. विद्यार्थी की आत्मकथा (आध्यात्मिक विद्यार्थी से लौकिक विद्यार्थी तक) 85
5. बचपन बचाओ विश्वगुरु बनाओ 86
6. शिक्षा विकासकारी बने तो कैसे? 87

प्रकरण- 5

नारी की गरिमा एवं विकृतियाँ

1. नारी पूजनीया बने तो कैसे? 95
2. मातृशक्ति उद्धारक शक्ति बने न कि संहारक (नारी की गरिमावस्था एवं पतितावस्था) 105
3. पावन व पतिता नारी 106
4. आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी (आधुनिकता से नारी के लिए सुविधा एवं समस्याएँ) 107
5. भोली मेरी माँ 109
6. स्व माता-पिता से बच्चों की करुण प्रार्थना (वर्तमान के बच्चों की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा) 110
7. मैं हूँ अकाजकारी गृहिणी (गृहिणी की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा) 112

प्रकरण- 6

नेता का स्वरूप

1. नेता की आत्मकथा 114

आचार्य श्री कनकनन्दी साहित्य कक्ष की सूची 117-120

प्रकरण (1) सुख एवं दुःख के उपाय

सुखी होने के उपाय

(तर्ज- यमुना किनारे श्याम जाया न करो ... 2. तुम दिल की धड़कन...)

सुखी होने के उपाय सुना भी करो
सुनकर आचरण किया भी करो।
तुम ही सुख स्वरूप माना भी करो,
दुःखों के कारणों को त्यागा भी करो।
संक्लेश, ईर्ष्या, द्वेषादि दुःख ही जानो,
सत्य साम्य शान्तिमय सुख ही मानों। (टेक)
सुख का प्रथम शर्त सत्य निदान,
असत्य मायाचारी दुःख निदान।
समता में सुख का होता निवास,
संक्लेश से दुःख का होता आवास।
अतएव समता से जीया ही करो,
तनाव को सर्वथा त्यागा ही करो। (1)
क्षमाधारो प्रेम करो ईर्ष्यादि त्यागो,
उपकारी प्रति धन्यवाद किया करो।
अपकारी पापी प्रति करुणा धरो,
पवित्र बनने हेतु भावना धरो।
स्व-दुर्गुण त्याग हेतु संकल्प करो,
निन्दा भाव त्यागकर क्षमा को धरो। (2)
आलोचना दूसरो की किया न करो है,
समालोचना से गुण ग्रहण करो है।
साक्षीभाव से सदा जीया ही करो,
आत्म स्वभाव का ध्यान किया ही करो।
सुसंवाद परस्पर किया ही करो,
वाद-विवाद-कुतर्क किया न करो। (3)

ईर्ष्या द्वेषादि से शक्ति होती नष्ट है,
स्व-पर की शान्ति भी होती विनष्ट है।
कर्म बन्ध रोगादि भी होते हैं अनेक,
विविध दुःखों से बीते भव भी अनेक।
दुःखों के विनाश हेतु करो हे यत्न,
'कनकनन्दी' भी करे यही प्रयत्न। (4)

आदर्श जीवन-चर्या

(तर्ज- 1. सम्यग्दर्शन प्राप्त करेंगे... 2. वन्दे वन्दे वन्दे, वन्दे मातरम्... 3. अच्छा सिला दिया तूने... 4. लकड़ी की काठी)

प्रातःकाले हम सदा शीघ्र उठेंगे, प्रभु नाम सदा हम ध्यान करेंगे।
बड़ों को सदा प्रणाम करेंगे, छोटों को सदा हम प्यार करेंगे।। (1)
सुस्वागतम् सुप्रभातम्... SSS ।।टेक।।
शौच क्रिया दन्तधावन नित्य करेंगे, प्रासुक जल से स्नान करेंगे।
योगासन प्राणायाम व्यायाम करेंगे, आत्मा की शुद्धि हेतु मन्दिर जायेंगे।। (2)
हम सब स्वाध्याय नित्य करेंगे, भक्ति से सन्तों को आहार देंगे।
करुणादान भी सदा करेंगे, साधना हेतु शुद्ध भोजन करेंगे।। (3)
व्यापार कृषि सेवाशिल्प करेंगे, न्याय के मार्ग पर कार्य करेंगे।
भ्रष्टाचार, हिंसा, चोरी नहीं करेंगे, फैशन-व्यसनों से दूर रहेंगे।। (4)
क्रोध मान माया लोभ नहीं करेंगे, क्षमा व शौच धर्म हम पालेंगे।
माता-पिता गुरु की सेवा करेंगे, राष्ट्र के हित का ध्यान रखेंगे।। (5)
मद्य मांस धूम्रपान नहीं करेंगे, पर्यावरण की सुरक्षा करेंगे।
स्व-पर-विश्व हेतु काम करेंगे, आत्मा की शुद्धि हेतु ध्यान करेंगे।। (6)
निशा भोजन कभी नहीं करेंगे, अश्लील सिनेमा नहीं देखेंगे।
लड़ाई-झगड़ा-संक्लेश नहीं करेंगे, व्यर्थ वार्तालाप नहीं करेंगे।। (7)

सन्ध्याकालीन क्रिया हम करेंगे, स्वाध्याय आरती नित्य करेंगे।
साधु की वैयावृत्ति सदा करेंगे, प्रभु नाम लेकर शयन करेंगे।। (8)

कनकनन्दी की यह शुभ भावना, मैं भी करूँ नितदिन आत्मसाधना।
सर्वजीव सुख शान्ति वरण करें, स्वकल्याण हो शुभभावना।। (9)

सुखी बनने के लिए गुणी बनना चाहिए

तर्ज :- (वीर महावीर का ...)

हिम्मत हो मानव तो शान्त बनना चाहिए।
स्वयं की कमियों को दूर करना चाहिए।।
स्वयं के कारणों से तू दुःखी हुआ सदा।
उन कारणों को पहले दूर करना चाहिए।।
स्व के कारणों को हटाने की हिम्मत नहीं।
तो दूसरों के कारणों से दुःख न होना चाहिए।।
तेरे ही द्वारा तेरा होता जा रहा पतन।
दूसरों को दोष दे स्वयं न गिरना चाहिए।।
गेंद मे जब छेद है तो पवन है कहाँ भरे।
तब हवा के भरने हेतु छेद भरना चाहिए।।
स्वयं में जब दोष है तो गुण कहाँ से आयेंगे।
गुणवान् बनने हेतु दोष दूर करना चाहिए।।
चाह न अन्धेरे की तो प्रकाश करना चाहिए।
चाह सुख की है यदि तो गुणी बनना चाहिए।।
''कनकनन्दी'' भाव भाये सुखी बनो हे मानव!।
सुखी होने के लिए तो गुणी होना चाहिए।।

नवयौवन में महान् लक्ष्य प्राप्त करो

तर्ज :- (चमचमाती दुनियाँ में ...)

नव यौवन बसन्त ऋतु में, गुण सुमनों को खिलने दो।
प्रसिद्धि सुवास फैले, पुरुषार्थ पवन बहने दो।।
गत चंचल पत्तों को अब गिर जाने दो।
धैर्य रूपी कोपलों को विकसित होने दो।। नवयौवन ...
सफलता के फल फलने दो फल भार सी नम्रता हो।
जीवन की देहरी पर दानवता न चढ़ने दो।। नवयौवन ...
नर जन्म का सुवर्ण अवसर नवयौवन में प्रगट हुआ।
कर्त्तव्यनिष्ठा अपनी बढ़ा सेवा पुण्य बढ़ने दो।। नवयौवन ...
तन-मन की पक्वता आई, बचपन की चंचलता गई।
दिल-दिमाग में उत्साह भारी बड़े लक्ष्य बनने दो।। नवयौवन ...
''कनकनदी'' तुमको पुकारे, आओ मेरे संग भाई।
आज मेरे भाव समझो, क्रांति ज्योत जलने दो।। नवयौवन ...

यौवन रूपी सुअवसर का सदुपयोग

राग :- (आओ बच्चों तुम्हें ...)

बढ़ो है नवजवान क्षुद्रता में तेरा काम नहीं,
खाना-पीना मौज करना यह कोई जीवन लक्ष्य नहीं।। वन्दे क्रान्तिवीर-2
आहार निद्रा भय मैथुन, पशु-पक्षी भी हैं करते सदा,
यह ही यदि तुम करते रहोगे तो, उन पशुओं से नहीं जुदा।।- खाना-पीना(1)
लड़ाई-झगड़ा कलह विसंवाद, यदि करते रहोगे तुम,
नारकी समान तुम्हारा जीवन, उनसे महान् न बनोगे तुम।। (2)
भोग-विलास व मनोरंजन में, यदि जीवन बिताते हो,
देव-दुर्लभ नर तन पाकर, इसको व्यर्थ गँवाते हो।। (3)
खेल कौतुक आवारागर्दी में, ओजपूर्ण यौवन खोते क्यों?
मानव जीवन के महान् लक्ष्य को कदापि नहीं पाओगे तुम।। (4)
धन कमाकर फैशन व्यसनों में, यदि खपाया यौवन तो,

जैसे चिन्तामणि रत्न को कौआ, उड़ाने में (लगाया हो)/लगाते तुम।। (5)
स्व पर विश्व कल्याण हेतु, करो तुम है सदा यतन,
इससे तुम्हारा विकास होगा, इससे होगा उदार मन।। (6)
उदार मन में होता उत्साह, पुण्य बन्धता है सातिशय,
जिससे होता है महान् कार्य, इहपरलोक अभ्युदय।। (7)
पुण्यातिशय व अभ्युदय से, करो तुम हो आत्मविकास,
जिससे तुम पाओगे मोक्ष, सच्चिदानन्दमय आत्म प्रकाश।। (8)
वासुपूज्य से महावीर तक, पंच बालयति तीर्थंकर हुये,
महात्मा बुद्ध, विवेकानन्द, युवावय में विश्व को जगाये।। (9)
खुदीरामवसु भगतसिंह सुभाष (चन्द्र) भी, इसी वय में नेता हुये,
जगदीशचन्द्र आइन्स्टीन व, न्युटन वैज्ञानिक इस वय में हुये।। (10)
राणाप्रताप शिवाजी आदि, इस वय में क्रान्तिकारी हुये,
स्वशक्ति का उपयोग करके, महान् से महान् व्यक्तित्व हुये।। (11)
"कनकनन्दी" है तुम्हें जगाये, उठो! जागो! करो प्रयाण!
जब तक न हो लक्ष्य की प्राप्ति, तब तक करो सदा प्रयाण।। (12)

प्रौढ़काल का सदुपयोग : आत्मकल्याण

तर्ज :- (1. दुःख से घबराओ ... 2. जीवन में कुछ ...
3. भला किसी का ... 4. बस्ती-बस्ती पर्वत...)

अनुभव के भण्डार लेकर, प्रगट हुआ है प्रौढ़काल।
अनुभव से शिक्षा ले मानव, जिससे बने जीवन निहाल।। (टेक)
बाल में पढ़ा युवा में गुना, अब तू करले परिपालन,
जिससे परम लक्ष्य मिलेगा, ऐसा अब तू करले यतन ।। अनुभव... (1)
बालपने को खेल में खोया, किशोर वय में तुमने जो गाया/(पढ़ा),
युवावय में सुख-दुःख पाया, उसका अब तू कर ले मनन।। अनुभव ... (2)

अब तो समस्त झंझट त्यागो, आत्म कल्याण में सर्वथा जोड़ो,
मानव जन्म को सार्थक करो, वानप्रस्थ या यतिव्रत धरो।। अनुभव ... (3)
बेटा-बेटी के विवाह हो गये, हो गये उनके बाल गोपाल,
अब उनकी चिन्ता छोड़कर, अपना अब तो करो विचार।। अनुभव ... (4)
चिन्ता चिता है जलाये सजीव, चिन्तन से होता जीव निहाल,
पर चिन्ता तो अधम है करे, आत्म चिंतन करे प्रबुद्ध नर।। अनुभव ... (5)
शरीर का तुमने पोषण किया, कमाया तुमने धन अपार,
अब तुम आत्म पोषण करो, कमाओ धर्म धन अपार।। अनुभव ... (6)
भौतिक सम्बन्ध यहाँ छूटेंगे, कोई न जायेंगे अपने साथ,
साथ में जायेगा आत्म संबंध, उसके लिए तुम करो यतन।। अनुभव ... (7)
पूर्व कुकृत्य स्मरण को त्यागो, करो तुम अब आत्म स्मरण,
निन्दा चुगली ईर्ष्या छोड़ो, करो अभी तुम आत्म स्मरण।। अनुभव ... (8)
प्रभुत्व कर्त्तापन अब छोड़ो, स्वप्रभुत्व में स्वयं को जोड़ो
मरणकाल में स्वयं को भजो, अन्य समस्त विकल्प तजो ।। अनुभव ... (9)
यथा मति तथा गति निदान, मरण काल में विशेष जान,
इसलिए समस्त संक्लेश त्यागा, एकाग्रचित्त से स्वंय को भजो।। अनुभव ... (10)
आगम अनुभव से यह सब गाया, स्व पर कल्याण हो यह मन भाया,
"कनकनन्दी" की भावना सदा, सबको मिले आत्म सम्पदा।। अनुभव ... (11)

दुःख के विश्वरूप एवं सुख प्राप्ति के उपाय

तर्ज- (दुःख से घबराओ.... श्रीपाल चरित्र, दुःखिया सब संसार)
(दुःखीया सब संसार)

दुःख के बहुविध स्वरूप जानो,

संख्य असंख्य अनन्त प्रमाण।
यथा विध कर्म तथा विध दुःख,
संकल्प-विकल्प प्रमाण भी दुःख।।(2)।। (टेक)
यथा विध पाप तथा विध दुःख, विषय कषाय प्रमाण भी दुःख-2
यथा विध व्यसन तथा विध दुःख, बहु विध भय प्रमाण भी दुःख-2
दुःख.....
यथा विध अहंकार तथा विध दुःख, बहु विध ममत्व प्रमाण भी दुःख-2
यथा विध अज्ञान तथा विध दुःख, नाना विध कुज्ञान प्रमाण भी दुःख।।
दुःख.....
यथा विध चिन्ता तथा विध दुःख, नाना विध शंका प्रमाण भी दुःख-2
विभिन्न भ्रष्टाचार सम दुःख जानो, संकीर्णता सम दुःखों को मानो।।
दुःख.....
शारीरिक रोग प्रमाण भी दुःख, मानसिक रोग समान भी दुःख-2
असत्य कटु वचन प्रमाण भी दुःख, विविध समस्या समान भी दुःख।।
दुःख.....
यथा विध तृष्णा तथा विध दुःख, नाना विध कमी प्रमाण भी दुःख-2
प्रतिशोध भाव प्रमाण भी दुःख, आकर्षण-विकर्षण समान दुःख।।
दुःख.....

व्यक्तिगत दुःखी

नया तर्ज- (मेरा जूता है जापानी.....)

कोई धन से दुःखी तो कोई मन से दुःखी,
कोई वचने दुःखी तो कोई जन से दुःखी।
कोई तन से दुःखी तो कोई रोग से दुःखी,
कोई क्रोध से दुःखी तो कोई मान से दुःखी।।
कोई माया से दुःखी तो कोई लोभ से दुःखी,

कोई मोह से दुःखी तो कोई काम से दुःखी।
कोई फैशने दुःखी तो कोई व्यसने दुःखी,
कोई भय से दुःखी तो कोई मद से दुःखी।।
कोई अज्ञाने दुःखी तो कोई कुज्ञाने दुःखी,
कोई चिन्ता से दुःखी तो कोई शंका से दुःखी।
कोई कुधर्मे दुःखी तो कोई अधर्मे दुःखी,
कोई जन्म से दुःखी तो कोई मरणे दुःखी।।
कोई वैभवे दुःखी तो कोई अभावे दुःखी,
कोई संयोगे दुःखी तो कोई वियोगे दुःखी।।

सुख-स्वरूप एवं सुख-प्राप्ति के उपाय

नया तर्ज- (जय हनुमान ज्ञान.....)

सुख के स्वरूप अभी तुम जानो, सुख प्राप्ति के उपाय मानो।
निज शुद्ध आत्म तो सच्चिदानन्द, अव्यय अविकारी ज्ञानानंद।।
समता शुचिता संतोष भाव, क्षमा सरलता सहज भाव।
अहिंसा नम्रता आकिंचन्य भाव, धैर्य एकाग्रता संयम सुभाव।। (1)
संकल्प-विकल्प रहित भाव, भय चिंता से मुक्त स्वभाव।
विषय कषाय विवर्जित भाव, फैशन व्यसन से मुक्त स्वभाव।। (2)
ध्यान अध्ययन सहिष्णु भाव, दोष विरहित निर्मल भाव।
विवेक गुणग्राही उदार भाव, कर्मबंध से रहित स्वभाव।। (3)
स्वभाव सुख तो विभाव ही दुःख, मोक्ष ही सुख तो बंधन दुःख।
विषमता दुःख तो समता सुख, शुद्ध ही सुख है तो अशुद्ध दुःख।। (4)
इन सब भावों में होता है सुख, पराधीन रहित आत्मिक सुख।
''कनकनन्दी'' तो भावना भाये, स्व-पर-विश्व में सुख हो जाये।। (5)

स्वास्थ्य एवं शान्ति प्राप्ति के उपाय

तर्ज- (केवल रवि किरणों...)

शरीर स्वस्थ हो मन स्वस्थ निमित्ते,
मन स्वस्थ हो आतम के हित में,
आत्म स्वस्थ्य हो मन भी स्वस्थ्य,
स्वस्थ्य मन हो सबके हित में।। (टेक)
परस्पर होते हैं आश्रित तीनों,
तन-मन और आत्मा भी जानो।
उत्तरोत्तर बलवान् है तीनों,
आत्मा की शक्ति अनन्त जानो।। (1) शरीर...
मन की शक्ति असंख्यात मानों,
तन की शक्ति संख्यात प्रमाण।
तीनों स्वस्थ्य से इन्द्रियाँ स्वस्थ्य,
अस्वस्थ्य इन्द्रियाँ घातक मानो।। (2) शरीर...
इसके लिये हो शुद्ध विचार,
व्यायाम-प्राणायाम शाकाहार।
आत्म शोधन व सदाचार,
परोपकार उदार विचार।। (3) शरीर...
मन वश से इन्द्रियाँ भी वश हो,
इससे भी होते तन, आतम वश।
इससे जो शक्ति उत्पन्न होती,
सभी कार्यों को वश में करती।। (4) शरीर...
जो आत्म जयी वो विश्व जयी,
अन्य सभी जन होते हैं पराजयी।
राजा-महाराजा व सम्राट,
आत्म पराजयी होते क्षयी।। (5) शरीर...
धनी-गरीब तो भौतिक जानो,
शान्ति के स्त्रोत ही आतम मानो।
आत्मा की शुद्धि शान्ति पैमाना,
शान्ति की सीमा अनन्त जानो।। (6) शरीर...

बाह्य धर्माचार, शिक्षा कानून,
साधन है नहीं साध्य निदान।
सत्यनिष्ठा और समता भाव,
साध्य, साधना दोनों ही मानो।। (7) शरीर...
इसी हेतु है राजा व रंक,
शान्ति प्राप्ति से हुये महंत।
सर्व त्यागी हुए आत्म साधक,
शान्ति सूरी गण पाठक।। (8) शरीर...
है "**कनकनन्दी**" की यही भावना,
मैं भी करूँ नित आत्म साधना।
संसार सत्य मारग पे चले,
स्वस्थ्य, सत्य, शान्ति को वरें।। (9) शरीर...

उत्थान-पतन तथा शाश्वतिक उत्थान

तर्ज :- (1. दे दी हमें आजादी बिना... 2. हो दीन बन्धु श्रीपति करुणा निधान जी... 3. जय जय श्री अरिहन्त देव...)

संसार में उत्थान पतन होता ही रहेगा,
गलन पूरन पुद्गल/(जड़) का होता ही रहेगा।
पुद्गल से सम्बन्ध जीव जब है करेगा,
उसका स्वभाव जीव में अवश्य आयेगा।।
इसलिए जड़ से जीव जो आबद्ध होता है,
उसका पतन व उत्थान भी होता है।
बहुआरम्भ व परिग्रह धारी जो होता है,
नरक में जाकर उसका भी पतन होता है।।
रावण कंस व हिटलर सम ही है जो,
भौतिकता से ही निज उत्थान/(विकास) करे जो।
उसका पतन तो निश्चय ही होगा,

उछाला गया पत्थर तो नीचे ही गिरेगा।।
पुद्गल से सम्बन्ध जो विच्छेद करेगा,
ऊर्ध्वगामी स्वभावी वह निश्चय ही बनेगा।
गुरुत्व से परे जो यान दूर जायेगा,
उसका पतन प्यारे कभी भी न होयेगा।।
तीर्थंकर केवली जो जड़/(कर्म) मुक्त हुए हैं,
वे ऊर्ध्वगामी बनकर मोक्ष में गये हैं।
अनन्त वैभव धारी लोकाग्रे निवासी हैं,
तथापि पतित कभी न होंगे वे निर्विकारी हैं।।
चक्रवर्तित्व वैभव के त्यागी हुए तीर्थंकर,
तीर्थंकरत्व वैभव त्याग के हुए सिद्धेश्वर।
आकर्षण विकर्षण रहित वे सिद्ध हुए हैं,
पौद्गलिक भाव से सर्वथा/(सदा) मुक्त हुए हैं।।
अंशअंशी भाव से जो जितना मुक्त हुए हैं,
उतने ही उत्थान अवश्य उनके हुए हैं।
अंशअंशी भाव से जितना प्रकाश होता है,
उतना ही अन्धकार अवश्य दूर होता है।।
प्रकाश से होता है पूर्ण अन्धकार नाश,
मुक्ति होने पर होता है पूर्ण पतन का नाश।
'सत्यं शिवं सुन्दरं' इसे ही कहते हैं,
'कनकनन्दी' का सर्वोच्च लक्ष्य उत्थान रूप/(भाव) है।।

"विनाश होता है धीरे धीरे"

(-) (नकारात्मक विकास के सूत्र)

तर्ज :- (1. हे राम हे राम... 2. मोक्ष पद मिलता धीरे धीरे...)

विनाश होता है धीरे धीरे... 2

साधना त्यागे, संक्लेश/(तनाव) करे/(भ्रष्ट भी बने)
कुफल मिलेगा धीरे धीरे ऽऽ (टेक/स्थायी)
काम न करके, दाम चाहने से...2 बीज न बोकर, खेती/(फल/धान्य) चाहने से... 2
चोर भी बनते हैं धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (1)
अभक्ष खाने से, व्यसनी होने से...2 श्रम न होने से, फैशन करने से ऽऽ
रोग भी होता है धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (2)
उद्दण्ड बनने से स्वाध्याय न करने से... 2 संकीर्ण बनने से, गुण हीन होने से ऽऽ
अज्ञानी बनते हैं धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (3)
उद्योगहीन से, न्याय न पालने से... 2 याचना करके, व्यय करने से ऽऽ
गरीब बनते है धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (4)
क्षुद्रता करने से, बड़ाई चाहने से... 2 अभद्र बनने से, शोषण करने से ऽऽ
निन्दा भी होती है धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (5)
अधिक चाहने से, ईर्ष्या करने से... 2 धैर्य न धरने से, संक्लेश करने से ऽऽ
दुःखी भी बनते हैं धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (6)
मोह करने से, कषाय पालने से... 2 सत्य न मानकर, घमण्डी बनने से ऽऽ
जैनत्व छूटेगा धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (7)
पाप करने से, व्रत न पालने से... 2 स्वाध्याय हीनता से, दान न देने से ऽऽ
श्रावक व्रत/(सागार धर्म से) च्युत धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (8)
परिग्रह रखने से, साधुता/(साधना) न होने से... 2 असमता से, कुध्यान से ऽऽ
आत्मा न पाओगे धीरे धीरे ऽऽ... विनोश होता... (9)
मोह बढ़ाकर, कषाय करने से... 2 कुध्यान ध्याकर, संक्लेश करने से ऽऽ
संसार बढ़ेगा धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (10)
धैर्य न धरने से, विश्वास त्याग से... 2 साधना हीनता से, कुभाव करने से ऽऽ

विनाश होयेगा धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (11)
'कनक' कहे ऐ मानव सुनो... 2 इन कारणों से, दूर ही रहो ऽऽ
विकास होयेगा धीरे धीरे ऽऽ... विनाश होता... (12)

"विकास होता है धीरे धीरे" (24)

(+) (सकारात्मक विकास के सूत्र)

तर्ज :- (पूर्वोक्त ...)

विकास होता है धीरे धीरे... 2
साधना करो साध्य मिलेगा/ (लक्ष्य मिलेगा)
सुफल मिलेगा धीरे धीरे ऽऽ (टेक/स्थायी)

बीज भी बोओ, अंकुर होगा... 2 वृक्ष भी बनेगा, फल भी आयेंगे ऽऽ
रस भी पाओगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (1)
भ्रूण से पूर्णता, बिन्दुं से सिन्धु... 2 कदम से राह, तन्तुओं से वस्त्र ऽऽ
भोजन रस बने धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (2)
सात्विक खाओ, सदाचारी बनो... 2 श्रम भी करो, प्राणायाम करो ऽऽ
स्वस्थ्य भी रहोगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (3)
विनम्र बनो, स्वाध्याय करो... 2 उदार बनो, गुण को मानो ऽऽ
ज्ञानी भी बनोगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (4)
उद्योग करो, न्याय पे चलो... 2 दान भी करो, संयमी बनो ऽऽ
सम्पन्न बनोगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता है धीरे धीरे... (5)
महान् करो, महान् बनो... 2 निःस्वार्थ/(पवित्र) बनो, सेवा भी करो ऽऽ
प्रसिद्धि होयेगी धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (6)

सन्तोषी बनो, ईर्ष्या भी त्यागो... 2 धैर्य को धारो, संक्लेश त्यागो ऽऽ
सुःखी भी बनोगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (7)
मोह को छोड़ो/(त्यागो), कषाय त्यागो... 2 अष्टांग पालो, व्यसन त्यागो ऽऽ
जैनत्व पाओगे/(सम्यक्त्वी बनोगे) धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (8)
पापों को त्यागो, व्रतों को/(प्रतिमा) पाला... 2 स्वाध्याय करो, दान भी करो ऽऽ
श्रावक बनोगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (9)
परिग्रह त्यागो, श्रमण बनो... 2 समता धारो, सुध्यान करो ऽऽ
आत्मा को पाओगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (10)
कषाय नाशो, लीनता/(समाधि) पाओ... 2 शुक्ल भी ध्याओ, क्षपक चढ़ो ऽऽ
मोक्ष भी पाओगे धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (11)
धैर्य को धारो, विश्वास करो... 2 साधना करो, विकास करो/(भावना भाओ) ऽऽ
"कनक" पाओगे लक्ष्य धीरे धीरे ऽऽ... विकास होता... (12)

परपीड़क का विनाश एवं साम्यभावी का विकास

(साम्यभाव की महिमा)

राग :- (यमुना किनारे श्याम...)

दूसरों को कष्ट कभी दिया न करो,
दुःख के बदले दुःख पाया न करो।
दुःख देने वाला पापी होता है निश्चय,
पाप से पतन होता यह है निश्चय।
दुःख के बदले जो दुःख नहीं देता है,
निश्चय से वह सुखी होता जाता है। (1)
दूजों को कष्ट देने के भाव मात्र से,
पाप का बन्ध निश्चय होता तब से।

तनाव-अशान्ति का भी होता प्रहार,
प्रतिक्रिया रूप से भी होता प्रहार।
साम्यभावी प्रतिक्रिया यदि न करे,
स्वकर्म पाप से दुःख ही भरे। (2)
मरूभूति को कमठ ने दुःख ही दिया,
दश भव तक प्रतिशोध ही लिया।
तथापि मरूभूति क्षमा धारण किया,
दशभव तक साम्य धारण किया।
अन्त में मरूभूति बने पार्श्व तीर्थेश,
दश भव तक कमठ पाया संक्लेश। (3)
कौरवों ने पाण्डवों को कष्ट ही दिया था,
अन्त में कौरवों का नाश ही हुआ था।
कंस ने कृष्ण को सदा मारना चाहा,
अन्त में कृष्ण द्वारा मारा ही गया।
सिकन्दर, हिटलर, सद्दाम, ओसामा,
जो दूसरों को कष्ट दिए हुए खातमा। (4)
बड़े-बड़े राजा महाराजा क्रूर नरेश,
परपीड़क जनों का हुआ विनाश।
मय-राक्षस सभ्यता या राजवंश,
अन्त में सब का हुआ विनाश।
हिंस्र पशु-पक्षियों की संख्या बताती,
जो दूसरों को खाये उसकी संख्या घटती। (5)
प्रहार सहने वाली मूर्ति पूज्य बनती है,
प्रहारक हथौड़ी न पूज्य बनती है।
अलंकार मुकुट व मिट्टी के घड़े,
प्रहार सहन करने से शिर पे चढ़े।
अन्य धातु, शिला, मिट्टी नीचे रहती,

दूसरों के पैर तले मर्दित होती। (6)
मर्दन गुण वर्द्धन नीति है प्रसिद्ध,
क्षमा वीरस्य भूषणं सूत्र है सिद्ध।
क्षमा बड़न को छोटन को उत्पात,
लौकिक उक्ति भी जग विख्यात।
'कनकनन्दी' तो चाहे सदा सद्भाव,
सत्य समता से ही होवे कल्याण। (7)

मानव सुखी बने तो कैसे?

मानव में इतनी योग्यता है कि मानव, मानव से महामानव, महामानव से भगवान्, खुद से खुदा, जिन से जिनेन्द्र, शिशु से ईसा, क्षुद्र से महान्, बिन्दु से सिन्धु, अणु से महत्, बुद्धु से बुद्ध, जार (कुशील) से जरस्थुत, मोही से मोहम्मद पैगम्बर, मृत्यु से अमृत, अन्धकार से प्रकाश, शव से शिव बन सकता है। परन्तु वही योग्यता का/शक्ति का/उपलब्धि का दुरुपयोग करके मानव से दानव, नर से वानर, वर्द्धमान से हीयमान, आदमी से आदमखोर, राव से रंक, रक्षक से राक्षस/भक्षक बन सकता है। यह शक्ति का सदुपयोग तथा दुरुपयोग अथवा अनुलोम-विलोम का फल है। जैसे God (भगवान्) का विलोम Dog (श्वान कुत्ता है) साक्षरा का विलोम राक्षसा है। शक्ति से युक्त का सदुपयोग करने वाला शिव है तो शक्ति का दुरुपयोग करने वाला या शक्ति से रहित शव है। शिव एवं शव में (इ) का अन्तर है जो की शक्ति, ईश्वर का प्रतीक है।

बाल्यावस्था संस्कार के लिये योग्यावस्था है जिस प्रकार कच्चे घड़े को जो आकार दिया जाता वही आकार पकने के बाद रहता है। उसी प्रकार बाल्यावस्था का संस्कार पूर्ण जीवन में प्रभावित करता है। परन्तु प्रायोगिक रूप से अनुभव में आता है कि कुछ अभिभावक अति प्यार के कारण बच्चों के अनर्गल प्रवृत्ति करने के बाद भी बच्चों को सुधारने के लिये भी कुछ न बोलते हैं न करते हैं। कुछ अभिभावक बच्चों से अतिक्रूर व्यवहार करते हैं। बच्चों को खेलने के लिए, बोलने के लिए भी सख्त मना करते हैं। कुछ अभिभावक अति

शिशु अवस्था में ही बच्चों को विद्यालय भेजते हैं, पढने के लिए जबरदस्ती करते हैं। कुछ व्यक्ति तो बच्चों से झूठ बोलने के लिये, चोरी करने के लिए, दूसरों को मारने पीटने, एवं गाली देने के लिए प्रेरित करते हैं और कुछ उपर्युक्त अनैतिक कार्य बच्चों के सामने करते हैं। जिससे बच्चे उसे अनुकरण कर लेते हैं। 'परिवार बच्चों के लिए मुख्य विद्यालय एवं परिवार के जन प्रधान अध्यापक' इस सिद्धान्त को अधिकांश व्यक्ति कार्यान्वित नहीं करते जिससे बच्चों का भविष्य भी अन्धकारमय हो जाता।

विद्यार्थी-अवस्था जीवन की एक महत्वपूर्ण अवस्था है। इस अवस्था में मनुष्य पुस्तक एवं शिक्षक के माध्यम से विभिन्न ज्ञान-विज्ञान के साथ-2 महापुरुषों के अनुभव एवं कार्यकलाप से परिचित होता है जिससे उसके बौद्धिक एवं भावात्मक विस्तार व्यापक होता है। परन्तु अक्षरात्मक पुस्तकीय ज्ञान से उपर्युक्त महान् उद्देश्य की पूर्ति नहीं होती है। जिस प्रकार कोई केवल पुस्तक से पढ़ लिया कि कैसे पानी में तैरा जाता है परन्तु जब पानी में उतरता है तब डूब जाता है। उसी प्रकार केवल पुस्तकीय ज्ञान से जीवन रूपी जलाशय को मनुष्य पार नहीं कर सकता है परन्तु डूब जायेगा। अतः विद्यालय में साक्षरता से भी शिक्षित बनने, अनावश्यक जानकारी से भी जीवनोपयोगी प्रशिक्षण की आवश्यकता अधिक है। उपर्युक्त शिक्षा प्रणाली के बिना अभी साक्षर व्यक्ति अधिक आलसी, निकम्मा, उत्शृखंल, दिशाहीन अव्यवहारी है। साक्षरता का उद्देश्य अभी केवल नौकर (दास, भृत्य Servant) बनना रह गया है। यदि विद्या अध्ययन का उद्देश्य तथा फल नौकर बनना है तो इससे विद्याध्ययन ही नहीं करना उचित है।

किशोरावस्था एवं युवावस्था जीवन की ऊर्जा से भरपूर- पूर्णावस्था है। इस अवस्था में न बाल्यावस्था की कोमलता/विकासशील अवस्था ना ही वृद्धावस्था की दुर्बलता है। बाल्यकाल में शारीरिक कोमलता, मानसिक अपरिपक्वता तथा ज्ञान की कमी के कारण तथा वृद्धावस्था में शारीरिक दुर्बलता और मानसिक क्षीणता के कारण मनुष्य उस अवस्था में जो कार्य नहीं कर सकता है वे सब कार्य इस अवस्था में कर सकता है। अधिकांश महापुरुष

इस ही अवस्था में उन्नति की चरम सीमा को प्राप्त करते हैं। परन्तु अधिकांश मनुष्य इस अवस्था में मदोन्मत्त, लापरवाही, व्यसनी, दिखावा, फैशन, मनोरंजन, कामक्रीडा, बलात्कार, गुण्डा-गर्दी आदि कुकार्य करने में समय, शक्ति, बुद्धि, योग्यता, धन का दुरुपयोग करता है।

प्रौढ एवं वृद्ध अवस्था में दीर्घ अनुभव रहता है। युवक-अवस्था की उन्मादता नहीं रहती है। इसलिये इस अवस्था में मनुष्य उत्तम-विचार आत्मकल्याण के कार्य, चिन्तन, मनन, परोपकारादि कार्य कर सकता है परन्तु अधिकांश व्यक्ति इस अवस्था में असहिष्णु, ईर्ष्यालु, परनिन्दक, बातुनी तृष्णावान् घमण्डी, तोड़फोड़ के कार्य में लिप्त पाये जाते हैं।

छोटी-छोटी बातों एवं घटनाओं का समूह ही जीवन की समुच्चय है। जिस प्रकार बिन्दुओं का समूह ही सिन्धु है उसी प्रकार दैनिक कार्यक्रमों का समूह ही जीवन है। बिन्दुओं के समूह को छोड़कर सिन्धु और कुछ नहीं है उसी ही प्रकार जीवन के प्रत्येक समय की घटनाओं को छोड़कर जीवन की उपलब्धि और कुछ नहीं है। परन्तु अदूरदृष्टि सम्पन्न, अविवेकी, आलसी व्यक्ति दैनिक स्वकर्त्तव्य, नैतिक कर्त्तव्य, परस्पर के कर्त्तव्य, धार्मिक कर्त्तव्य समय पर समग्रता से नहीं करता है। दूसरों से नम्रता से, शालीनता से व्यवहार करने में अपना छोटापन अनुभव करता है। सामूहिक, सामाजिक, धार्मिक कार्यक्रम में निर्धारित समय पर पहुँचने में अपनी महानता को धक्का लगा मानता है। छोटों से, निम्न श्रेणीय कर्मचारियों से यद्धा-तद्धा, तुच्छ-अभद्र व्यवहार करने को अपना बडप्पन मानता है। स्वकर्त्तव्य को दूसरों से कराने को अपनी महानता मानता है। थोडा सा भी पैदल चलना, स्वयं के वस्त्र स्वयं धोना, स्वयं की वस्तु को स्वयं रखना, उठाना, लाना, पानी का ग्लास भी उठाकर लाकर पानी पीना, स्वयं के जूठन को साफ करना आदि को नौकर का काम मानता है। किसी को वचन देने के बाद समय निश्चित होने के बाद भी उसको निभाना अपना धार्मिक कर्त्तव्य मान कर पूर्ण नहीं करता है।

अधिकांश मनुष्य किसी न किसी धर्म सम्प्रदाय से सम्बन्धित होते हैं। उनमें से अधिकांश उस सम्प्रदाय की बाह्य परम्परा को येन केन प्रकार से

मानते हैं। परन्तु उस सम्प्रदाय के अच्छे सिद्धान्त से नहीं परिचित होते हैं न ही आचरण में लाते हैं। जैसे की गधा चन्दन का बोझ तो ढोता रहता है परन्तु चन्दन की शीतलता, सुगन्धी का उपभोग नहीं करता वैसे ही सम्प्रदायों को मानने वाले अच्छे गुणों से दूर रहते हैं। इसलिये सम्प्रदायों को मानने वाले ईर्ष्यालु, ढोंगी, हृदय से छोटे, बुद्धि से खोटे, क्रोधी, घमण्डी, कलह, युद्ध, हिंसा आदि दुर्गुणों से लिप्त रहते हैं। वे स्वयं के सम्प्रदाय को ही सर्वश्रेष्ठ, निष्कलंक, पवित्र, भगवान् का मत मानकर, दूसरों को हीन दीन, पापी, पाखण्डी, काफिर, अन्धविश्वासी, रुढिवादी, धर्म बाह्य मानकर उन्हें कष्ट देना, अपमानित करना, मारना, विध्वंस करना आदि से अपना धार्मिक परम कर्त्तव्य पूर्ण करना मानते हैं। जो जिस सम्प्रदाय को या जिस धर्म प्रचारक को मानते हैं उसके बड़े बड़े जघन्य कृत्य जो सामान्य व्यक्ति के लिये भी अकरणीय है उसे धर्म मानकर स्वीकार करके जीवन में क्रियान्वित करते हैं। परन्तु उस सम्प्रदाय के या सम्प्रदाय प्रचारक के अच्छे-अच्छे गुणों को भी जीवन में नहीं उतारते भले ही उसकी पूजा करते हो या गुणगान क्यों न करते हों।

मन्दिर में, धर्मस्थान में, धर्मग्रन्थ में, धार्मिक पर्व में, जो धर्म का आडम्बर दिखाते हैं उसमें जोर-शोर से भाग लेते हैं और उस समय में जो यह सिद्ध करने की कोशिश करते हैं कि हमारे लिये धर्म ही सर्वस्व है, धर्म ही हमारे जीवन का लक्ष्य है, धर्म ही करणीय है वे ही जब घर में, दुकान में, व्यापारिक अनुष्ठान में या अन्यत्र जहाँ भी जीवन यापन के लिए व्यापार-धन्धा करते हों वहाँ धर्म को पूर्ण रूप से ताक में रखकर के कार्य करते हैं जिस प्रकार भारत के नेता, मन्त्री आदि जब चुनावी भाषण देते हैं उस समय ऐसा भाषण देते हैं मानों वे ही देश के उद्धार के लिये अवतार लेकर के आये हों। गरीबी उन्मूलन, एकता एवं अखण्डता के सूत्रधार कर्णधार वे ही हों। परन्तु वे ही करोड़ों, अरबों का घोटाला करते हैं, जाति, सम्प्रदाय भाषा को लेकर परस्पर में लड़ाते-भिड़ाते हैं। वैसे ही अधिकांश व्यक्ति धार्मिकता का दिखावा करते हैं परन्तु नेताओं के जैसे अपने-अपने क्षेत्र में अपनी क्षमता के अनुसार शोषण, धोखाधड़ी, मिलावट, रिश्वतखोरी, भ्रष्टाचार आदि अनैतिक कार्य करते रहते हैं।

संक्षिप्ततः मानव अपनी क्षमता उपलब्धि का दुरुपयोग ही अधिक करता है। उसका व्यवहार मुख में राम नाम बगल में छूरी के जैसे होता है। हाथी के खाने के दाँत छोटे होते हैं और दिखाने के दाँत बड़े बड़े होते हैं। उसी प्रकार मनुष्य करता कुछ है और दिखाता कुछ है। जिस प्रकार दुर्योधन की नीति थी "जानामि धर्म न मे भजामि, जानामि अधर्म न मे त्यजामि" अर्थात् मैं धर्म जानता हूँ धर्म नहीं करूँगा तथा अधर्म जानता हूँ अधर्म त्याग नहीं करूँगा। पहले तो एक दुर्योधन था आज घर घर में हर क्षेत्र में दुर्योधन हैं। वे अपना अपना कर्त्तव्य जानते हुये भी कर्त्तव्य नहीं करते हैं जिस प्रकार वकील, न्यायाधीश, न्याय प्रक्रिया को जानने के लिए बड़े बड़े पोथन्ना फाड़ते रहते हैं, आँख फोडते रहते हैं, परन्तु न्याय को अन्याय करते हैं, अन्याय को न्याय करते हैं, परन्तु न्याय को अन्याय करते हैं, अन्याय को न्याय करते हैं। शुतरमुर्ग के जैसे आँख बन्द करके सत्य को नजर अंदाज करते रहते हैं। शुतरमुर्ग के जैसे आँख बन्द करके सत्य को नजर अंदाज करते रहते हैं। वादी-प्रतिवादियों से रुपये शोषण करने के लिये डेट बढ़ाते जाते हैं सरल विषयों को भी जटिल तथा पेचीदा बनाते जाते हैं। कुछ रुपयों के केश के लिये लाखों करोड़ों रुपया खर्च करा देते हैं। दोषी से रिश्वत लेकर निर्दोष घोषित कर लेते हैं, और निर्दोषी को दोषी घोषित कर देते हैं। प्रायः इसी प्रकार व्यवहार हर मानव करता है। इसलिये वह अपराध बोध के कारण, पाप कर्म के कारण, आत्मा की मलिनता के कारण सुख-शान्ति को प्राप्त नहीं कर पाता है। अतः सुख शान्ति प्राप्त करने का सादा, सीधा, सरल उपाय है मनसा, वचसा, कर्मणा, पवित्र रहना, पवित्र बोलना और पवित्र कार्य करना। इसके बिना कुबेर की सम्पत्ति, इन्द्र की सत्त, आधुनिक वैज्ञानिक उपकरण, भोग की सामग्रियों से रंच मात्र भी सुख प्राप्त नहीं कर सकता है। क्योंकि सुख अन्तःकरण का गुण है, भावात्मक प्रक्रिया है इसको बाह्य भौतिक उपकरण से प्राप्त नहीं किया जा सकता है।

मानव का दानव होना उसकी हार है, मानव का महामानव होना उसका चमत्कार है और मनुष्य का मानव होना उसकी जीत है। (राधाकृष्णन्)

इस विचार से मैं अत्यन्त दुःखी हूँ कि मनुष्य ने मनुष्य को क्या बना डाला है। (वड्सवर्थ)

केवल मनुष्य ही रोता हुआ पैदा होता है, शिकायते करता हुआ जीता है और निराश मरता है। (वाल्टर टैम्पिल)

प्रत्येक मनुष्य एक बर्बाद परमात्मा है। (एमर्सन)

संसार आश्चर्य जनक वस्तुओं से भरा पड़ा है, लेकिन मनुष्य से बड़ा कोई आश्चर्य नही। - सोफोकिल्स

गलती न करने वाली मशीन और गलती करने वाले मनुष्य- इन दोनों में से किसी एक को पसन्द करना पड़े तो मनुष्य को ही पसन्द करना पड़ेगा। गलतफहमी से बहुधा सत्य का जन्म होता है, पर मशीन से किसी भी दशा में मनुष्य नहीं निकल सकता। - टैगोर

यदि तुम पढ़ना जानते हो तो प्रत्येक मनुष्य स्वयं में पूर्ण एक ग्रन्थ है। - चैनिंग

मनुष्य जब पशु बन जाता है, उस समय वह पशु से भी बदतर होता है - टैगोर

मनुष्य अपनी श्रेष्ठता को आन्तरिक रूप से प्रकट करते हैं, पशु बाह्य रूप से- रूसी लोकोक्ति

हम चमत्कारों के भी चमत्कार हैं और ईश्वर का अगाध रहस्य। - कार्लाइल

प्रकरण- 2

भारत महान् बने तो कैसे?

इतिहास, पुराण, पुरातत्व, तथा किम्वदन्ती, वैदेशिक साहित्य, साक्षी है कि भारत बहुत ही प्राचीन काल से सभ्य, सुसंस्कृत, समृद्ध ज्ञानी, विज्ञानी, गणितज्ञ, आध्यात्मिक रहा है। इसलिये भारतीय बोलते हैं और लिखते हैं- 'भारत महान् है, गर्व से कहो हम हिन्दू (भारतीय) हैं' और ऐसा करना भी चाहिये क्योंकि अच्छे गुणों के प्रति आदर, सम्मान करना माने उन अच्छे गुणों को अच्छा मानना। मैथिलीशरण गुप्त ने कहा भी है।

जिनको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।
वे नर नहीं नरपशु निरा और मृतक समान, है।।

परन्तु कथन से और लिखने से क्या कर्त्तव्य की इतिश्री हो जाती है? जिस उज्ज्वल, उन्नत धरोहर, विरासत को लेकर भारतीय लोग कागज, दिवालें आदि काले पीले करते हैं, भाषण और नारों से शब्द प्रदूषण फैलाते हैं क्या इससे देश की उन्नति होती है या अवनति होती है? इससे तो अवनति ही होती है ऐसा अनुभव से सिद्ध होता है। लिखने में कागज, स्याही, समय एवं शक्ति आदि का दुरुपयोग होता है और भाषणादि से भाषण कर्ता का समय, श्रोताओं का समय, भाषण की व्यवस्था के खर्च का दुरुपयोग तो होता ही है साथ ही साथ शब्द प्रदूषण फैलता है, हम महान् है ऐसा भ्रम उत्पन्न होता है, अहंकार जन्म लेता है, मिथ्या सन्तुष्टि हो जाती है। इससे आगे बढ़ने के लिये पुरूषार्थ नहीं करते हैं। जिस प्रकार धनी माँ-बाप का इकलौता लाड़ला बेटा विचार करता है कि मेरे पिता की बहुत सम्पति है, मुझे परिश्रम क्यों करना है? इस विचार के कारण वह आलसी, निकम्मा, फिजूल खर्ची, उत्तरदायित्व हीन बन जाता है जिससे वह धीरे-धीरे गरीब, निःसहाय, बदनाम हो जाता है। इसी प्रकार भारतवासी भारतीय समृद्ध प्राचीन परम्परा का केवल गुण बखान करते हुए कर्त्तव्य हीन होकर दीन हीन भ्रष्ट बनते जा रहे हैं। जो पहले विश्व गुरु था जिसको सोने की चिड़िया कहते थे और जहाँ पहले दूध-घी की नदियाँ बहती

थी। आज वह देश विदेशी ऋण में लदा हुआ है, भ्रष्टाचार के नौवें स्थान में है और जहाँ के शीर्षस्थ राजनेता धर्मनेता, न्यायदाता भ्रष्ट्राचार में लिप्त हैं। तो भी हम तोता के जैसे रटते जा रहे हैं 'भारत देश महान् है', भारत देश महान् है। ऐसा कहते हुए भारतीयों को शर्म भी नहीं आती है। ये तो कह सकते हैं कि भारत देश महान् था।

जो देश भारत की अपेक्षा, बहुत छोटा है। द्वितीय युद्ध के समय नागासाकी एवं हिरोशिमा के ऊपर एटम बम डालकर विध्वंस कर दिया गया था ऐसा छोटा देश जापान आज हर दृष्टि से समृद्ध, शक्तिशाली है। इसका कारण है जापानियों की कर्त्तव्यनिष्ठता, राष्ट्रीयता, प्रामाणिकता, अनुशासन, समयबद्धता आदि आदि।

जापान के एक दो उदाहरण देकर के जापान की महानता का कुछ दिग्दर्शन यहां कर रहे हैं। एक बार एक भारतीय जापान की एक लड़की से शुद्ध दूध की मांग करता है तो जापान की लड़की आश्चर्य से पूछती हैं कि शुद्ध दूध कैसा होता हैं। भारतीय सज्जन उत्तर देते हैं जिस दूध में पानी नही मिलाया जाता हैं वह शुद्ध दूध हैं। लड़की पूछती है क्या दूध में भी पानी मिलाया जाता है? भारतीय सज्जन उत्तर देता है हाँ बेचने वाला दूध में पानी मिलाता है। जापान की लड़की बोलती है कि हमारे जापान में दूध में पानी नहीं मिलाते हैं क्योंकि इससे जापानी भाई बंधुओ का स्वास्थ्य खराब होगा, रुग्ण होंगे दुर्बल होंगे। यह घटना बहुत छोटी सी है परन्तु इसमें बहुत गहन रहस्य छिपा हुआ है। जहाँ की छोटी-छोटी बच्चियाँ भी देश के हित के लिए विचार करती हैं और मिलावट नहीं करती हैं परन्तु भारत में प्रायः इससे विपरीत है। भारत का एक व्यक्ति आत्म हत्या करने के लिए विष खरीद कर पी लेता है परन्तु उसकी मृत्यु नहीं होती है क्योंकि विष मिलावटी था। इसी प्रकार भारत की प्रायः हर चीज में कृत्रिम चीज मिली हुई होती है। डालडा में चर्बी, घी में डालडा, इंजेक्शन में पानी, चावल में कंकड़ आदि हर चीज में मिलावट ही मिलावट है।

भारत में कोई गरीब व्यक्ति भूख के मारें बच्चों को तड़पते हुए देखकर यदि कोई अनाज या फल चोरी करता है तो उसको सामाजिक एवं कानून

संबंधी अनेक दण्ड मिलते हैं। परन्तु खुद दण्ड देने वाले करोड़ों अरबों रुपयों की चोरी करते हैं सत्य को असत्य करते हैं, असत्य को सत्य करते हैं और 1 रुपया के केस को सैकडों वर्ष लम्बा कर देते हैं और करोड़ों रुपया फैसला करने में शोषण करते हैं। जो नेता गरीबी उन्मूलन का नारा देता है वही कुछ दिन में गरीब से अमीर बन जाता है और विदेश के स्विस बैंक में करोडों की सम्पत्ति जमा करता है।

गुरु का स्थान सर्वोपरि होता है। विद्या दान को महादान कहा गया है। परन्तु आज शिक्षक विद्यालय में ना तो समय पर जाते हैं न व्यवस्थित पढाते हैं। वे ही बच्चों का शोषण करने के लिए ट्यूशन पढाते हैं। रिश्वत लेकर विद्यार्थियों को पास कर देते हैं जाली सर्टिफिकेट देते है। जिसके कारण वही विद्यार्थी आगे जाकर शोषणकारी, भ्रष्टआयोग्य सिद्ध होता है।

अनादिकाल से भारत आध्यात्मिक विश्व गुरु रहा है। परन्तु आज भारत में 'केवल दीपक के नीचे अंधेरा' नहीं है 'सूर्य के नीचे अंधेरा' है ऐसी व्यंग्योक्ति के योग्य बन रहा है। आज भारतीय धार्मिक व्यक्ति धर्म के नाम पर ही अधिक दिखावा, आडम्बर, ढोंगी पाये जाते हैं। जो व्यक्ति पूजा-पाठ, उपवास, तीर्थयात्रा करते हैं वे अधिक ईर्ष्यालु, कुटिल धूर्त, परशोषणकारी पाये जाते हैं। चीटियों को आटा खिलाने वाले मनुष्यों का खून शोषण करते हैं, भूखे, रुग्ण सामान्य मनुष्य की बात छोडो ऐसे व्यक्ति मां-बाप की भी सेवा नहीं करते हैं। उपवास में कुछ रुपयो का भोजन नहीं करेंगे परन्तु उपवास में दिखावा के लिए, आत्म-प्रसार के लिए सैंकडों, हजारों रुपया खर्च करेंगे। तीर्थयात्री भी तीर्थक्षेत्र में अनैतिक कार्य करेंगे, गन्दगी फैलायेंगे, चोरी करेंगे, जब काटेंगे, दूसरों की मॉ-बहन का बलात्कार करेंगे। धार्मिक ग्रन्थ पढ़ते हुए भी धर्म के विरुद्ध आचरण करेंगे। धार्मिक व्यक्तियों का अधिकांश आचरण बगुला भगत जैसे या 'मुँह में राम बगल में छुरी' जैसा होता है।

भारत में धार्मिक कुरीतियां जिस प्रकार अधिक है। उसी प्रकार सामाजिक कुरीतियां भी बहुत अधिक है। गरीब व्यक्तियों के मरण में भी या विवाह में समाज के लोग उस परिवार को मृत्यु भोज या प्रीति भोज देने के लिए बाध्य

करते हैं। इससे जो मरा तो उसका मरण तो हो ही गया परन्तु जो जिन्दे हैं उनका भी मरण हो जाता है। जिनकी शादी हुई उनकी बरबादी तो हुई परन्तु जिनकी नहीं हुई उनकी भी बरबादी हो जाती है। भोजन देने के लिए, दहेज देने के लिए गरीब व्यक्ति कर्जा लेते हैं और जीवन भर कर्जे के बोझ से लदे रहते हैं। इसी प्रकार बाल विवाह, पर्दाप्रथा, फैशन, दिखावा, आलस्यपन, समय की बर्बादी आदि अनेक कुरीतियाँ अभी भी भारत में हैं।

जिस शिक्षा से शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक विकास होना चाहिए उस शिक्षा से भारतीय लोग सफेदपोश नौकर, आलसी, उत्श्रृंखल, धोखाधड़ी करने वाले बनते जा रहे हैं। आज शिक्षा का केवल उद्देश्य पेट, पेटी प्रजनन रह गया है। जिस शिक्षा से हमें स्वतन्त्रता मिलनी चाहिये उस शिक्षा से आज स्वच्छन्दता बढती जा रही है। आज विद्यार्थी उद्दण्डता का पर्याय बनता जा रहा है और विद्यालय उद्दण्ड का पर्याय बनता जा रहा है।

जो स्वयं के स्वार्थ के लिए सरक-सरक कर कार्य करती है उसे सरकार कहते हैं। सरकार की न कोई नीति है, न कोई सदाचार है, न कोई संविधान है। आज भारत की सरकार भारत के अधिक भ्रष्ट, अधिक गुण्डे और अधिक निकम्में व्यक्तियों का समूह है। राष्ट्रीय चिन्ह अशोक चक्र है और उसमें लिखा जाता है- 'सत्यमेव जयते' परन्तु आज भारत सरकार निरीह पशु प्रजाओं की सुनियोजित हत्या करती है शराब बेचती है, वेश्यालय खोलती है। यब सब काम तो कसाई, आततायी वेश्याओं का है। जब तक उपर्युक्त दुर्गुण भारत में होंगे भारत का उद्धार तब तक भगवान् भी नहीं कर सकते हैं। नारायण कृष्ण ने गीता में कहा था- ''उद्धेरत आत्मानम् आत्मनः न आत्मानम् अवसादयेत्'' अर्थात् आत्मा का उद्धार स्व उद्धार राष्ट्र का उद्धार स्वयं को करना चाहिए। जो स्वयं का उद्धार नहीं करता है उसका उद्धार करने में कटिबद्ध हो जाना चाहिये। महाभारत युद्ध में युद्ध से परांगमुख अर्जुन को सम्बोधित करते हुए नारायण कृष्ण ने कहा था-

कैलब्य मा स्म गमः पार्थ नैतत्त्वऽयुपपद्यते।
क्षुद्रंहृदयदौर्बल्यं त्यक्त्वोतिष्ठ परंतप। (3)

गीता पृ.सं. 26

हे पार्थ! तू नामर्द मत बन। यह तुझे शोभा नहीं देता। हृदय की पामर निर्बलता का त्याग करके, हे परंतप! तू उठ।

संसार में आदरपूर्वक जीने का सबसे सरल और शर्तिया उपाय यह है कि हम जो कुछ बाहर से दिखना चाहते हैं वैसे ही वास्तक में भी हो।- सुकरात

शेर भूखा मर जाना पसन्द करता है, कुत्ते का झूठा खाना कभी नहीं खाता। - शेख सादी

मेरे देश की संस्कृति

(तर्ज- मेरे देश की धरती...)

मेरे देश की संस्कृति ज्ञान दात्री ज्ञानी गुणी जननी... मेरे देश... ।।टेक।।

यहाँ पूजा पाठ रीति-रिवाज ज्ञान ध्यान सिखाते हैं...2
पाप दूर हुए पुण्य प्रकाशे आत्मज्ञान जगाते हैं...2
यहाँ के महापुरुष ज्ञानी विज्ञानी ध्यानी होते हैं...2
जिसके कारण हमारी संस्कृति, श्रेष्ठ संस्कृति कहलाती है...2
मेरे देश की संस्कृति... ।।(1)।।

इसी संस्कृति से जन्म लिए, गणित विज्ञान शिल्पों ने...2
आत्मज्ञान की अमृत वर्षा, इस के ही अवदान है...2
संगीत नाट्य भाषा-विज्ञान, इसका ही योगदान है...2
इसीलिए तो देश हमारा, विश्वगुरु कहलाता था...2
विश्व बन्धुत्व का पाठ पढ़ाकर, विश्व में शान्ति लाता था...
मेरे देश की संस्कृति... ।।(2)।।

हमारे भोजन वेश-भूषा भी, संस्कृति ऋतु से अभिप्रेरित हैं...2
सभ्यता व परम्परा भी, इससे ही खूब प्रभावित है...2
इससे ही हमारी संस्कृति से मानव से भगवान् हुए...2
दानव भी मानव बनकर के, परम्परा से मोक्ष गये...2

इस हेतु ही स्वर्ग के देव भी, इस संस्कृति धरा को चाहे हैं...
मेरे देश की संस्कृति... ।।(3)।।
ऐसी संस्कृति को हे भारतीय, तुम क्यों भूलते जाते हो...2
मूल से रहित क्या वृक्ष कभी, फूलते फलते जाते हैं...2
पानी से रहित सरिता क्या कभी, भक्तों से पूजी जाती है...2
प्राण से विहीन शरीर क्या, कभी उपयोगी होता है...2
समग्र विकास के हेतु अपनी संस्कृति है उपयोगी...
मेरे देश की संस्कृति... ।।(4)।।

हे भारतीय पुनः जागो- स्वगौरव प्राप्त करो

(तर्ज- 1. करो कल्याण आतम का... 2. हे वीर तुम्हारे... 3. आओ बच्चों...)

हे भारतीय! तेरा नाम पर, एक शुभ संदेश लाया हूँ।
तेरे पूर्वज तेरे कर्त्तव्य क्या, ये तुझे बताने आया हूँ।। (टेक)

तुम्हारे पूर्वज न थे बन्दर, वे तो थे आर्य ऋषिवर।
अरबों खरबों वर्ष पूर्व से ये, यहाँ के आर्य कुलंकर।। (1) हे...
तेरे पूर्वज न थे अनार्य न ही, विदेश से आने वाले।
अनादि काल से भारतभूमि, रहा आर्यों का निवास स्थल।। (2) हे...
तुम्हारे पूर्वज हुये तीर्थंकर, चक्रवर्ती नारायण हलधर।
ऋषि मुनि वैज्ञानिक लेखक, आयुर्वेद गणितज्ञ कलाधर।। (3) हे...
इसलिये तो भारत देश रहा, विश्व का श्रेष्ठ गुरुवर।
विश्व का किया भरण पोषण, ताकर हुआ भारतवर्षवर।। (4) हे...
दिया विश्व को ज्ञानविज्ञान, गणित कला आयुर्वेद ज्ञान।
युद्धकला राजनीतिज्ञान, न्याय तर्क दर्शन सुज्ञान।। (5) हे...
सबसे महाविज्ञान दिया, जिसका नाम है आध्यात्मज्ञान।
जिस ज्ञान को लेने आते हैं, विदेशों से ज्ञानी महान्।। (6) हे...

भारत से ही गणित फैला, सर्वोच्चज्ञान व आत्मविज्ञान।
जिस कारण से अन्य देश भी, बनते गये सुसभ्य सुजान।। (7) हे...
अन्तर्कलह फूट के कारण, भारत का हुआ दीर्घ पतन।
राजनैतिक पराधीनता से, सभ्यता संस्कृति का हुआ पतन।। (8) हे...
अभी स्वतंत्रता के बाद भी, देश में नहीं हुआ पूर्ण उत्थान।
भ्रष्टाचार फैशन व्यसन से, देश का हो रहा पुनः पतन।। (9) हे...
जागो उठो हे आर्यवीरवर!, करो देश का पुनः उत्थान।
तुम्हारे आत्मिक उत्थान से ही, राष्ट्र का होगा पुनः उत्थान।। (10) हे...
''कनकनन्दी'' तो जगा रहें हैं, ज्ञान-विज्ञान आह्वान द्वारा।
आर्यवीर देर न करो, राष्ट्रहित हेतु करो उत्थान।। (11) हे...

प्राचीन गौरव- आधुनिक बोध से हे भारतीय! पुनः विश्वगुरु बनो! (राष्ट्रीय उद्बोधन कविता)

भारत ओहो भारत...3
कितना सुन्दर देश हमारा... कितनी गरिमा गाथा... (स्थायी)...
हमारे यहाँ जन्म लिया है... अध्यात्म जैसी शिक्षा...2
गणित विज्ञान आयुर्वेद भी... यहाँ की महान् शिक्षा...2 ... (1)
हमारे यहाँ जन्म लिया है... तीर्थंकर महाज्ञानी...2
सदय हृदय महात्मा बुद्ध... पताञ्जली जैसी ध्यानी...2 ... (2)
उमास्वामी यथा सूत्रकार हुए... वीरसेन महाज्ञानी...2
चरक सुश्रुत आयुर्वेदाचार्य... अक्षपाद अणुज्ञानी...2 ... (3)
तर्कधुरन्धर अकलंक सूरी... समन्तभद्र भी तथा...2
यतिवृषभ है महागणितज्ञ... ब्रह्माण्ड की रची गाथा...2 ... (4)
वराहमिहिर भास्कराचार्य भी... महावैज्ञानिक हुए...2
जिनसेनस्वामी रविषेणाचार्य... महाकाव्यकार हुए...2 ... (5)
वाल्मिकी व वेदव्यास भी तथा... कालिदास कवि हुए...2
जयदेव तथा बैजू बावरा... वैश्विक कविता गायें...2 ... (6)

इत्यादि कारण भारत भी कभी... बना था विश्व का गुरु...2
अभी तो भारत स्वतन्त्र हुए भी... नहीं बना विश्वगुरु...2 ... (7)
भ्रष्टाचार प्रदूषण रोगों का... बन रहा शिरमौर...2
अभी तो स्व उद्धार करो है... यह है युग पुकार...2 ... (8)
प्राचीन गौरव आधुनिक बोध... करके हे! समन्वय...2
पुरुषार्थ द्वारा विश्वगुरु बनो...'कनक' करे आह्वान/(ललकार/पुकार)...(9)

राष्ट्रीय झण्डा/प्रतीक हमें सिखाता है!

(तर्ज- 1. दुनियाँ में रहना है तो काम करो प्यारे... 2. अच्छा सिला दिया तूने...)

तिरंगा हमें सिखाता है राष्ट्रभक्त बन, राष्ट्रीय गौरवों की रक्षा करते चल SS
केशरिया सिखाता है स्वार्थ त्यागी बन, राष्ट्रीय हित हेतु बलिदान कर... (टेक)

शुक्ल वर्ण सिखाता है पावन भी बन, शुचिता के भाव से राष्ट्र हित कर SS
हरा वर्ण सिखाता है खुशहाल बन, जय जवान जय किसान जय विज्ञानी बन...(1)

अशोक चक्र सिखाता है प्रगति भी करना, प्रगति से देश का शोक दूर करनाSS
चौबीस आरे तीर्थेशों/(तीर्थंकरों) की याद दिलाते, पंचशील व्रतों को भी याद कराते...(2)

सिंह हमें सिखाता है धैर्यशाली बनना, सत्साहस के बल पर कर्त्तव्य है करनाSS
बैल हमें सिखाता है भद्रशील बनना, शाकाहारी बनकर जीव रक्षा करना...(3)

घोड़ा हमें सिखाता है श्रमशील बनना, अप्रमादी बनकर वफादार रहना SS
हाथी हमें सिखाता है बुद्धिमान बनना, राष्ट्रीय हित हेतु सचेत भी रहना... (4)

'सत्यमेव जयते' सत्यनिष्ठ प्यारा, 'सर्व सत्ये प्रतिष्ठित' वैश्विक नारा SS
इसी आदर्श से हमें झण्डा को है मानना, केवल वस्त्र को ही ध्वज(पताका) नहीं मानना...(5)

इन आदर्शों को जो पालन करे हैं, वे ही राष्ट्रभक्त अन्य राष्ट्रद्रोही हैं SS
राष्ट्रीय चिन्हों को जो केवल माने हैं, इन आदर्शों का जो हनन कर हैं... (6)

वे ही राष्ट्रद्रोही भले नेता या प्रजा हो, राष्ट्रीय संस्कृति नाशक कोई भी जन होSS
'कनकनन्दी' कहे भारतीयों जागो है, भारतीय संस्कृति को आगे बढ़ाओ है...(7)

भारतीय बने सु-भावधारी
(भारतीयों की 28 कमियों को दूर करने के उपाय)

(तर्ज- हे परम कृपालु...)

त्यागो भारतीय रुढिवादिता, सत्य-तथ्य को स्वीकार करो।
संकीर्णता का भाव त्यागकर, उदारता का भाव धरो।। (टेक)

अन्धानुकरण की वृत्ति त्यागकर, परीक्षा प्रधानी तुम बनो।
अकल बिना नकल को छोड़ो, गुणग्राहकत्ता भाव धरो।। (1)

ढोंग-पाखण्ड की वृत्ति छोड़कर, सरल-सहज की चर्या करो।
फैशन-व्यसनों से दूर-रहकर, सादा जीवन उच्च भाव धरो।। (2)

रटन्त पढ़ाई की डिग्री छोड़कर, शोध-बोधात्मक कार्य करो।
अन्धा विदेशी कानून त्यागकर, सत्य-समता का न्याय करो।। (3)

गुलामी भाषा का मोह छोडकर, मातृभाषा का भी ज्ञान करो।
पाश्चात्य की अपसंस्कृति त्यागकर, भारतीय संस्कृति हिये धरो।। (4)

अश्लील अस्वास्थ्यकर वेश त्यागकर, शालीन स्वास्थ्यप्रद वेश धरो।
हिंसाकारक रोग जनक खाद्य छोडकर, स्वास्थ्यप्रद शाकाहार करो।। (5)

परावलम्बी प्रमाद दूरकर, अप्रमादी स्वावलम्बी बनो।
निन्दा चुगली गप्पे छोडकर, हितमित प्रिय वचन बोलो।। (6)

अश्लील हुल्लड गाना छोडकर, शिक्षाप्रद (अच्छा) गाना गाओ।
वित्तरागता का भाव छोडकर, वीतरागता भाव धरो।। (7)

कट्टरता का पंथ छोडकर, साम्य भाव का पथ धरो।
एकान्त का आग्रह छोड़कर, अनेकान्त का भाव धरो।। (8)

बाह्य तप का ढोंग छोडकर, इच्छा व ईर्ष्या का भाव तजो।
तन से धर्म का पालन छोडकर, नव कोटी से धर्म करो।। (9)

प्रदर्शन का भाव त्यागकर, आत्मदर्शन का भाव धरो।
माला फैरना क्रियात्यागकर, मन परिवर्तन (मनमंजन) की क्रिया करो।। (10)

गन्दगी फैलाना वृत्ति छोड़कर, सर्वत्र स्वच्छता का कार्य करो।
राष्ट्रीय सम्पत्ति को नष्ट न करो, अनुशासन से कार्य करो।। (11)

भेद-भाव का भाव त्यागकर, प्रेम एकता भाव धरो।
कार्य संस्कृति पालन करके, भ्रष्टाचार का त्याग करो।। (12)

आगम-अनुभव दोनों मिलाकर, यह भाव कविता रची गई।
'कनकनन्दी' तो भाव पुजारी, भारतीय बने सुभावधारी।। (13)

भारतीयों वैश्वीकरण अपनाओ!

(राग- तू इस तरा से मेरी जिन्दगी में शामिल है...)

वैश्वीकरण के इस चलन में, उदारभावी बनें
जहाँ भी जाएँ तो ऐसा लगे, विश्व मेरा है... (स्थायी/टेक)

संकीर्णता नशे पंथ जाति भाषा राष्ट्र की
सर्व हितकारी शिक्षाधर्म न्याय राजनीति
कार्य व्यवस्था भ्रष्टाचार से रहित बने... जहाँ भी जाएँ... (1)

विपदाएँ हैं ग्लोबल वार्मिंग भूकम्प सुनामी की
आपदाएँ हैं प्रदूषण परमाणु रेडियेशन की
पर्यावरण जीव सुरक्षा से मैत्री भाव जगे... जहाँ भी जाएँ... (2)

उठो! जागो! भारतीयों, करो खुद ऐसा यतन
भ्रष्टाचार से मुक्त हो, ये हमारा वतन
'सुविज्ञ' तुम तो निभाओ, विश्व गुरु का चलन... जहाँ भी जाएँ... (3)

हो भारतीय संस्कृति युक्त जापानी कार्य पद्धति

(तर्ज- 1. इक परदेशी मेरा दिल ले गया... 2. जमुना किनारे श्याम जाया...)

जीवन में भ्रष्टाचर किया न करो, कर्त्तव्य को पूजा मान किया ही करो
तन मन समय में कर्त्तव्य करो, स्व-पर-राष्ट्र हिते दिल से करो... (टेक)

जापानियों के समान कर्त्तव्य करो रे, भारतीय संस्कृति हृदये धरो रे SS
भूकम्प व सुनामी में जापानी से सीखो हे, शान्ति व धैर्य से कर्त्तव्य करो हे
आत्म सम्मान सहित काम सदा करो, छीना झपटी कभी किया न करो... (1)

क्षमता से हर कार्य उत्तम करो रे, जमाखोरी दगाबाजी किया न करो रे SS
व्यवस्था से हर काम किया ही करो रे, लूटपाट उद्दण्डता किया न करो रे
राष्ट्र स्व-पर-विश्व हिते कुर्बानी करो, संकीर्ण स्वार्थ को त्याग ही करो...(2)

दूसरों की विपत्ति में सहाय बनो रे, अनैतिक लाभ कभी उठाया न करो रे SS
अफवाह निन्दा द्वेष किया न करो, तिल को ताड़ सम किया न करो
समाचार माध्यम अफवाह न फैलाये, सत्य तथ्य का ही प्रसार करे रे... (3)

भारतीय संस्कृति का ध्यान भी रखे रे, 'कनकनन्दी' कहे विकास करो रे
दूसरों से अच्छी शिक्षा पाया ही करो, विकास के कारणों को स्वीकार करो...(4)

इण्डियनों के पिछड़ापन के कारण एवं निवारण
(भारत के पतन एवं उत्थान के कारण)

(राग- सुनो सुनो ए दुनियाँ वालो...)

सुनो इण्डियन सुनो हिंग्लिस्थानी, पिछड़ापन की सच्ची कहानी
जिसे सुनकर जिसे गुनकर, तुम रचाओ प्रगति कहानी... (स्थायी)...

पिछडापन के प्रधान हेतु, अव्यस्थित कार्य पद्धति
अनुशासन हीन तेरी प्रवृत्ति, कार्य करने में आलस्यवृत्ति
कर्त्तव्यनिष्ठा तुम में नहीं है, दक्षता प्राप्त करते नहीं है

अकल बिना नकल प्रवृत्ति, सत्य-तथ्य बिना तेरी कृति... (1)

शोध-बोध बिना तुम्हारी शिक्षा, साक्षर होना ही तुम्हारी इच्छा
डिग्री प्राप्त करो नौकरी हेतु, नौकरी करना शोषण हेतु
भ्रष्टाचार हेतु तेरी राजनीति, रक्षक बनकर भक्षक नीति
जाति पंथ क्षेत्र भाषा आधारित, राजनीति तेरी फूट की नीति... (2)

न्यायालय तेरा अन्याय हेतु, प्रभावशाली व्यक्ति रक्षा हेतु
अतिदेरी से फैसला करो, साक्षी आधारित निर्णय करो
आतन्कवादी व दोषी नेता हेतु, करोड़ो का खर्च रक्षण हेतु
छोटे दोषी हेतु कठोर नीति, सही में कानून अन्ध ही नति... (3)

गुलामी कानून अभी भी चले, बेचारी जनता अभी भी मरे
मद्य विक्रय अभी भी चले, पशु हत्या अभी भी चले
तुम्हारी पुलिस सब से भ्रष्ट, रक्षक रूप में महाराक्षस
नौकर रूप में साक्षात् यम, धन जान मान करे हरण... (4)

व्यापार उद्योग में सच्चाई कहाँ, झूठ मिलावट शोषण वहाँ
जमाखोरी नकली वस्तु विक्रय, करचोरी धोखाधड़ी प्रचुर
गन्दगी फैलाओ प्रदूषण करो, वृक्ष पशु की हत्या भी करो
फैशन-व्यसन दिखाव करो, आधुनिकता का ढोंग भी करो... (5)

धर्म में नहीं है आध्यात्म लक्ष्य, पवित्र भावना महान् लक्ष्य
सत्य अहिंसा व परोपकार, प्रामाणिकता व नैतिकाचार
धर्म में भी चले राजनीति व्यापार, बाह्य में प्रचार ढोंगाचार
धन जब मान का प्रदर्शन होता, आत्मदर्शन का नहीं है पता... (6)

मातृभाषा का नहीं सही ज्ञान, अंग्रेजी भाषा का करो है मान
इसलिए स्वसंस्कृति ज्ञान से, अनजान होकर बने हीयमान
इसका प्रतिफल मिल रहा है अभी, विभिन्न रोगों के बन गये हो रोगी
तनाव एड्स डायबिटीज रोगी, हृदयाघात से क्षय के भोगी... (7)

दुर्घटना से आत्महत्या पर्यन्त, तलाक, विघटन, हड़ताल तक
आतंकवाद से नस्लवाद पर्यन्त, ये प्रतिफल तुम्हारे कृत्य
दोषों को जानकर कर निवारण, जिससे होगा तेरा कल्याण
'कनकनन्दी' की यही भावना, इसी हेतु हुई यह रचना... (8)

सुखी एवं दुखी होने के कारण
(दुखी की विकृत भावना)

हे दुःखी देश इंडिया सुखी बनने का उपाय करो
(खुशी के पैमाने पर भारत का स्थान 90वें स्थान पर पृथ्वी में)
(एक अन्तर्राष्ट्रीय विदेशी रिपोर्ट पर आधारित)

(तर्ज - 1. है यही समय की पुकार... 2. सुनो सुनो ऐ दुनियाँ वालों...)

सुनो इंडियन! सुनो दुःखी देश, तुम्हारे दुःखों के सच्चे कारण।
इसे सुनकर निवारण कर दुःखों के कारण हर प्रकार।।...

तुम हो आध्यात्म देश भारत, विश्व गुरु भी कहलाते थे।...2
अक्षय अनन्त निर्वाण सुख तुम्हारे पूर्वज पाते थे।।...2
इस सुख हेतु चक्रवर्ती का भी भोग-वैभव त्यागते थे।
आत्मा के शोध-बोध-प्राप्ति से परम सुख को पाते थे।। (1) सुनो इंडियन...

तुम तो तुम्हारे पूज्य पुरूषों से विपरीत काम करते हो।...2
इसलिए तो खुशीस्तर पर 90वें स्थान को पाते हो।।...2
लक्ष्य तुम्हारा भौतिक हुआ खाना-पीना मजा करना।
इसी लक्ष्य से चमड़ी, दमड़ी, पढ़ाई में मस्त रहना।। (2) सुनो इंडियन...

इसलिए न्याय-अन्याय व करणीय-अकरणीय न मानते।...2
भ्रष्टाचार व मिलावट तथा धोकाधड़ी पाप करते।।...2
अकल बिना नकल करते स्वयं को सुपर मानते।
फैशन-व्यसन बाह्य दिखावा में शक्ति सम्पत्ति गंवाते।। (3) सुनो इंडियन...

आलस्य, प्रमाद, कामचोरी में समय बुद्धि गंवाते हो।...2
जिसके कारण स्वास्थ्य हानि व आत्मिक पतन करते हो।।...2
फेइम-नेइम मनी गेइन हेतु हर काम तुम करते हो।
शिक्षा, व्यापार राजनीति, सेवा धर्म भी करते हो।। (4) सुनो इंडियन...

दूसरों के गुण विकास से भी ईर्ष्या-द्वेष-घृणा करते हो।...2
दुःखी रोगी दीन, गरीब का घृणा से सहयोग न करते हो।।...2
गुण-ग्रहण का भाव न रखते, निन्दक गुण द्वेषी बनते हो।
गुण हीन व सदोषी होते भी स्वयं को महान् जताते हो।। (5) सुनो इंडियन...

सादा जीवन उच्च विचार हीन कृत्रिम जीवन ढोते हो।...2
सात्विक पौष्टिक ताजा भोज्य छोड़ तामस भोजन करते हो।।...2
माता-पिता की सेवा न करते संयुक्त परिवार न भाता है।
संकीर्ण-स्वार्थ व स्वच्छन्द जीवन तुमको अधिक सुहाता है।।(6) सुनो इंडियन...

प्रदूषण व गन्दगी फैलाना तेरा जन्म सिद्ध अधिकार।...2
जाति धर्म भाषा क्षेत्र हेतु भेद भाव तुझे प्रियकर।।...
मन में कुछ, वचन में कुछ और काया में कुछ करते हो।
धर्म शिक्षा व कानून, कार्य में एक रूप न लाते हो।। (7) सुनो इंडियन...

अति लालसा तृष्णा हेतु अन्याय से भी धन कमाते।...2
जन्म-मृत्यु-विवाह-पार्टी में फिजूल खर्च भी करते।।...2
इसके हेतु ऋण भी लेते, ब्याज से धन हानि करते हो।
खेल-खिलाड़ी, नट-नटी हेतु फिजूल खर्च भी करते हो।। (8) सुनो इंडियन...

अन्नदाता किसान हेतु सरकार न धन खर्च करती।...2
मांस, मद्य व खेलादि हेतु प्रचुर धन भी खर्च करती।।...2
कानून तुम्हारा अति खर्चीला शीघ्र भी न्याय न मिलता है।
राजतंत्र अतिभ्रष्ट तंत्र जंगली राज भी चलता है।। (9) सुनो इंडियन...

इत्यादि कारण तनाव, अशान्ति रोग से पीड़ित होते हो।...2

डिप्रेशन फोलिया आदि से आत्म हत्या तक करते हो।।...2
इन कारणों से तुम्हारी खुशी का स्तर भी घट जाता।
खुशी ही नहीं तो आत्मिक शान्ति का आनंद तूँ कहाँ पाता।। (10) सुनो इंडियन...

सुख यदि चाहो कुप्रवृत्ति त्यागो करो हे! सत प्रवृत्ति।...2
"कनकनन्दी" की पवित्र भावना पाओ हे आत्म संतुष्टी।।...2
सुनो इंडियन! सुनो दुखी देश, तुम्हारे दुःखों के सच्चे कारण।
इने सुनकर निवारण दुःखों के कारण हर प्रकार।। (11) सुनो इंडियन...

विश्वगुरु भारत बन गया बेईमानों का देश
(ईमानदारी में भारत का स्थान 87वें पायदान पर)

(राग- 1. कहाँ गये चक्री... 2. सुनो सुनो ऐ दुनिया... 3. तन के तम्बूरे में... 4. पूजा-पाठ...)

कहाँ गयी वह ईमानदारी जिससे भारत महान् था
प्राण जाये पर वचन न जाये ऐसा जिनका शपथ था

प्रामाणिकता के हेतु ही भीष्म ब्रह्मचर्य का नियम लिया (व्रत को धारा)
पिता के वचन पालन हेतु श्रीराम वनवास स्वीकारा
हरिश्चन्द्र भी प्रतिज्ञा हेतु स्मशान में शवदाह भी किया
प्रामाणिकता की सिद्धि हेतु सीता ने अग्नि में प्रवेश किया... (1)

"सत्यमेव जयते" जिस भारत का महान् भी मन्त्र रहा
वही भारत आज ईमानदारी में, सत्यासीवें (87) स्थान में रहा
यह तो आज चिन्ता, चिन्तन व शर्मनाक परिस्थिति ही मानो
इससे श्रेष्ठ प्रामाणिक हेतु मरण वरना उचित जानो... (2)

यत्र तत्र सर्वत्र आज इण्डिया में बेईमानी छाई
मन वचन व कार्य से आज ईमानदारी गायब हुई
स्कूल में देखो शिक्षक न पढाते ट्यूशन पढ़ाते धन लोभ से

छात्र भी देखो नकल करके डिग्री पाकर नौकरी करते... (3)

नौकर बन के काम न करते भ्रष्टाचार से धन कमाते
व्यापार उद्योगे मिलावट तथा शोषण करके धन जोड़ते
लोकसभा व विधानसभा में जनसेवक बने तानाशाह
काम न करके हंगामा करते भ्रष्टाचार के शाहनशाह... (4)

पुलिस देखो रक्षा हेतु नौकर बन के राक्षस बनते
हर पाप में इनका हाथ चोरी भी करते लाठी भांजते
डॉक्टर आज डाकू बने है धन सहित जान भी लेते
हड़ताल करके रोगी को मारते फर्जीवाड़ा से धन कमाते... (5)

न्यायालय बना यम का आलय समय धन के शोषण द्वारा
कर्मचारी से वकील तथा जज भी कमाते अन्याय द्वारा
धर्म में देखो बाह्य दिखावा पवित्र कर्त्तव्य नहीं करते
नौकर द्वारा धर्म करते गुरु की सेवा नहीं करते... (6)

परिवार व समाज में देखो, स्व-स्व कर्त्तव्य नहीं करते
माता-पिता व वृद्ध रोगी के समुचित सेवा नहीं करते
स्व-स्व के परिसर की सफाई-काम भी नहीं करते
यत्र तत्र भी गन्दगी करके पर्यावरण को नष्ट करते... (7)

अनुशासन व आचार न पालते अश्लील उद्दण्ड काम करते
तथापि स्वयं को सभ्य मानते आधुनिकता का ढोंग रचाते
''कर्मण्येव अधिकारस्तु'' यह सन्देश श्रीकृष्ण ने दिया
''मा फलेषु कदाचन'' ऐसी निस्पृहता गीता में कहा... (8)

महावीर ने 'वीतरागता' को सबसे महान् धर्म भी कहा
'तृष्णा त्याग' को बुद्धदेव ने दुःख निवृत्ति का उपाय कहा
''साँच बराबर तप नहीं है'' झूठ बराबर होता पाप
जाके हिरदे साँच बैठा है वाके हिरदे बैठा है आप... (9)

''जिनको मानते उनकी न मानते'' कर रहे हैं विपरीत काम
'मुँह में राम बगल में छुरी' ऐसे चल रहा देश का काम

बाहर में भगवान् की जय हो, अन्दर में बेईमान की
'गोमुख व्याघ्र' समान क्रिया चल रही इण्डिया महान् की... (10)

इण्डियन बने बड़े इडियेट काम न करते गाल बजाते
सफेद पोश दिन के चोर कर्त्तव्य चोरी प्रायः करते
इसी कारण आज संत्रस्त भारत में हो रहा है हाहाकार
इसे दूर करने का उपाय, ईमानदारी को करो स्वीकार... (11)

इसी हे यह रचना हुई, 'कनकनन्दी' की यही पुकार
मिथ्या को त्यागो सत्य को भजो जिससे होगा बेड़ा पार...

आधुनिक इंडियन की एक ही भाषा
(व्यंगात्मक उद्बोधनपरक कविता)

तर्ज :- (1.सुनो सुनो ऐ दुनियाँ... 2. नगरी-नगरी...)

मै हूँ आधुनिक इंडियन मुझे आती है एक ही भाषा।
हिन्दी अंग्रेजी व मातृभाषा मेरी केवल है सहायक भाषा।। ...
मूल भाषा मेरी एक ही होती है वह है धन की भाषा।
परिवार, शिक्षा, व्यापार, समाज, न्याय, राजनीति, धर्म की भाषा।।
धर्म, अर्थ, काम, मोक्ष में मुझे आवे अर्थ पुरुषार्थ की भाषा।
अर्थ बिना मुझे सब अनर्थ लगे न आवे मुझे दूसरी भाषा।। मै हूँ...(1)
अर्थ की आवश्यकता को मैंने बना लिया है सर्वे सर्वा।
साधन को मैने साध्य बनाकर आत्मा का कर दिया खातमा।।
भौतिकवादी पाश्चात्य देश आज समझ रहे नैतिक भाषा।
आध्यात्मवादी मैं इंडियन भूल गया हूँ नैतिक भाषा।। मै हूँ...(2)

परिवार

धन ही मेरा होता सर्वस्व, मैं धन मय धन ही मैं हूँ।
धन ही मेरा माता-पिता भाई-बहिन व धन में मैं हूँ।।
परिवार में होता आदर जब मेरे पास होता है धन।

धन के बिना मेरे सुगुण हो जाते हैं रफु चक्कर।। मैं हूँ...(3)

शिक्षा

शिक्षा का लक्ष्य, माध्यम, उत्तीर्ण डिग्री उपयोग होता है अर्थ।
अर्थ बिना शिक्षा का सर्वस्व हो जाता है पूर्ण अनर्थ।।

व्यापार

व्यापार में कहना ही क्या इसकी भाषा तो सदा प्रसिद्ध।
व्यापार का सर्वस्व ही धन, इसके बिना न कहीं प्रसिद्ध।। मै हूँ...(4)

समाज

समाज में भी प्रतिष्ठा मिले, जिसके पास हो धन की भाषा।
इस भाषा बिन समाज न चलता अभी तो है इसी का सिक्का।।

न्याय

न्याय में भी चले धन की भाषा जिसका धन उसका न्याय।
धन की भाषा बिना बेचारा, निर्दोषी भी दण्ड पाय।। मैं हूँ...(5)

राजनीति

राजनीति में तो सदा ही चले, धन की भाषा अति प्रचुर।
राजनीति तो धन आधारित, लोकतंत्र से समाजवाद।।

धर्म

धर्म सीमा से परे धन की भाषा अभी चल रही धर्म क्षेत्र में।
धन ही धर्म धन ही मर्म धन ही स्वर्ग मोक्ष क्षेत्र में। मैं हूँ...(6)
गर्भ से लेकर मरण तक मेरा वास्ता पड़े धन भाषा से।
इसलिये मुझे इसी भाषा का प्रयोग आता है हर क्षेत्र में।।
जागरण व सुप्त अवस्था अथवा सुषुप्त या स्वप्न अवस्था।
हर अवस्था मे इसी भाषा का प्रयोग करना मेरी निष्ठा।। मै हूँ...(7)
इसलिये मेरी भाषा बिना कहीं भी न होता कोई काम।
अन्य भाषा को समझने योग्य नहीं है क्षमता मेरे पास।।

इसी भाषा का अन्य नाम है मुद्राराक्षस या अर्थ अनर्थ।
कनक, कांचन, वैभव, सम्पत्ति, परिग्रह या संग्रह अर्थ।। मै हूँ...(8)
इसलिये तो प्रसिद्ध हुआ सब रस राम रूपैया भैया।
बाप बड़े न भैया जग में सबसे बड़ा रूपैया।।
गोल्ड इज गॉड गॉड इज गोल्ड भी कहलाये भैया।
मनी मनी मनी स्वीटर देन हनी तुम हो प्यारे भैया।। मै हूँ...(9)
इसी भाषा की उपभाषा भ्रष्टाचार, मिलावट नकली माल।
शोषण, कालाधन, धोखाधड़ी, अन्याय जमाखोर अत्याचार।।
भ्रूण हत्या व दहेज हत्या, चोरी, डकैती, आतंकवाद।
अपहरण, अहंकार व भेद-विभेद अथवा होवे नस्लवाद।। मै हूँ...(10)
इसलिये मुझे समझ न आती, धर्म की भाषा या गुरु की भाषा।
नैतिक भाषा या कानूनी भाषा देशी भाषा या विदेशी भाषा।।
इसलिये तो तीर्थंकर बुद्ध साधु मेरी भाषा से विरक्त।
अर्थ को अनर्थ का मूल जानकर स्वार्थ लाभ में होते हैं रक्त।। मैं हूँ...(11)
इससे मझे आभास होता अर्थ त्याग से हो स्वार्थ लाभ।
इसलिये गुरु ''कनकनन्दी'' ने कविता से किया हमारा लाभ।।
मै हूँ आधुनिक इंडियन मुझे आती है एक ही भाषा।
हिन्दी अंग्रेजी व मातृभाषा मेरी केवल है सहायक भाषा।। मै हूँ...(12)

अधिक जनसंख्या होने से या दूसरे देशों को हड़पकर कोई भी राष्ट्र शक्तिशाली नहीं हो सकता। - रस्किन

अपनी राष्ट्रीयता की भावना शुद्ध रखो, आपका राष्ट्रीय दृष्टिकोण स्वयमेव प्रबुद्ध हो जाएगा। - रस्किन

सच्ची महानता हृदय की पवित्रता में है, इसमें नहीं कि कोई तुम्हारे बारे में क्या कहता है? - रामदास

मनुष्य ठीक उसी मात्रा में महान् बनता है जिस मात्रा में वह मानव-मात्र के कल्याण के लिए श्रम करता है। - सुकरात

आज तक ऐसा कोई महान् व्यक्ति नहीं हुआ जो सदाचारी न रहा हो। -फ्रैंकलिन

कुछ जन्म से ही महान् होते है; कुछ महानता प्राप्त करते है और कुछ लोगों पर महानता लाद दी जाती है। - शेक्सपियर

संसार महान् व्यक्तियों के बिना नहीं रह सकता, किन्तु महान् व्यक्ति संसार के लिए बहुत दुःखदायी होते है। - गेटे

प्रकरण- 3

जैन धर्म को विश्व स्तर पर पहुँचाने के उपाय

जैन धर्म की प्रभावना/प्रगति कैसे हो?

जिस प्रकार अग्नि को उचित मात्रा में ईन्धन, ऑक्सीजनादि उपलब्धि होती है तो अग्नि प्रज्ज्वलित होती है, प्रवर्द्धित होती है, प्रकाश फैलाती है, ताप देती है, अन्धकार को दूर करती है, ठण्डी को दूर करती है उसी ही प्रकार जब धर्म को उचित मात्रा में धार्मिक जन, धार्मिक साधन मिलते हैं तो धर्म अधिक तेजस्वी, प्रखर, पाप को दूर करने वाला, शिथिलता को मिटाने वाला हो जाता है। जैनधर्म वस्तु स्वभाव धर्म, अनादि अनिधन धर्म, अर्हन् धर्म, अनेकान्त धर्म, विश्व धर्म, सत्यधर्म, वैज्ञानिक धर्म, सर्वजीव उपकारी धर्म, इहलोक एवं परलोक को सुधारने वाला धर्म, जीवधर्म, जनधर्म होते हुए भी धर्मप्राण भारतवर्ष में भी इसका समुचित प्रचार-प्रसार नहीं हो रहा है। इसके प्रचार प्रसार एवं प्रभावना के लिये कुछ महत्वपूर्ण बिन्दुओं को कार्यान्वित करना केवल आवश्यक नहीं अनिवार्य है। यथा-

(1) सत् विश्वास - सत् विश्वास एक ऐसी शक्ति है जो सम्पूर्ण कार्य को अनुप्रेरित, प्रभावित, परिष्कृत करती है। विश्वास के बिना धार्मिक कार्य भ्रष्ट नेताओं के आश्वासन के जैसे खोखले, भ्रामक, मिथ्या हो जाते हैं। अधिकांश व्यक्ति आत्मकल्याण तथा धर्म की प्रभावना के लिये धार्मिक कार्य यथा- पंचकल्याणक, तीर्थयात्रा, दान, तप, ज्ञान आदि का अनुष्ठान नहीं करते हैं परन्तु धन कमाना, नाम कमाना, दिखावा, स्वप्रतिष्ठा, दूसरों को नीचा दिखाना आदि क्षुद्र दूषित विश्वास से, कामना से प्रेरित होकर करते हैं। ऐसे दूषित विश्वास को लेकर धर्म करना मानो अच्छे-अच्छे भोजन बनाकर उसमें मल, मूत्र या विष मिला कर खाना और खिलाने के समान है।

सत्ज्ञान- सत् ज्ञान आध्यात्मिक, अलौकिक प्रकाश है। इससे आत्महित की प्राप्ति होती है, अहित का परिहार होता है, ज्ञेय का परिज्ञान होता है। इन क्रियाओं से रहित लौकिक ज्ञान तो मिथ्या है ही परन्तु आध्यात्मिक शास्त्रों का ज्ञान भी मिथ्या है। कुछ लोग आध्यात्मिक धार्मिक शास्त्रों को तोता के

जैसे रटकर, कम्प्यूटर के जैसे याद रखकर और टेपरिकार्डर के जैसे बोलकर या प्रेस के जैसे लिखकर स्वयं को धर्म का मर्मज्ञ, वीतराग-विज्ञान का वैज्ञानिक मान लेते हैं। इसलिये ही धार्मिक शास्त्रों को पढ़ने वाले भी ऐसे व्यक्ति कूपमंडुक संकीर्ण विचार वाले, अनुदार, कुटिल, बगुले के जैसे काले दिल एवं लोमड़ी के जैसे काले दिमाग वाले, मच्छरों तथा सर्प के समान आचरण करने वाले होते हैं।

(3) सदाचार- स्वपर हितकारी आचरण सदाचार है। विनम्र, सरल, मृदु, शान्त, शीतल, अहिंसक, सत्य, अनुशासित आचरण ही सदाचार है। कुछ लोग उपर्युक्त आचरण के बिना अपनी-अपनी सम्प्रदाय-परम्परा के अनुसार रुढ़िवशात् कुछ बाह्य क्रिया-काण्ड को ही करके स्वयं को धार्मिक, सदाचारी मान लेते हैं। यह कार्य वैसा है जैसा कि एक भ्रष्ट व्यक्ति भ्रष्टाचार के माध्यम से नेता/मंत्री बनकर भ्रष्टाचार का आचरण, प्रचार-प्रसार करते हुये भी स्वयं को राष्ट्रनायक, जन सेवक मान लेता है।

(4) वात्सल्य- धर्मात्मा को छोड़कर धर्म बाह्य किसी भी साधन में नहीं होता है। भले धर्म के लिये धर्मग्रन्थ, धर्मायतन, धार्मिक उत्सवादि बाह्य निमित्त है परन्तु इसमें धर्म नहीं है। जिस प्रकार विद्यालय स्वयं विद्या नहीं है, वहाँ विद्या का पठन-पाठन, आदान-प्रदान होता है परन्तु विद्यालय में यदि विद्याध्ययन नहीं होता है या वहाँ अन्य कुछ अनैतिक कार्य होता है तो वह विद्यालय यथार्थ से विद्यालय नहीं है, तथैवच यदि धार्मिक ग्रन्थ का अध्ययन, धार्मिक क्षेत्रादि की यात्रा, सुरक्षा, सम्वृद्धि आदि करते हुये भी धार्मिक जनों से वात्सल्य, प्रेम, आदर, सत्कार नहीं करते हैं तो वह वस्तुतः धर्म प्रेम नहीं है जड़ प्रेम है। प्रायोगिक रूप में अनुभव में आता है कि अधिकांश व्यक्ति-धार्मिक व्यक्ति साधु, साध्वी से द्वेष करते हैं, घृणा करते हैं परन्तु विश्व मैत्री की चर्चा करते हैं, धर्म की प्रभावना करने का ढोंग रचाते हैं, धार्मिक ग्रन्थों के अध्ययन का स्वांग रचाते है, तीर्थ यात्रा का मनोरंजन पिकनिक-भटकाव करते हैं। साधुओं के चातुर्मास में भी जो स्थानीय व्यक्ति एक बार भी दर्शन करने के लिये, सेवा करने के लिए, आहार देने के लिये, उपदेश सुनने के लिये भी नहीं आते है वे ही कोई कार्य के

बहाने से, यात्रा के बहाने से अन्य स्थान में जाते हैं जहाँ साधु प्रवास करते रहते हैं उसमें से तो कुछ वहाँ भी साधु के दर्शन नहीं करते हैं परन्तु कुछ साधु के पास जाकर नमोऽस्तु, विनय किये बिना ही, साधु के रत्नत्रय के बारे में पूछे बिना ही प्रश्न करते हैं क्या हमें पहचान लिये? वहाँ ऐसे प्रश्न करते है, दिखावा दिखाते है, जैसे की वे बहुत परम भक्त हैं, सेवा भावी हैं, धर्म के ठेकेदार हैं। यदि साधु अनावश्यक जन सम्पर्क से बचने के लिए, मौन साधना के लिए अथवा स्वयं के आवश्यक कार्य में व्यस्त होने के कारण उनसे चर्चा नहीं करते हैं तो वे स्वयं चर्चा को आगे बढाते हुए कहते हैं कि हमारे वहाँ आपका चातुर्मास हुआ था, ऐसा कार्यक्रम हुआ था, वैसा कार्यक्रम हुआ था। और यदि उसमें भी साधु कुछ नहीं बोलेंगे तो फिर बोलेंगे कि हम इतनी दूर से आए हैं, आप क्या रूठ गये हैं, हमें भूल गए हैं, हमें पूछते तक नहीं हो? ऐसे यद्धा तद्धा बकते रहते हैं। यह है धार्मिकों के थर्मामीटर (मापदण्ड)। जो व्यक्ति स्वयं के ग्राम में, नगर में रहने वाले, चातुर्मास करने वाले साधु की सेवा तक नहीं करते हैं, पानी तक भी नहीं पिलाते हैं वे ही अन्य स्थान में नगर में जाकर ऐसे दिखावा दिखाऐंगे। जीवन्त भगवान् को तो पूछेंगे नहीं, तीर्थयात्रा के बहाने इधर-उधर घूमते रहेंगे, मनोरंजन करेंगे और स्वयं को धार्मिक सिद्ध करेंगे। वे अन्य स्थान में इसलिए ऐसा दिखावा दिखाते है कि वहाँ स्वयं को करना धरना, लेना-देना कुछ भी करना नहीं पड़ता है। केवल मियाँ मिट्ठू बनकर स्वयं को धार्मिक सिद्ध करके उस स्थानीय समाज से भी रहने की, भोजन की व्यवस्था करवाना चाहते हैं। वहाँ के स्थानीय समाज द्धारा आने वाले यात्रियों की समुचित व्यवस्था करने पर भी उनकी नुक्ताचीनी करते रहेंगे। थोड़ी सी गलती में भी उनको बतायेंगे कि तुम्हारे यहाँ ऐसी व्यवस्था नहीं हुई, वैसी व्यवस्था नहीं हुई, हमारे गाँव में तो बहुत अच्छी व्यवस्था होती है। परन्तु वही व्यक्ति अपने ग्राम में अन्य ग्राम से आने वाले अतिथियों को पानी तक नहीं पिलाते हैं। श्वेताम्बर श्रावक जब स्वयं के साधु के पास या दिगम्बर साधु के पास जाते हैं तो तीन बार उठ-बैठकर नमोऽस्तु करते हैं और साधु से 'सुख-साता' पूछते हैं परन्तु दिगम्बर लोग साधुओं से पूछवाना चाहते हैं। ये व्यक्ति वैसे है या इनकी नीति वैसी है

जैसी कि 'जिन्दा बाप से लट्ठम लठ्ठा मरे हुए को पहुँचाए गंगा'। अर्थात् जीवित पिता को पानी तक नहीं पिलायेंगे, सेवा नहीं करेंगे और मरने के पश्चात् शव को गंगा पहुचाऐंगे, हड्डी (अस्थि) तीर्थ में पहुचाऐंगे।

(5) संगठन- मनुष्य एक सामाजिक प्राणी होने के कारण उसको समाज में रहना पड़ता है। समाज के मेलजोल से ही मनुष्य प्रगति कर सकता है संघे शक्ति कलौयुगे' अर्थात् कलियुग में संगठन, एकता में शक्ति है। महान् विचारक जोहन डाक्सन ने यथार्थ में कहा है- By Uniting we stand, By Dividing we fall. अर्थात् संगठन से हम जीवित रहेंगे, उन्नत होंगे, प्रगति करेंगे और विघटन से हमारा विनाश हो जाऐगा। इसलिये तो जैन धर्म में चतुर्विध संघ की स्थापना तीर्थंकरों के काल में ही हो गई थी। महात्मा बुद्ध ने तो यहाँ तक कहा था कि- 'संघम् सरणं पव्वज्जामि' अर्थात् संघ के आश्रय को प्राप्त करो, संघ की शरण को प्राप्त करो अर्थात् संगठित होकर धर्म करो परन्तु वर्तमान धार्मिकों में परस्पर ईर्ष्या, द्वेष, फूट, कलह अधिक पाया जाता है। धार्मिक लोग तो ट्रेन में एक साथ विभिन्न व्यक्तियों के साथ बैठकर यात्रा कर सकते हैं, होटल में साथ खा सकते हैं, व्यापार कर सकते हैं परन्तु धार्मिक कार्य संगठित होकर नहीं कर सकते है। वहाँ एक दूसरे की कमी निकालेंगे वह कमी वास्तविक हो या अवास्तविक। उसको लेकर झगड़ा-कलह करेंगे। एक मतावलम्बी अन्य मतावलम्बी को घृणा दृष्टि से देखते हैं उसे अपमानित करते हैं इतना ही नहीं, एक मतावलम्बी अन्य मतावलम्बी को अधिक से अधिक जितना कष्ट देंगे, नफरत करेंगे उतना ही वे अपने को श्रेष्ठ धार्मिक मानते हैं। कोई एक व्यक्ति धर्म करते करता हो, दान करता हो, गुरु सेवा करता हो तो अन्य व्यक्ति न तो उसकी प्रशंसा करता है न सहायता करता है। सहायता करने की बात तो दूर रहे उसकी टांग पकड कर खिचेंगे कभी-कभी तो टांग ही काट देते हैं। जो व्यक्ति साधु की सेवा नहीं करते हैं, आहार नहीं देते है अन्यान्य धार्मिक कार्य में भाग नहीं लेते हैं वही व्यक्ति बड़े-बड़े कार्यक्रम में माला पहनने के लिए, फोटो खिचवाने के लिए भीड़ में बोली लेकर अभिषेक करेंगे, पूजा करेंगे, धार्मिक कार्य करेंगे परन्तु वे ही व्यक्ति बिना बोली में जब अभिषेक होता है, पूजा होती है तो न अभिषेक देखने के लिए ही आते हैं न पूजा करने के लिए भी

आते हैं क्योंकि उस समय तो फोटो खींचा नहीं जाएगा, माला नहीं पहनाई जाऐगी, नाक नहीं बढ़ेगी।

(6) प्रभावना- धार्मिक व्यक्ति धर्म की प्रभावना करना अवश्य चाहेगा और धर्म की प्रभावना के लिए स्वयं ज्ञानार्जन करेगा, ज्ञान-दान करेगा, साहित्य वितरण करेगा, दान देगा, उपवास करेगा तीर्थ यात्रा आदि भी करेगा परन्तु अधिकांश व्यक्ति भीड़-भाड़ को, अधिक बोली को, बाजा-गाजा को, मनोरंजन को, बाह्य आडम्बर को प्रभावना मानकर के बैठ गए हैं। जो अन्य समय में न मन्दिर तक जाते हैं, न गुरु की सेवा नहीं करते हैं, वे ही मेला ठेला में जाकर स्वयं को महान् धार्मिक सिद्ध करेंगे, बोली लेकर धार्मिक कार्यक्रम करेंगे।

मैंने जो उपर्युक्त वर्णन किया है यह कोई किताब से पढ़कर नहीं किया है यह मेरा प्रायोगिक अनुभव है। यदि धर्म की प्रभावना करनी है, प्रगति करनी है तो उपर्युक्त गुण-दोष के ऊपर विचार करके दोष को दूर करके गुणों को ग्रहण करना चाहिये। तब ही प्रभावना हो सकती है। केवल बाह्य आडम्बर, दिखावा, अनावश्यक खर्च से जैन धर्म की न प्रभावना हो सकती है न प्रगति हो सकती है।

धर्म अन्तः प्रकृति है, वही सारी वस्तुओं का ध्रुव सत्य है। धर्म ही वह चरम लक्ष्य है जो हमारे अन्दर काम करता है। (रविन्द्र)

यदि मनुष्य धर्म की उपस्थिति में इतने दुष्ट हैं तो धर्म की अनुपस्थिति में उनकी क्या दशा होती? (फ्रैंकलिन)

एक श्रेष्ठ जीवन ही एक मात्र धर्म है। (थामस फुलर)

सम्पूर्ण विश्व मेरा देश है, सम्पूर्ण मानवता मेरा बन्धु है, और भलाई करना ही मेरा धर्म है। (थामस पेन)

जो धर्म, जो नीति और जो कानून अन्न पर भूखों का अधिकार बतलाने के बदले उसका अधिकार बताता है जिसका पेट ठसाठस भरा हो, वह धर्म नहीं है, वह नीति, नीति नहीं है, वह कानून कानून नहीं है। (दादा धर्माधिकारी)

आदमी धर्म के लिए झगडेगा, उसके लिए लिखेगा, उसके लिए मरेगा, सब कुछ करेगा पर उसके लिए जीयेगा नहीं। (जवाहरलाल नेहरु)

अपना उल्लु सीधा करने के लिए शैतान भी धर्मशास्त्र के हवाले दे सकता

है। (शेक्सपीयर)
वास्तविक धर्म यह है कि जिन बातों को मनुष्य अपने लिए अच्छा नहीं समझते, दूसरों के साथ भी वैसी बात हरगिज न करें। (महाभारत)
आप मेरे जीवन को ध्यान से देखिए। मैं कैसे रहता हूँ, कैसे खाता हूँ, कैसे बैठता हूँ, कैसे बातचीत करता हूँ और आमतौर पर मेरा बर्ताव कैसा रहता है? इन सबको मिलाकर जो छाप आप पर पड़े, वहीं मेरा धर्म है। (गांधी)

वह जैन धर्म है मेरा

तर्ज- (जहाँ डाल-डाल पर .....)

एकान्त संकीर्ण पंथवाद से रहित सापेक्ष वाला।
वह जैन धर्म जग आला, वह विश्व धर्म है निराला
वह आत्म धर्म है प्यारा, वह सत्य धर्म है न्यारा।।
जिस धर्म के प्रचारक होते हैं तीर्थंकर गणधर प्यारा।। वह जैन....
वह विश्व...वह आत्म...वह सत्य... जय जिनवरम् SSS (टेक)...

जिस धर्म के अनुयायी होते हैं, सम्यक्दृष्टि न्यारे, सम्यग्दृष्टि न्यारे
सम्यग्दृष्टि हो सकते हैं, नर, नारक, पशु, देव सारे। [2]
जो मिथ्यात्व अनन्तानुबन्धी को, निरस्त करने वाला। वह जैन...
वह विश्व...वह आत्म...वह सत्य... (1)

आध्यात्म विकास श्रेणी में चढ़कर, जीव होते हैं जिनवरा[2],....
आत्मशुद्धि का धर्म यही, वसुधैव कुटुम्बकम् धारा।[2].....
स्वयं ही स्वयं का करता धरता, निर्माण करने वाला।।। वह जैन...
वह विश्व...वह आत्म...वह सत्य... (2)

भौतिकता से ऊपर उठकर, वैश्विक विचार वाला[2],
जहाँ न अपना न कोई पराया, है आत्मिक विचार वाला ....
सत्य, अहिंसा, अपरिग्रह ब्रह्मचर्य अचौर्य वाला। ।। वह जैन...
वह विश्व...वह आत्म...वह सत्य... (3)

क्षमा, मृदुता, सरल, सहजता, आकिंचन्य धर्म वाला[2],
आत्म अन्वेषण विश्व गवेषणा, आध्यात्म संस्कृति वाला[2]।...
'कनकनन्दी' का आत्म धर्म है, वैश्विक कल्याण वाला।। वह जैन....
वह विश्व...वह आत्म...वह सत्य... (4)

-: जैन तत्त्व वर्णमाला :-

(जैन तत्त्व परिचय मालिका)

सत्य अहिंसा नारा है-- सबसे हम को प्यारा है।
पञ्चपरमेष्ठी प्यारा है-- जग में सब से न्यारा है।
अनेकान्त सिद्धान्त प्यारा है-- समस्या समाधान सारा है।
स्याद्वाद कथन प्यारा है-- वचन पद्धति न्यारा है।
पञ्च अणुव्रत प्यारा है-- वैश्विक कानून सारा है।
पञ्च महाव्रत प्यारा है-- बन्ध. मुक्ति का सहारा है।
अनर्थदण्ड व्रत प्यारा है-- पर्यावरण सुरक्षा/(रक्षा) सारा है।
पञ्च समिति प्यारा है-- नैतिकाचार सारा है।
उत्तम दशधर्म प्यारा है-- वैश्विक धर्म सारा है।
षोढ़ष कारण प्यारा है-- तीर्थेश पद का सहारा है।
द्वादश/(बारह) अनुप्रेक्षा प्यारा है-- तात्त्विक चिन्तन सारा है।
चौदह गुणस्थान द्वारा है-- आत्म सोपान सारा है।
षट्लेश्या वर्णन सारा है-- मनोवैज्ञानिक सारा है।
सप्त व्यसन सारा है-- प्रमुख पतन द्वारा है।
प्रथम अनुयोग प्यारा है-- विश्व इतिहास सारा है।
करण अनुयोग प्यारा है-- गणितीय वर्णन सारा है।
चरण अनुयोग प्यारा है-- चारित्र वर्णन सारा है।
द्रव्य के अनुयोग प्यारा है-- वैश्विक व्यवस्था सारा है।
सम्यक् दर्शन प्यारा है-- आत्म/(सत्य) दर्शन के द्वारा है।

सम्यक् ज्ञान प्यारा है-- सत्य ज्ञान के द्वारा है।
सम्यक् चारित्र प्यारा है-- पवित्र आचरण द्वारा है।
जीव द्रव्य सबसे न्यारा है-- सच्चिदानन्द प्यारा है।
पुद्गल द्रव्य भी न्यारा है-- वैश्विक रचना सारा है।
धर्म द्रव्य भी न्यारा है-- सर्वगति में सहारा है।
अधर्म द्रव्य भी न्यारा है-- सर्व स्थिति में सहारा है।
आकाश द्रव्य भी न्यारा है-- सर्व अवकाश में सहारा है।
काल द्रव्य भी न्यारा है-- परिणमन में सहारा है।
आस्रव बन्ध के द्वारा है-- संसार भ्रमण सारा है।
संवर निर्जरा द्वारा है-- भवनाश के सहारा है।
पाप पदार्थ द्वारा है-- संसार दुःख सारा है।
पुण्य पदार्थ द्वारा है-- संसार सुख सारा है।
सर्वकर्म नष्ट द्वारा है-- मोक्ष तत्त्व मिले सारा है।
मोक्ष तत्त्व के द्वारा है-- आत्म सुख मिले सारा है।
जैनधर्म का नारा है-- वैश्विक शान्ति सारा है।

भ. महावीर यदि भारत में होते अभी समस्यायें होती भारी

(भारतीय अव्यवस्था एवं विकृति पर एक व्यंगात्मक रचना)

तर्ज :- (1. मन तड़पत हरिदर्शन ... 2. मेरा मन दर्पण ...)

होते महावीर यदि भारत में, अनेक समस्यायें होती उत्पन्न।
आत्मलक्ष्यहीन इण्डियन मेन, सन्मति को न देते सन्मान।। (टेंक)
वर्द्धमान यदि वर्तमान होते, उन्हें माना जाता पिछड़ा जन।
फैशन व डिग्रीधारी बिना, माना जाता नही सुपरमैन।।
राजतंत्र अभी नहीं होने से, नही होते वे राजकुमार। (1) होते ...

सवर्ण होने से नहीं हो पाते, सरकार के एक वे नौकर।
रत्नवर्षा से वैभव होने से, अपहरण भी होता संभव।।
जगंली राज्य के हेतु से भी, पुनः प्राप्त भी नहीं संभव।। (2) होते ...
दीक्षादि समये कार्य आयोजने, बोली के लिये होती समस्या।
आय अव्यय के हिसाब हेतु भी, समाज में होती समस्या।।
मौनधर कर साधना रत से, लच्छेदार भाषण का अभाव।। (3) होते...
जिससे न होती प्रसिद्धि व्यवस्था, भीड़ के बिना कहाँ है संभव,
एकान्तवादी उन्हें मानते, द्रव्यलिंगी व ढोंगाचारी।
भौतिकवादी उन्हें बोलते, पलायनवादी मिथ्याचारी।। (4) होते ...
समस्या सहित जंगल रहित, यदि वे होते समाधिरत।
इसे आत्महत्या मानता कानून, ऑर्डर देता कि करो एरेस्ट।।
इसलिये हे महावीर आप ,चतुर्थ काल में हो गये मुक्त।। (5) होते ...
यथार्थ से आप सन्मति निकले, कनकनन्दी अतः तुम्हारा भक्त।
वर्तमान को वर्धमान नही, अभी चाहिये तेरा राज पाट।।
इसलिये तुम वैभव त्यागकर, निज आत्मा ले हो गये मुक्त।। (6) होते ...

आध्यात्मिक प्रार्थना

(अन्तर मम विकसित करो)

(राग- 1. हमको मन की शक्ति देना... 2. बच्चों तुम निर्माता हो...)

अन्तर मम विकसित करो अन्तरतम हे!
निर्मल करो पावन करो निर्भय करो हे!... (टेक/स्थायी)
शत्रु-मित्र भेद-भाव रह न सके मन/(भाव) में,
ख्याति पूजा लाभ हानि से अप्रभावी बने,
दुःख शोक दीन हीन से हो जाऊँ परे,
सांसारिक बन्धन भी टूट जाये पूरे।।... अन्तर मम... (1)

बाधा विघ्न मान काम कट जाये सारे,
लोभ क्रोध ईर्ष्या द्वेष हट जाये सारे,
संकीर्ण के जञ्जीर भी टूट जाये सारे,
नभ सम विस्तार भी हो जाऊँ पूरे।।... अन्तर मम... (2)
आत्म ज्योति जग उठे मोहतम हो दूर,
सत्य न्याय पथ पे चलकर आगे ही बढ़ूँ,
अन्याय व अत्याचार संसार से दूर करूँ,
वैश्विक सुख व शान्ति हो जग में भरपूर।।... अन्तर मम... (3)
वज्र सम कठोर व फूल से भी कोमल,
अग्नि से भी ताप व चन्दन से शीतल,
मेरू सम धैर्य व नभ सम निर्मल
सर्वजीव साम्य भाव होऊ मैं सरल।।... अन्तर मम... (4)
अनेकान्त दृष्टि होऊ परस्पर प्रेम पले,
परदुःख कातरता सब जीव धरें,
आत्म सम सर्व जीव दूसरों से भाव धरें,
'कनक' का भाव सदा सत्य पे चलें।।... अन्तर मम... (5)

भाव से भाग्य एवं भविष्यत

(तर्ज- तोरा मन दर्पण कहलाए रे...)

मेरा मन दर्पण सम होय रे...2
जैसा भाव वैसा प्रतिबिम्ब, मन मेरा झलकाए ।।टेक।।
भाव गन्दा तो मन भी गन्दला, वचन भी गन्दा होय,
तीनों गन्दा तो काम भी गन्दला, सब गन्दा हो जाय।
जो भावों को निर्मल कर ले, सर्वत्र निर्मल होय रे।। मेरा मन।। (1)
भाव से कर्म है, कर्म से भावना, बीज वृक्ष सम होय,
बोये बबूल तो बबूल ही पाए, आम बोय आम होय।

जैसी करनी वैसी भरनी, कारण कार्य से होय रे।। मेरा मन।। (2)
अशुभ भाव से पाप बन्ध तो, शुभ भावे पुण्य होय,
निर्मल भाव से निर्वाण पावे, सत्य शिव सुन्दर होय।
मन चंगा तो कठौती में गंगा, भाग्य समुन्नत होय रे।। मेरा मन।। (3)
भाव भावना सबसे सरल है, दुरूह सबसे होय,
भाव वशीकरण मंत्र है भाव से उच्चाटन तक होय।
जो भावों को वश में करे हैं, जगत् वश में होय रे।। मेरा मन।। (4)
'कनकनन्दी' का भाव सदा है, स्व-पर शान्ति होय,
तीर्थेश साधु-सन्त बुद्ध भी, भावना का फल होय।
शुभ भावों से अशुभ को त्यागो, शुभ से शुद्ध भी होय।। मेरा मन।। (5)

कब आदर्श जीवन होगा

(तर्ज- 1. तुम ही मेरा उद्धार करो... 2. नगरी नगरी द्वारे-द्वारे)

सर्वज्ञ जाने मानव का कब, आदर्श जीवन होगा...3
पशुत्व त्याग से दिव्यभाव को, स्वेच्छा से स्वीकृति देगा...3 ।।टेक।।
संकीर्णता को त्याग करके, उदारता को ही भायेगा...2
भौतिकता से ऊपर उठकर, आध्यात्मिकता को चाहेगा...2 ...सर्वज्ञ जाने...(1)
देहेन्द्रिय मन से परे, आत्म द्रव्य को मानेगा...2
आत्मिक शान्ति प्रगति हेतु, उत्तम भाव को भायेगा...2 ...सर्वज्ञ जाने...(2)
स्व प्रगति के निमित्त कभी भी, प्राणी को पीड़ा न देगा...2
धर्म जाति राष्ट्र सीमा के कारण, संघर्ष से परे होगा...2 ...सर्वज्ञ जाने...(3)
आक्षेप विक्षेप संक्लेश रहित, शान्तिमय जीना होगा...2
सहअस्तित्व व सहयोगात्मक, मानव जीवन होगा...2 ...सर्वज्ञ जाने...(4)
मन वच काय कृत कारिता से, सरल सहज जीवन होगा...2

सत्य शिव सुन्दर अनुभवमय, आदर्श जीवन होगा...2 ...सर्वज्ञ जाने...(5)

मेरा जीवन आदर्श बने है, ऐसी भावना भाता हूँ।
'कनकनन्दी' की भावना है ये, स्व-पर-विश्व कल्याण होऊ।।

स्व-पवित्र भाव ही स्वधर्म तथा स्व-अपवित्र भाव ही विधर्म (स्वधर्म से शान्ति-विधर्म से अशान्ति)

(रागः यमुना किनारे श्याम...)

अपवित्र भाव कभी किया न करो, अशान्ति को निमन्त्रण दिया न करो
अपवित्र भाव से तीव्र संक्लेश होता है, जिससे पाप का आस्रव होता है
जिससे तन-मन-आत्मा अस्वस्थ होते हैं, अनेक समस्याएँ सहनी होती हैं...(टेक)

पवित्र भाव सदा किया ही करो, शान्ति से जीवन को जीया ही करो
पवित्र भाव से आल्हादित मन होता है, जिससे पुण्य का आस्रव होता है
जिससे तन-मन-आत्मा स्वस्थ्य भी होते हैं, इहलोक परलोक सुखी होते हैं...(1)

ईर्ष्या द्वेष घृणा लोभ कामुक भाव हैं, आसक्ति तृष्णा मोह अपवित्र भाव हैं
अपवित्र भाव त्याग से पवित्र भाव हैं, दोनों भाव परस्पर विरोधी भाव हैं
दोनों भावों का कर्ता-भोक्ता स्वयं जीव है, भाव ही भाग्य भविष्य का निर्माता है...(2)

अपवित्र भाव जब जहाँ भी होता है, उपरोक्त फलों का भोक्ता भी होता है
पवित्र भाव भी जब जहाँ भी होता है, उपरोक्त फलों का भोक्ता भी होता है
धर्मस्थल कर्मस्थल भजने भोजने, भाव ही फलदायक प्रमुख सर्व में... (3)

धर्मसाधना में यदि भाव अशुद्ध है, अशुद्धता का फल मिलना भी सिद्ध है
अशुद्ध भाव सर्वथा होता अधर्म है, पवित्र भाव सदा होता सुधर्म है
स्वयं को पवित्र करना सर्वोच्च।(सर्वत्र) स्वधर्म, स्वधर्म ही सुधर्म है अन्य है कुधर्म...(4)

स्वधर्म ही सुधर्म है, सुधर्म ही सुख, अधर्म ही विधर्म है, विधर्म ही दुःख

स्वधर्म स्वयं में तथा स्वयं ही सुधर्म, स्वयं को पवित्र करना धर्म का है मर्म
इसलिए स्वधर्म है सरल-सहज, धन जन आडम्बर बिना भी सुलभ... (5)

अधर्म संक्लेशकारी विधर्म कुधर्म, परावलम्बी परतन्त्रकारी है कुकर्म
अतएव सर्वथा त्यजनीय है कर्म, यह है सुख प्राप्ति के सर्वोच्च मर्म
कनकनन्दी सर्वदा स्वधर्म साधक, आत्मिक शान्ति के लिए विधर्म बाधक...(6)

यदि यह कर न सको तो वह करो

(तर्ज - दुःख से घबराओ... (2) वह शक्ति हमें ....)

त्याग तपस्या यदि कर न सको तो, ईर्ष्या द्वेष भी मत करना।
ईर्ष्या द्वेष यदि नहीं करते तो, यह ही बड़ा तप ग्रंथ कहता।। (टेक)
पूजा पाठ यदि कर न सको तो, वैर-विरोध नहीं करना,
शान्ति समता से यदि रहते तो, यह ही बड़ा धर्म श्रुत कहता।। (1)
पर्व तीर्थयात्रा यदि न कर सको तो, शोषण भ्रष्टाचार नहीं करना,
सदाचार सन्तोष पालन करो यदि, सबसे बड़ा पुण्यकर्म कहा।। (2)
धर्म ग्रंथ साहित्य यदि पढ़ न सको तो, गुणग्राही तुम सदा बनना,
सत्य अनुभव के मार्ग पे चलके, शान्तिमय जीवन तुम वरना।। (3)
धन त्याग यदि कर न सको तो, तन मन से सेवादान करना,
तन मन से साधु धर्म हैं करते, तुम भाव से न पीछे हटना।। (4)
उपकार यदि तुम कर न सको तो, अपकार भी नहीं करना,
पानी यदि न पिला सको तो, जहर कभी न पिला देना।।(5)
हित मित प्रिय बोल न सको तो, मौनव्रत धारी सदा बनना,
वचन पालन कर न सको तो, झूठा वचन कभी न देना।। (6)
विश्व समाज सुधार न सको तो, स्वयं का सुधार तुम करना,
स्वयं का सुधार करके तुम ही !, विश्व सुधार हिस्सा बनना।। (7)
आत्महित सहित परहित करना, पहले स्वयं को सही बनाना,

जो दीपक स्वयं प्रज्ज्वलित होता, अन्य प्रकाशित स्वयं ही होता।।(8)
तीर्थंकर बुद्ध महापुरुष आदि, पहले पवित्र स्वयं बनते,
उनके निमित्त विश्व पवित्र होता, 'कनकनन्दी' वही मार्ग चले।।(9)

सुभाव से जीवन निर्माण एवं निर्वाण

(तर्ज - चौपाई....)

(जीव है जिनवर सम, जिनवर है जीव समान।
एक है भूत अवस्था, दूजी भावी। (आगामी) जान।।) (दोहा)

बीज में वृक्ष होता सुप्त-गुप्त, चतुष्टय प्राप्त से होता वृक्ष।
द्रव्य क्षेत्र काल भाव सु जान, चतुष्टय से वृक्ष होता महान्।। (1)
तथाहि जीव में जिन है सुप्त, चतुष्टय प्राप्त होता प्रगट।
आध्यात्मिक क्रमविकास के द्वारा, होते आत्मगुण प्रगट सारा।। (2)
चतुष्टय में भाव प्रधान जान, बीज की शक्ति यथा है जान।
पृथ्वी जल वायु बाह्य कारण, बीज की शक्ति अन्तरंग कारण।। (3)
भाव से भाग्य भावी निर्माण, जीवन निर्माण व निर्वाण।
भाव करना स्व-आत्म आधीन, बाह्य कारण पर द्रव्य आधीन।। (4)
इसलिये सुभाव करो सुजान, जिससे सहज हो विकासमान।
कभी भी कुभाव न करो सुजान, जिससे अवरूद्ध हो विकासमान।। (5)
क्रोध मान माया लोभ को त्याग, जिससे बनेगा उत्तम भाग्य।
पुरुषार्थ करो सुभाग्य सहित, जिससे होगा आत्मा का हित।।(6)
आत्म-विकास ही श्रेष्ठ विकास, जिससे मिले अनन्त सुखवास।
इसे ही कहते निज अवस्था, जिन अवस्था ही निज अवस्था।। (7)
'कनकनन्दी' सदा प्रयासरत, अन्य प्रयास तो आनुसंगिक।
प्रत्येक जीव करे आत्मप्रयास, जिससे मिलेगा मोक्ष निवास।। (8)

प्रकरण- 4

(सर्वोदयी शिक्षा एवं संकीर्ण शिक्षा)

सबसे शिक्षा लो... महान् बनो!

(रागः दुनियाँ में रहना है तो...)

शिक्षा लो भाई शिक्षा लो... हर क्षेत्र से शिक्षा लो।
पढ़ना सुनना तब ही लाभ... अन्यथा जीवन गँवाते जाओ।।... (टेक)...
इतिहास अभी तो भूत हो गया... उससे हमें क्या लाभ होगा।
उसी से शिक्षा ले स्वयं सुधरे... ऐसा पाठ हमने पाया।।... (1)
स्वर्गीय महापुरुष जो हो गये... वे हमारा क्या कर पायेंगे।
उनके आदर्श पर हम सब चलें... यह उपकार हम पायेंगे।।... (2)
अरिहन्त सिद्ध जो हो गये... वे प्रभु वीतरागी हो गये।
उनसे हमारा यह लाभ होगा... उनके समान हम भी होंगे।।... (3)
नरकगामी जो पापी हुए... वे हमारी क्या क्षति करेंगे।
यदि उनसे भी शिक्षा लेंगे... पाप से हम बच जायेंगे।।... (4)
धर्मी हो या पापी जो हो... सबसे हम शिक्षा लेंगे।
इसी में सब गर्भित होता... पुराण इतिहास जो पढ़ेंगे/(जानेंगे)।।... (5)
तीर्थक्षेत्र या मन्दिर जाओ... निर्जीव क्षेत्र से हम क्या पायें?
वहाँ का आदर्श हम पालेंगे... हमारा जीवन आदर्श होय।।... (6)
पुस्तकीय ज्ञान जो होय... तोता के जैसे रटन्त होय।
उस से कुछ भी लाभ न होय... गधा जैसे है चन्दन ढोय।।... (7)
पुस्तकीय ज्ञान नक्शा समान... नक्शा हमें न कहाँ ले जाये।
निर्देश अनुसार जो रास्ता चले... वह ही लक्ष्य को निश्चय पाये।।... (8)

सबसे पढ़ो सबसे सीखो... सज्जन दुर्जन जो कोई होय।
पशु-पक्षी या कीट पतंग... लौकिक गुरु या आध्यात्म होय।।... (9)
महापुरुष जो कोई होते... धार्मिक वैज्ञानिक या कवि होय।
'कनकनन्दी' भी सबसे सीखे... सबकी भावना ऐसी ही होय।।... (10)

शिक्षा की गाथा-व्यथा-वृथा-आत्मा

(तर्ज- 1. मेरे मन की अंध तमस्... 2. है यही समय की पुकार...)

सुनो हो बच्चों! सुनो सुनो हो बच्चों...2
मैं गाता हूँ शिक्षा की गाथा, मैं गाता हूँ शिक्षा की व्यथा।
मैं गाता हूँ शिक्षा की वृथा, मैं गाता हूँ शिक्षा की आत्मा।। सुनो...
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल रटना नहीं है शिक्षा,
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल उत्तीर्ण नहीं है शिक्षा,
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल लिखना नहीं है शिक्षा,
अक्षर कला अंक विज्ञान केवल पढ़ाना नहीं है शिक्षा।। सुनो...
धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल रटना नहीं है शिक्षा,
धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल उत्तीर्ण नहीं है शिक्षा,
धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल लिखना नहीं है शिक्षा,
धार्मिक ग्रंथ पूजा-पाठ भी केवल पढ़ाना नहीं है शिक्षा।। सुनो...
इनकी उपयोगिता में सुशिक्षा की रहती है आत्मा,
सुशिक्षा के प्रचार में शिक्षा की है बोलती गाथा,
शिक्षा के अनुपयोग में शिक्षा की है चलती व्यथा
शिक्षा के दुरुपयोग से समस्त शिक्षा होती वृथा।। सुनो...
संस्कार संस्कृति सदाचार है सभी शिक्षा की होती आत्मा,
इनके बिना सभी शिक्षा है देह की स्थिति बिना आत्मा।। सुनो...

इनके बिना रावण कंस स्व-पर नाशक साक्षर राक्षस
इनसे युक्त तीर्थेश बुद्ध प्रहलाद कबीर पवित्र अन्तस।। सुनो...
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो आचरण करो सदा सदाचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो कभी न करो भ्रष्टाचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो कभी न करो मिथ्याचार,
तुम भी बच्चों पढ़ो भी गुनो, सदा ही करो शिष्टाचार।। सुनो...
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, तुम भी बनो देश रक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, तुम भी बनो धर्म रक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, तुम भी बनो आत्म रक्षक,
तुम भी बनो सभ्य शिक्षित, कनकनंदी के प्रिय बालक।। सुनो...

शिक्षक की आत्मकथा

(प्राचीन आध्यात्मिक शिक्षक से वर्तमान के लौकिक शिक्षक तक)

तर्ज :- (1. भक्ति बेकरार है... 2. भोली मेरी माँ... 3. पूछ मेरा गाँव रे...)

शिक्षक मेरा नाम है, शिक्षा प्रदान काम है,
इसलिये तो गुरु रूप में, सर्वोच्च स्थान है।। (टेक)
ब्रह्मा विष्णु महेश रूप में, मुझे देते सन्मान हैं...2
साक्षात्परमब्रह्मरूप में, सर्वोच्च मेरा मान है...2
शिष्यों का मैं निर्माण कर्त्ता, इसलिये मैं ब्रह्मा हूँ...2
ज्ञानामृत से पोषण करूँ, इसलिये मैं विष्णु हूँ...2 शिक्षक... (1)
अज्ञान नाशक होने से, मुझको कहते महेश हैं...2
निश्चय से मैं शुद्धात्मा, परमब्रह्म स्वरूप हूँ...2
लौकिक से आध्यात्मिक तक, मेरे अनेक रूप हैं...2
तीर्थंकर से मास्टर तक, मेरे विभिन्न रूप हैं...2 शिक्षक... (2)

तीर्थंकर हैं परम गुरु जो, विश्वविज्ञान के ज्ञाता हैं...2
इसके अनन्तर गणधर स्वामी, चार ज्ञान के ज्ञाता हैं...2
आचार्य उपाध्याय ऋषिवर, आध्यातम के ज्ञाता है...2
स्वपर विश्व कल्याण के लिये, सम्यक् ज्ञान प्रदाता हैं...2 शिक्षक...(3)
पाठशाला से गुरुकुल व , विश्वविद्यालय के गुरु हैं...2
नालन्दा तक्षशीला से लेकर, ऑक्सफोर्ड के गुरु हैं...2
मात-पिता व गुणी गणजन, जो भी देते हैं शिक्षण...2
वे भी मेरे विभिन्न रूप, प्रकृति के भी हरकण...2 शिक्षक... (4)
जिससे शिक्षा मिले प्राणी को, वे भी हैं शिक्षक...2
शिक्षा लेने की योग्यता जिसमें, उसके लिये हैं सब शिक्षक...2
दया, वात्सल्य, परोपकार से, मैं देता हूँ ज्ञानदान...2
ज्ञानदान के कारण से मुझे, माना जाता सबसे महान्...2 शिक्षक... (5)
आहार, औषधि अभय का दाता, भी नहीं होता महान् गुरु...2
धन सम्पत्ति वसतिका दाता, भी नहीं होता समान गुरु...2
अन्नदानादि भी महानदाता, जिससे होता है पुण्य महान्...2
ज्ञानदान तो निरवद्यदान, जिससे मिलता केवल ज्ञान...2 शिक्षक... (6)
इसलिये तो पंचगुरु में, अरिहंतो को प्रथम नमन...2
दिव्यध्वनि द्वारा ज्ञानप्रदाता, अतएव वे गुरु महान्...2
विकृत हुआ अभी मेरा रूप, लौकिक से धार्मिक तक...2
स्वार्थपरता संकीर्णता, भौतिकवादी हुये शिक्षक तक...2 शिक्षक... (7)
''ज्ञान बाँटो धन लूटो'', अभी का है सूत्र महान्...2
ज्ञानदान न अभी होता है, जो करता वह पिछड़ा जान...2
धन के लिये धन के द्वारा, धन से ही ज्ञान होता महान्...2
इसलिये ज्ञानदाता गुरुजन, उपेक्षित आज राष्ट्र में जान...2 शिक्षक...(8)
लौकिक शिक्षा शिक्षक शिक्षार्थी, भौतिकता में डूबे आचूल...2
धार्मिकता में भी यह प्रवृत्ति, हो रही है अनेक स्थल...2
अतएव आज विश्वगुरुदेश, बन गया भ्रष्टों का देश...2

आध्यात्मिकता से तो हुये दूर, नैतिकता में भी पिछड़ा देश..2 शिक्षक..(9)
शिक्षा क्षेत्र में भी आज भ्रष्टाचार, फैशन व्यसन में है मशहूर...2
जिसके कारण भारत में है, आज शिक्षा का क्षेत्र कमजोर...2
इसलिये आज ''कनकनन्दी'' के, माध्यम से मैं करूँ आह्वान...2
अपनी गरिमा को जागृत करके, करो देश को पुनः महान्...2 शिक्षक...(10)

विद्यार्थी की आत्मकथा

(आध्यात्मिक विद्यार्थी से लौकिक विद्यार्थी तक)

तर्ज :- (1. भक्ति बेकरार है... 2. भोली मेरी माँ...)

विद्यार्थी मेरा नाम है, विद्या ग्रहण काम है
अनेक विध गुरुओं के द्वारा ग्रहण करूँ मैं ज्ञान है।।...
जब तक मैं सवर्ज्ञ न बनूँ, तब तक मैं शिष्य हूँ।
चार ज्ञान के धारी गणधर, श्री केवली का शिष्य हूँ।।
सर्वोच्च गणधर से लेकर, शिष्य प्राथमिक स्तर के।
अनेक विध है मेरा रूप, विभिन्न योग्यता स्तर के।। विद्यार्थी...
स्वयं में निहित शक्तियों को, जागृत करना काम है।
इसके निमित्त शिक्षार्थी बनना, मेरा सर्वोच्च काम है।।
सर्वोच्च गुरु केवली होते हैं, प्राथमिक गुरु लौकिक।
अनेक गुरु मेरे होते हैं, लोक से लेकर अलोक।। विद्यार्थी...
जल मृदा वायु रश्मि के निमित्त, यथा बीज बने वृक्ष हैं।
विभिन्न गुरुओं की शिक्षा द्वारा, मेरा भी होता विकास है।।
जिज्ञासा विनय पुरुषार्थ व एकता मेरे गुण हैं।
जिसके द्वारा विद्या ग्रहण, करता हूँ निशदिन मैं।। विद्यार्थी...
''विनय ददाति विद्या'' यह, प्रथम मेरा काम है।
''विद्या ददाति विनयं'' यह, मेरा द्वितीय काम है।।
एकाग्रता पूर्वक पुरुषार्थ करना, तृतीयतः मम काम है।

प्राप्त ज्ञान का सदुपयोग, यथार्थ शिक्षा का मान है।। विद्यार्थी...
इसे ही कहते मोक्षमार्ग या **"सा विद्या या विमुक्तये"**।
ज्ञानामृत भी इसे ही कहते, कारण है सर्वोदये।।
आत्मविश्वास व आचरण बिना, शिक्षा न होती यथार्थ है
तोता समान रटन्त विद्या ज्ञान, नहीं होता यथार्थ है।। विद्यार्थी...
वर्तमान मेरा विकृत स्वरूप, सर्वत्र हुआ है कुख्यात।
उपरोक्त मेरा समस्त सुगुण आज हुआ है विकृत।
फैशन व्यसन गुण्डागर्दी, आज बन गये मेरे गुण।
प्रमाद, आलस्य, भ्रष्टाचार, पाप बन गये मेरे प्राण।। विद्यार्थी...
इसलिये आज महान् व्यक्तित्व, नहीं बन रहा है मेरा।
इसलिये विश्वगुरु वाला देश, भ्रष्ट बना है बेचारा।।
इसलिए गुरु **"कनकनन्दी"**, जगा रहे है हमें सतत।
उठो! जागो! प्राप्त करो! हे लक्ष्य ऐसा ही यत्न सतत।। विद्यार्थी...

बचपन बचाओ विश्वगुरु बनाओ!

(रागः बड़ा नटखट है रे कृष्ण कन्हैया...)

बड़ा नटखट है रे बचपन भैया, का करे पिता व मैयाऽऽ हो
मन का राजा है हठ का साहब, ऐसा है मेरा शाहनशाहऽऽ हो... स्थायी...

मुट्ठी में बान्धे विश्व का प्यारा, हँसी में झरे अमृतधारा
तोतली वाणी, बोले कोयल, ऐसा है मेरा बाल गोपालऽऽ हो... बड़ा...(1)

निश्छल निर्विकार चिन्ता मुक्त वाला, खेल ही खेल में शिक्षा पाने वाला
पावन हृदय है कोमल वाला, मीठी निन्दिया में विश्राम वालाऽऽ हो... बड़ा...(2)

मानव जीवन का पवित्र वाला, अनक्षरी से सीखने वाला
डिग्री शिक्षा से रहित वाला, तथापि सबसे आदर्श वालाऽऽ हो... बड़ा...(3)

हाय रे दुर्भाग्य आधुनिक वाला, पढ़ाई पहाड़ से दबने वाला

खेल न नींद नटखट वाला, पिंजरे के तोते सा रटने वालाऽऽ हो... हाय रे...(4)

पुनः हे! जन्म लो कृष्ण कन्हैया, इण्डिया को सिखाओ बाल की लीला
बाल गोपाल को करो बन्धन मुक्त, पढ़ाई की बेड़ी से हो जाय मुक्तऽऽ हाय रे...(5)

दूध पिलाओ फल खिलाओ, खेल खेलाओ गाय चराओ
प्रकृति बचाओ अनीति नशाओ, आत्मज्ञान से विश्वगुरु बनाओऽऽ...बड़ा...(6)

हे बालक मेरा आह्वान सुनो, 'कनकनन्दी' की भावना गुनो
आत्मशक्ति को जागृत करो, आत्म से परमात्म स्वरूप भजोऽऽ... बड़ा...(7)

हे बालक तुम सुनहू सुनीति, बोलन पढ़न चलन की रीति
तुम तो हो विशाल वृक्ष के बीज, प्रगट करो तुम आतम वीर्यऽऽ... बड़ा...(8)

शिक्षा विकासकारी बने तो कैसे?

शिक्षा एक विद्या है जिससे मनुष्य का शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक रूप व्यक्ति परक विकास के साथ-साथ पारिवारिक, सामाजिक, राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय, वैश्विक रूप सामूहिक विकास हो। संक्षिप्ततः कहे तो सर्वतोमुखी, सार्वभौम विकास जिससे होता है उसे शिक्षा कहते हैं। दृश्यमान प्राणी जगत् में मनुष्य ही एक जीव है जो शिक्षा के लिए अन्य जीवों से अधिक जागरुक है। इसलिए तो मनुष्य अन्य अनन्तों जीव से श्रेष्ठ है, वरिष्ठ है, समुन्नत है, सम्पन्न है। शिक्षा के बिना नव्यमानव भी वन मानव के समान है। इसलिए "जगो! उठो!! प्राप्त करो!!!" सन्दर्भ में तो शिक्षा की चर्चा विशेष रूप से आपेक्षित है।

शिक्षा का श्री गणेश गर्भ से ही प्रारंभ हो जाता है। माता के आहार विहार-विचार से गर्भस्थ शिशु संस्कारित होता रहता है। जन्म के अनन्तर माता के स्तनपान से लेकर लोरी सुनना, माता-पितादि के प्यार, व्यवहार, चर्चा, विचारादि से शिशु संस्कारित होता जाता है। इसलिए तो परिवार प्रथम विद्यालय एवं माता प्रथम गुरु है। परन्तु अनेक माता गर्भधान प्रक्रिया से लेकर गर्भावस्था, शिशु के

पालन-पोषण, संस्कार से अनभिज्ञ, प्रमादी के साथ-साथ कुछ विपरीत क्रियाओं से भी युक्त होती है। जब बाल्यावस्था रूपी नींव ही गलत हो तो जीवन रूपी महल कैसे सुन्दर एवं टिकाऊ हो सकता है। गर्भवती मातायें अश्लील सिनेमा, नाटक, टी.वी, सीरियल, ब्लू फिल्म देखती हैं, गाना सुनती हैं, गाना गाती हैं, अश्लील चर्चा-चर्या करती हैं, नशीली वस्तु, अभक्ष्य वस्तु भक्षण करती हैं दूसरों से अशालीन, अनम्र व्यवहार करती हैं तो बच्चों को क्या अच्छे संस्कार देंगी।

अविकसित 2 या 2.1/2 वर्ष के नन्हे मुन्ने दूधमुहों बच्चों को पढ़ाई के नाम पर विद्यालय भेज देते हैं। यह समय बच्चों के लिए खेलने, खाने, सोने, हँसने, रोने, शरारत करने, किलकारियाँ भरने का एवं अनक्षरी शिक्षा/संस्कार प्राप्त करने का होता है। इससे उनके शरीर इन्द्रियाँ एवं मन का विकास होता है। इस अवस्था में स्कूल भेजना मानो जेल भेजना है एवं शरीर तथा मानसिक विकास को रोक देना/कुचल देना है। अज्ञानता पिछडापन, देखादेखी या आधुनिकता के दिखावा के कारण अभिभावक बच्चो को कम आयु में विद्यालय में भेजकर उनकी प्रगति/प्रसन्नता बाल क्रीडा को रोककर उनके ऊपर बहुत बड़ा अत्याचार करते हैं। बच्चे विद्यालय नहीं जाने पर अभिभावकों की डाँट-फटकार प्रताडना मिलती है तो उधर विद्यालय में शिक्षकों के कठोर व्यवहार से खिलने के पहले मासुम कलियाँ मुरझा जाती है। बच्चों को 4-5 वर्ष के बाद ही विद्यालय भेजना चाहिये। विद्यालय में बच्चों को पुस्तकीय ज्ञान ही प्रदान नहीं किया जावे उसके साथ-साथ उन्हें, प्रेम, ममता, अपनापन, सुरक्षा सुविधा भी देना अनिवार्य है। जिस प्रकार केवल रोटी से जीवनयापन नहीं होता है। उसके साथ-साथ दूध, दाल, सब्जी, फल, घी, नमक, जल, प्राणवायु आदि चाहिए उसी ही प्रकार पुस्तक ज्ञान के साथ व्यवहार ज्ञान, सदाचार, स्वास्थ्य ज्ञान, नैतिक ज्ञान, प्रेम-अपनापन भी मिलना चाहिए। बच्चों को अच्छे कार्य करने पर उन्हें पुरस्कृत करना चाहिए, उनकी प्रशंसा करनी चाहिए, खराब कार्य करने पर सुधार करने के लिए प्रेम से समझाना चाहिए। प्रेम से नहीं समझने पर अन्तरंग में प्रेम भाव रखते हुए बहिरंग में अनुशासन करना चाहिये, परन्तु हर समय डाँट-

फटकार नहीं करना चाहिए।

विद्यार्थियों का कर्त्तव्य है कि जब तक विषय-वस्तु का ज्ञान नहीं हो जाता है तब तक समझने का पुरुषार्थ करे। बिना समझे रटे नहीं। गणितादि के सूत्र समझने के बाद याद करे/रटे। बिना समझे रटने का अर्थ है टेप के जैसे केवल टेप करना है। जो विषय समझ में नहीं आवे उसके बारे में शिक्षकों को, अच्छे विद्यार्थियों को या अन्य ज्ञानी को पूछकर समझ लें। विषयों को पूर्ण आत्मसात् करने के लिए एवं उससे और भी शिक्षायें, उपलब्धियाँ और प्रतिफल प्राप्त करने के लिए सांगोपांग समझे। केवल समझने से संपूर्ण लाभ प्राप्त नहीं हो जाते हैं। उस विषय के गुण-दोष, अच्छाईयों-कमियों के साथ-साथ उसका जीवनोपयोगी, मानवोपयोगी पहलुओं के बारे में भी अध्ययन करना चाहिए। दोष या कमी होने पर उसे दूर करना चाहिए। दोष को स्वीकार नहीं करना चाहिए। सर्वज्ञ, निर्दोष परमात्मा को छोड़कर अन्य से प्रतिपादित, शोधित, बोधित, लिखित विषय में दोष होना स्वाभाविक है। इसलिए पुस्तक में जो कुछ लिखा हुआ है उसे सत्य नहीं मान लेना चाहिए। द्वेष से, दूसरों को नीचा दिखाने के लिए स्वयं की कमी के कारण भी त्रुटि होना स्वाभाविक है। कुछ उदाहरण प्रस्तुत करके विषय को स्पष्टीकरण कर रहा हूँ। यथा-वास्कोडिगामा के पहले कोलम्बस के द्वारा खोज की गई भूभाग को भारत मान लिया गया था। जो कि भारत न होकर रेड इण्डिया था। महावीर भगवान् को जैन धर्म का प्रचारक मानना या लिखना। इस ही कालखण्ड में उनके पहले और भी 23 तीर्थंकर हो गये हैं। भारतीय आर्यों को विदेश में आना मानना भी भ्रममूलक है। क्योंकि भारत का बहुत ही प्राचीन नाम आर्यावर्त था। क्योंकि भारत में रहने वाले पुरुषों को आर्य कहा जाता था तथा महिलाओं को आर्या कहा जाता था। किसी भी प्राचीन साहित्य, शिलालेख आदि साक्ष्य से यह नहीं सिद्ध होता है कि पहले भारत में सभी म्लेच्छ ही थे और विदेश से आर्य आये हैं। इसका विशेष वर्णन मैंने मेरी पुस्तक "भारतीय आर्य" में लिखा है। अकबर को महान् मानना भी एक ऐतिहासिक भूल है। इस देश का भारत नामकरण दुष्यन्त एवं शकुन्तला के पुत्र

भरत से हुआ है, ऐसा मानना भी आधारहीन है। क्योंकि किसी भी प्राचीन जैन, हिन्दू या बौद्ध साहित्य एवं शिलालेख में यह प्रमाण उपलब्ध नहीं है। परन्तु इसके विपरीत जैन, हिन्दू आदि के अनेक प्राचीन साहित्य में स्पष्ट रूप से प्रतिपादन किया गया है कि ऋषभदेव के पुत्र चक्रवर्ती भरत के नाम पर इस देश का नाम भारत पड़ा है। इसका भी विशेष वर्णन मैंने मेरी पुस्तक ''ऋषभ पुत्र भरत में भारत'' नाम में किया है। इसी ही प्रकार अभी जोर-शोर से प्रचार-प्रसार हो रहा है कि भारत धर्म निरपेक्ष राष्ट्र है। भारत की क्या रूस, चीन, आदि साम्यवादी, समाजवादी राष्ट्र भी धर्म निरपेक्ष नहीं हो सकते है। क्योंकि वस्तु का स्वभाव ही धर्म है। व्यवहारिक रूप से सत्य, न्याय, भ्रष्टाचार से रहित, नैतिक आचार, अहिंसा, चोरी नहीं करना, ब्रह्मचर्य धारण करना अपरिग्रह अर्थात् अति संग्रह नहीं करना, सम्पति का समबंटन करना आदि धर्म है। क्या कोई भी राष्ट्र उपर्युक्त गुणों से रहित होना चाहेगा? कदापि नहीं। उपर्युक्त गुणों के लिये ही तो संविधान का निर्माण होता है। उसकी सुरक्षा के लिए न्यायालय, पुलिस विभाग आदि की व्यवस्था की जाती है। फिर कोई भी राष्ट्र धर्म निरपेक्ष कैसे हो सकता है? हिंसा, आक्रमण, बलात्कार, धोखाधडी, पूंजी का केन्द्रीयंकरण (परिग्रह) अनैतिक-यौन-सम्बन्ध आदि कार्य कोई राष्ट्र चाहता है? यदि कोई राष्ट्र ऐसा व्यवहार करेगा तो उस राष्ट्र की उन्नति हो सकती है? कदापि नहीं। इसलिए कोई भी राष्ट्र धर्म निरपेक्ष नहीं हो सकता है। राष्ट्र क्या, कोई भी व्यक्ति भी धर्म निरपेक्ष नहीं हो सकता हैं। हाँ राष्ट्र को यहाँ तक कि व्यक्ति को भी सम्प्रदाय निरपेक्ष, पंथ निरपेक्ष, जाति निरपेक्ष, भाषा निरपेक्ष होना चाहिए। निरपेक्ष का अर्थ है उसकी कट्टरता, उसकी संकीर्णता, अहंमन्यता से रहित, उदारता, व्यापकता, सार्वभौमिकता है।

शिक्षा का उद्देश्य शिक्षित होना, सभ्य बनना, महान् एवं मुक्त बनना है। केवल साक्षरता शिक्षा नहीं है। अथवा शिक्षा का फल नौकरी करना नहीं है। वर्तमान में अधिकांश व्यक्ति साक्षरता को ही शिक्षा मान लेते है। शिक्षा प्राप्त करके नौकर बनना अपना अहोभाग्य मानते हैं। इसी उद्देश्य को केन्द्र करके

शिक्षा तंत्र वर्तमान परिचालित है। इसलिए शिक्षा में जो गुणवत्ता, व्यापकता होनी चाहिए वह नहीं है। केवल शिक्षा का उद्देश्य पेट भरना है तो इससे अच्छे हैं पशु-पक्षी। क्योंकि पुश-पक्षी बिना साक्षर बने अपना पेट भर लेते हैं। अभी साक्षर नवयुवक निकम्मे होकर सरकार से भीख माँगते हैं कि हमें नौकरी दो। क्या इससे अच्छा नहीं होता कि वे अपने बलबूते, स्वावलम्बन, अपनी बुद्धि और क्षमता से जीवनयापन के लिए कोई एक न्यायोचित कार्य करे? क्या सरकारी नौकरी करना महानता है? क्या न्यायोचित कर्त्तव्य से जीवनयापन करना हीनता, दीनता है? जो एकाध अक्षर पढ लेते हैं वे कृषि आदि कर्त्तव्य को तो हेय दृष्टि से देखते हैं और दूसरों की नौकरी करना महान् मान लेते हैं। नीतिकार ने कहा है- ''पराधीनता सपनहुः सुख नहीं'' अर्थात् पराधीनता (नौकरी) करना स्वप्न में भी सुखकारी नहीं है। भारतीय परम्परा रही है ''सा विद्या या विमुक्तये'' अर्थात् वह विद्या, विद्या है जिससे हमें शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक स्वतंत्रता मिलती है। अभी तो विद्या का उद्देश्य ''सा विद्या या भुक्तये'' अर्थात् वह विद्या है जिससे भिक्षा मिलती है, नौकरी मिलती है, केवल पेट और पेटी भरता हो। अधिकांश लडकियाँ भी येन-केन प्रकार के कुछ आक्षरिक शिक्षा इसलिए प्राप्त करती है कि आधुनिक युग में शिक्षा के बिना सरलता से शादी नहीं हो पाती है और शिक्षा प्राप्त करने से शादी हो जाती है। क्या यह ही शिक्षा का उद्देश्य है? कुछ निश्चित लड़कियाँ तो गृहकार्य, खाना बनाना, माता पिता की सहायता करना, गृहपालित पशुओं की सेवा करना, माता पिता की सेवा करना, धार्मिक कार्य करना या उसमें सहभागी बनना Out of date मानती है। केवल फैशन करना, स्वच्छन्द होकर क्लब, होटल, सिनेमा, पार्क, बाजार आदि में घूमना, हुल्लड, तुच्छ आचार-विचार करना आदि को up to date मानती है। उन्हें Out of date और up to date का अर्थ भी नहीं मालूम होगा। ऐसी लडकियाँ तो शारीरिक परिश्रम करने को पाप और हेय मानती है। कुछ आधुनिक शिक्षित भारतीय नारियों ने समस्त मर्यादाओं को तोड डाला है, अर्धनग्न रहना, घूमना, फोटो खिचवाना, मॉडल बनना, सिनेमा, दूरदर्शन में अश्लील कर्त्तव्य करना

उनका काम हो गया है। ऐसी लडकियाँ विश्व सुन्दरी बनना चाहती है परन्तु सीता, चन्दबाला, ब्राह्मी, सुन्दरी बनना नहीं चाहती है। उपर्युक्त विषयों का वर्णन अन्यत्र विस्तार से किया है इसलिए यहाँ वर्णन करना उचित नहीं मानता हूँ।

भारत वर्ष में गुरु को ब्रह्मा, विष्णु, महेश आदि माना जाता है। ब्रह्मा इसलिए कहा जाता है क्योंकि जिस प्रकार ब्रह्मा लोकोक्ति के अनुसार निर्माण करता है उसी ही प्रकार गुरु शिष्य का निर्माण करता है। शिष्य का पालन पोषण गुरु करते हैं इसलिए गुरु विष्णु है। शिष्य के अज्ञान रूपी अंधकार को, अयोग्यता को गुरु नाश करता है इसलिए गुरु रुद्र है। गुरु को तो साक्षात् परम ब्रह्म माना गया है परन्तु वर्तमान के अधिकांश गुरु उन पवित्र उत्तरदायित्व से रहित पाये जाते हैं। विद्यालय में समय पर उपस्थित नहीं होते हैं। पढ़ाना उनका परम कर्त्तव्य है, ऐसा मानकर वे बच्चों को पढाते नहीं हैं। विद्यार्थी के द्वारा कुछ प्रश्न करने पर उसको अनसुनी कर देते हैं या विद्यार्थी को डाँट कर बैठा देते हैं। इसका कारण स्वयं की कमी है। अधिकांश विषयों का परिज्ञान शिक्षकों को ही नहीं होता है। इसलिये अपनी कमी प्रकट नहीं हो इसलिये बच्चों को उत्तर देना नहीं चाहते हैं। स्कूल में भी व्यवस्थित इसलिये नहीं पढ़ाते हैं, क्योंकि स्कूल में व्यवस्थित पढ़ाने पर उनका मूल व्यवसाय ट्यूशन नहीं चलेगा। अधिकांश शिक्षकों के लिए स्कूल में पढ़ाना गौण व्यवसाय है और ट्यूशन पढ़ाना मुख्य व्यवसाय है। जो विद्यार्थी उनके पास ट्यूशन पढ़ते हैं उन्हें अधिक नम्बर भी देते हैं अयोग्य विद्यार्थियों को भी उत्तीर्ण कर देते हैं। ट्यूशन पढ़ने से विद्यार्थी स्कूल की पढ़ाई तथा गृहकार्य व्यवस्थित नहीं कर पाते हैं और ट्यूशन की पढ़ाई एवं गृहकार्य भी नहीं कर पाते क्योंकि उसे दोनों जगह में जाने आने में, पढ़ने में अधिक समय देना पडता है। इससे उसको एक मानसिक तनाव हो जाता है, हीन भावना उत्पन्न हो जाती है। इसके कारण उनके शारीरिक विकास के साथ-2 मानसिक विकास में भी बाधा पहुँचती है। इसके फलस्वरूप ट्यूशन पढ़ने वालों की बुद्धि-लब्धि कुछ कम हो जाती है। अधिकांश शिक्षक भी रिश्वत देकर उत्तीर्ण हो जाते हैं और रिश्वत लेकर के शिक्षकों की नौकरी प्राप्त कर लेते हैं। शिक्षक की

नौकरी मिलने पर और भी उनकी योग्यता घट जाती है क्योंकि वे सोचते हैं कि हमें तो और कोई परीक्षा नहीं देनी है इसलिये अध्ययन की क्या आवश्यकता है। इसलिये वे ज्ञान के क्षेत्र में और भी पीछे हो जाते हैं। वर्तमान वैज्ञानिक अनुसंधान युग है इसलिये नित्य नये-नये अनुसंधान होते जाते हैं उनका ज्ञान जिस शिक्षकों को नहीं होता है वे उस ज्ञान को विद्यार्थियों को ठीक से नहीं पढ़ा सकते हैं। इसलिये शिक्षकों को सततः जीवन भर विद्यार्थी बने रहना चाहिये। जो विद्यार्थी रहेगा वही योग्य शिक्षक बन सकता है। यह तो हुआ बौद्धिक क्षमता की कमियाँ। कुछ नैतिक तथा चारित्रिक कमियों के बारे में भी वर्णन करना प्रासंगिक है।

अनेक शिक्षक कर्त्तव्य-निष्ठ, समयानुवर्ती व समयानुबद्ध नहीं होने के साथ-साथ नैतिक एवं चारित्रिक दृष्टि से भी गये गुजरे रहते हैं। कुछ शिक्षक तो बीडी, सिगरेट, तम्बाकु का सेवन विद्यार्थियों के सामने ही करते हैं। कुछ तो विद्यार्थियों के साथ ही मंगवाते हैं। कुछ शिक्षक तो एक अशिक्षित गंवार व्यक्ति से भी भ्रष्ट रहते हैं। शराब पीकर भी स्कूल में आते हैं। कुछ तो स्वशिष्या के साथ ही बलात्कार कर लेते हैं। कुछ शिक्षक स्वयं भ्रष्ट रहते हुए भी कुछ विद्यार्थियों से बाल स्वभाव से कुछ शरारत हो जाने से उन्हें निर्मम रूप से दण्ड देते हैं। कुछ रिश्वत लेकर परीक्षा में नम्बर बढ़ा देते हैं और उन्हें उत्तीर्ण कर देते हैं। कुछ योग्य विद्यार्थियों को शिक्षक द्वेष से कम नम्बर देते हैं और अनुत्तीर्ण भी कर देते है। कुछ विश्वविद्यालयों में जालसाजी सर्टिफिकेट लाखों रुपया रिश्वत लेकर विद्यार्थियों को दे दिया जाता है। इसलिये तो ऐसे विद्यार्थी आगे जाकर ऑपरेशन करते समय कैंची पेट में ही छोडकर सिलाई कर देते है। अथवा लाखों रुपयों का निर्माण कार्य जो इंजीनियर बन कर करता है, थोड़ी हवा या बरसात में ढह जाता है। ऐसे अनेक अनर्थ रोज होते रहते हैं।

छोटे-छोटे बच्चों के लिये भी अधिक कोर्स की किताब पढ़ाना मानों उनका मानसिक शोषण करना है। जिस प्रकार अधिक भोजन करने पर पाचन नहीं होता है उसी ही प्रकार क्षमता से अधिक पढ़ने पर मानसिक रोग हो जाता हैं। छोटे-छोटे बच्चे 4-4,5-5 किलो के स्कूल बेग ढोते हुये जाते हैं जैसे मानों गधे

बोझ ढो रहे हो। कुछ अर्थलोलुप व्यक्ति अभी प्राइवेट स्कूल के नाम पर बच्चों से अधिक रुपये शोषण करते हैं। प्राइवेट स्कूल में भी कोई विशेष गुणवत्ता नहीं है। केवल अधिक स्कूल फीस, टिपटॉप ड्रेस, बाह्य कठोर अनुशासन से दूसरों को ठग करके अपना धंधा दिनो-दिन बढ़ा रहे है। कुछ अंग्रेजी माध्यम स्कूलों में बच्चे परस्पर मातृभाषा गलती से बोल देते हैं तो उन्हें कठोर दण्ड दिया जाता है। क्या यह शिक्षा के नाम पर शोषण, अपमान, परतन्त्रता, दिखावा नहीं है? मेरा खुद का अनुभव है प्राइवेट स्कूल में पढने वाले विद्यार्थियों की बुद्धि-लब्धि सामान्य स्कूलों में पढ़ने वाले विद्यार्थियों से अधिक अच्छी नहीं होती है। संक्षिप्ततः कहे तो महान् उद्देश्य के लिए उत्तम प्रणाली से प्राप्त शिक्षा ही विकासकारी बन सकती है अन्यथा विनाशकारी बनेगी। साक्षरता से अक्षर/अक्षय/मोक्ष/अविनाशी पद को प्राप्त करना ही शिक्षा का अन्तिम महान् उद्देश्य है।

(1) पालने से लेकर कब्र तक ज्ञान प्राप्त करते रहो। (कुरान)

(2) बहुधा देखा गया है कि वास्तविक शिक्षा तभी प्रारंभ होती है जब व्यक्ति विद्यालय या विश्वविद्यालय से निकलते हैं। (सन्त निहालसिंह)

(3) शिक्षा प्राप्त करने के तीन आधारस्तम्भ हैं- अधिक निरीक्षण करना, अधिक अनुभव करना एवं अधिक अध्ययन करना। (केथराल)

(4) शिक्षित व्यक्ति वह आलसी है जो कोरे अध्ययन द्वारा समय का नाश करता है। (बर्नाड शॉ)

(5) जो चीजें हमें विद्यालय एवं विश्वविद्यालय में पढ़ाई जाती है वे ही शिक्षा नहीं है, अपितु वे शिक्षा का साधन मात्र है (इमर्सन)

प्रकरण- 5

नारी की गरिमा एवं विकृतियाँ

नारी पूजनीया बने तो कैसे?

वृक्ष जिस प्रकार जमीन से अलग होकर अधिक समय जीवित नहीं रह सकता उसी ही प्रकार मानव समाज भी मातृ शक्ति से अलग होकर अधिक समय तक समृद्ध नहीं हो सकता। क्योंकि जिस प्रकार वृक्ष के लिये पोषण तत्व एवं स्थिरता के लिए जमीन चाहिए उसी ही प्रकार मानव समाज का जन्म, पोषण, पालने, संस्करण, सम्बर्द्धन मातृ शक्ति से होता है। जमीन यदि उर्वरा नहीं है जल से रहित है तो वृक्ष का पल्लवित, पुष्पित फलित होना संभव नहीं है उसी ही प्रकार मातायें यदि सुसंस्कृत, सुशीला, दयालु परोपकारी, नम्र, व्यवहार-कुशला, धर्मात्मा नहीं होगी तो उनकी सन्तान किस प्रकार महान् बनेगी। इसलिये अति प्राचीन काल में इस भारत में ऋषभदेव ने पुरुष शिक्षा के पहले स्त्री शिक्षा प्रारंभ किया था।

माता के गर्भ से जन्म लेने के पहले सन्तान का पालन पोषण, संवर्द्धन, संस्कार गर्भ के दीर्घ अवधि तक होता है। नाभि के माध्यम से माता से सन्तान भोजन प्राप्त करती है जिस से शिशु का शारीरिक पोषण होता है, माता के आचार, विचार से शिशु प्रभावित होता है और संस्कारित होता है। इससे उसे मानसिक पोषण मिलता है। जन्म के बाद माता बच्चों को स्तनपान के माध्यम से मानो बच्चों को जीवन निरोगता, बुद्धिमता, संस्कार देती है।

बच्चे के जन्म के तीन चार दिन बाद तक दूध पीले रंग का व गाढ़ा होता है, जिसे 'कोलोस्टम' कहते हैं। इसमें विटामिन 'ए' एन्टिबाडीज, लाइसोजाइम, मैक्रोफेज कण, लैफ्टोफेरीन आदि बाद के दूध की अपेक्षा अधिक होते हैं जो नवजात शिशु को अनेक रोगों से बचाते हैं। 'कोलेस्ट्रोम' शिशु के लिए बहुत लाभदायक होता है।

दूध बनाने की मात्रा बच्चे के दूध पीने पर निर्भर करती है। यदि बच्चा भरपूर दूध पीता है, तो दूध और बनता जाता है। जो माँ किसी भी कारण से

बच्चे को स्तनपान नहीं कराती है, उनका दूध स्वतः कम हो जाता है या फिर एकदम बन्द हो जाता है।

माता का दूध शिशु को अनेक रोगों से बचाता है जैसे दस्तरोग, पेचिश, श्वासरोग, सैप्टीसीमिया, मैनिन्जाइटिस कान की बीमारियां एवं एलर्जी संबंधी रोग। कुछ अनुसंधानों से यह साबित हुआ है कि स्तनपान करने वाले बच्चों का मानसिक स्तर तल दुग्धपान करने वाले बच्चों की तुलना में ऊँचा होता है। ऐसे बच्चों व माँ के बीच मानसिक लगाव व प्यार अधिक होता है और ऐसे बच्चों का व्यक्तित्व सन्तुलित रहता है।

प्रसव के तुरन्त बाद (आधा या एक घंटे) से ही स्तनपान शुरू करवा देना चाहिए। शीघ्र स्तनपान से दूध बनने व उतरने में आसानी रहती है, माँ व बच्चे में लगाव बढ़ता है और नवजात शिशु को खून में शुगर की कमी, इन्फेक्शन, पीलिया आदि से बचाया जा सकता है। ऑपरेशन केस में भी माँ को होश में आने तक प्रतीक्षा करनी चाहिए।

स्तनपान कराने का कोई निश्चित समय निर्धारित नहीं किया जा सकता। जब बच्चा रोए तभी दूध पिलाना चाहिए। एक बार में दस पन्द्र मिनिट तक दूध पीने पर बच्चा डेढ़-दो घण्टे तक दूध की माँग नहीं करेगा। पहले चार माह से छह माह तक केवल स्तनपान कराना चाहिए। इसके अलावा अन्य कोई आहार देने की आवश्यकता नहीं है। इस दौरान बोतल या चूसनी की आदत बिल्कुल नहीं डालें।

स्तनपान में गिरावट चिंता का विषय है क्योंकि स्तनपान शिशुओं में डायरिया, कुपोषण, मधुमेह, शरीर, में पानी की कमी, श्वसन रोग, आंत्र रोग, सिड्स (सडन इफैट डेथ सिन्ड्रोम) और कैंसर जैसे जानलेवा रोगों से रक्षा करता है। स्तनपान बच्चों के साथ-साथ माताओं के लिये भी स्वास्थप्रद है। स्तनपान परिवार नियोजन और पर्यावरण संरक्षण में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। स्तनपान गर्भ निरोध का सबसे प्रभावशाली तरीका है। अध्ययनों से पता चलता है कि स्तनपान में 50 प्रतिशत कमी होने पर प्रजनन दर में 17 से 37 प्रतिशत की वद्धि हो जाती है।

भरपूर स्तनपान करने वाले बच्चों में कैंसर से ग्रस्त होने की आशंका स्तनपान नहीं करने वाले बच्चों की तुलना में आधी होती है। स्काटलैंड में किए गए अधययनों से पता चलता है कि वहां बोतल से दूध पीने वाले 80 प्रतिशत बच्चे सिड्स के शिकार होकर मौत के ग्रास बनते हैं। बोतल से दूधपान बच्चों में गंभीर श्वसन रोग, आंत्र रोग और कुपोषण से होने वाले रोगों से ग्रस्त होने कि आशंका स्तनपान करने वाले बच्चों की तुलना में अधिक होती है। कुल मिलाकर स्तनपान को बढ़ावा देकर प्रत्येक वर्ष 10 लाख बच्चों को मौत के मुंह में जाने से बचाया जा सकता है। कोस्टारिका में स्तनपान को बढ़ावा देकर बाल मृत्यु दर को कम किया गया है। भारत में भी स्तनपान को बढ़ावा देकर बाल मृत्यु दर को कम किया जा सकता है। स्तनों में दूध आने की क्रिया दो प्रकार की होती है। एक क्रिया 'आक्टीटोसीन' रिफेलक्स' कहलाती है जिसमें स्वतः ही दूध प्रवाहित होने लगता है। यह मुख्यतः मानसिक व भावनात्मक होती है। दूध आने की दूसरी क्रिया प्रोलेविटन 'रिफेलक्स आक्सीटोसिन' कहलाती है। इस प्रक्रिया में दूध का स्त्राव हारमोन प्रोलेविटन .रिफेलक्स हारमोन द्वारा नियंत्रित होता है। प्रोलोक्टिम हारमोन यदि अधिक स्त्रावित होता है, तो दूध ज्यादा आता है और इस हारमोन के कम मात्रा में स्त्रावित होने पर दूध भी कम आता है। किन्हीं कारणों से शिशु कम दूध पीता है या माँ अपने शिशु को कम दूध पिलाती है, तो उन माताओं में धीरे-धीरे दूध की कमी होने लगती है। जो बच्चे रात्रि में दूध नहीं पीते है, उनकी माताओं में यह कमी प्रायः ज्यादा पाई जाती है। माताओं को दूध में कमी से बचने व दूध बढ़ाने के लिए कुछ आवश्यक बातों को व्यवहार में लेना चाहिए।

शिशु को दूध पिलाते समय मन-मस्तिष्क में किसी प्रकार का तनाव व चिन्ता न रखे। दूध पीते समय शिशु का पूरा शरीर माता के शरीर से चिपका रहे तथा मुंह व ठुड्डी स्तन से पूरी तरह चिपका रहें।

बोतल पान के खतरे : बोतल से दूग्धपान कराने पर बच्चों की मृत्यु का खतरा 14 गुना बढ़ जाता है। बोतल पान करने वाले बच्चों में रोगों से लड़ने की क्षमता कम होती है। बोतल पान करने वाले बच्चों का डायरिया से मरने का

खतरा 25 गुना अधिक होता है। बोतल से दूग्धपान करने वाले बच्चों में श्वसन संबंधी संक्रमण होने का खतरा 5 गुना बढ़ जाता है। बोतल पान करने वाले बच्चों में कर्णशोध, मस्तिष्क शोध तथा मधुमेह होने की अधिक आशंका होती है। भरपूर स्तनपान करने वाले बच्चों को कैंसर से ग्रस्त होने की आशंका स्तनपान नहीं करने बच्चों की तुलना में आधी होती है। बोतलपान करने वाले बच्चों लिम्फोमा (विशिष्ट प्रकार का कैंसर) विकसित होने कीआशंका स्तनपान करने वाले बच्चों की तुलना में 5.6 गुना अधिक होती है। बोतल से दूग्धपान करने वाले बच्चों में जीरोप्थैलमिया (दृष्टि विकार) होने की आशंका स्तनपान करने वाले बच्चों की तुलना में तीन गुना अधिक होती है। जिस बच्चे को जितने कम समय तक स्तनपान कराया जाता है, उसके आंत्र रोग और सिड्स (सडन इन्फैन्ट डेथ सिन्ड्रोम) संक्रमण से ग्रस्त होने की आशंका उतनी ही अधिक होती है। स्तनपान करने वाले बच्चों में अधिक आत्मविश्वास होता है तथा वे अधिक सेहतमंद होते है। बोतनपान करने वाले बच्चों का पोषण स्तर स्तनपान करने वाले बच्चों की तुलना में निम्न होता है। स्तनपान जारी रखने से माताओं में 6 से 12 महीने तक गर्भधारण का खतरा नहीं रहता है। स्तनपान में 50 प्रतिशत की कमी करने पर प्रजनन दर में 17 से 37 प्रतिशत की वृद्धि हो जाती है।

एक माह से कम समय तक स्तनपान कराने वाली माताओं में स्तन कैंसर का खतरा अधिक होता है। स्तनपान की अवधि बढ़ने के साथ ही यह खतरा घटता जाता है। भरपूर स्तनपान करने वाले बच्चे को कैंसर से ग्रस्त होने की आशंका स्तनपान नहीं कराने वाले बच्चों की तुलना में आधी होती है।

जिस बच्चे का जितना अधिक स्तनपान कराया जाता है, उस बच्चे के मधुमेह से पीड़ित होने का खतरा उतना ही कम होता है। एक साल या अधिक समय तक स्तनपान करने वाले बच्चों में मधुमेह का खतरा एक साल से कम समय तक स्तनपान करने वाले बच्चों की तुलना में आधा होता है।

गंभीर श्वसन संक्रमण (ए.आर.आई.) ब्राजील में पूरी तरह से बोतलपान पर निर्भर रहने वाले शिशुओं के गंभीर श्वसन संक्रमण से मरने की आशंका

पूरी तरह स्तनपान पर निर्भर रहने वाले बच्चों की तुलना में 36 गुना अधिक होती है। (रा. पत्रिका)

स्तनपान से केवल उपर्युक्त लाभ नहीं होते परन्तु और भी अनेक लाभ होते हैं। बोतल से दूध पिलाने से आर्थिक समस्या, समय की समस्या और पर्यावरण की समस्या उत्पन्न होती है। सबसे अधिक समस्या है भावनात्मक समस्या क्योंकि माता जब स्व-स्तन का दूध पान नहीं कराती है तब बच्चों का भावनात्म्क, अपनापन, प्रेम, वात्सल्य, उत्तरदायित्व कम हो जाता है। जिससे वे बच्चे आगे जाकर माता की आज्ञा का पालन नहीं करते हैं उनकी सेवा नहीं करते हैं क्योंकि स्तनपान कराते वक्त माता जिस प्रेम, करूणा, दयाभाव से ओत-प्रोत हो करके कराती है उसका भी प्रभाव दूध के माध्यम से बच्चों के ऊपर पड़ता है परन्तु कृत्रिम दूध का पाउडर, गाय, भैंस का दूध पिलाने से उसमें कृत्रिमता आ जाती है। उपर्युक्त दोष गुणों को आधुनिक साक्षर मूर्खा, फैशन की दीवानी, नटियों (अभिनेत्री) को अनुकरण करने वाली स्पतंत्रता के नाम पर स्वछन्दता को अपनाने वाली नारियाँ अपने वक्ष की सुन्दरता को अक्षुण्ण रखने के लिए चिर-यौवन, चिर सुन्दरी दिखाई देने के लिए बच्चों को स्तनपान नहीं कराती है। उनका पालन-पोषण स्वयं नहीं करके धाई से करवाती हैं या शिशु पालन केन्द्र में भेज देती है। स्तन्यपायी पशु-पक्षी भी अपनी संतना का स्तनपान कराती है, पालन-पोषण करती है, लाड़-प्यार भी करती है परन्तु उपर्युक्त आधुनिक कहलाने वाली शिक्षिका नारी (न+अरि जिसके बराबर कोई दूसरा शत्रु नहीं) नारी अपनी संतान तक को दूध पान नहीं करके पशु से भी महापशु बन रही है। इन्हे क्लब में जाने के लिए, पुरुषों के साथ घूमने के लिए, ब्लू फिल्म देखने के लिए, मनोरंजन के लिये तो समय है परन्तु बच्चों को दूध पिलाने का समय नहीं है और ऐसी ही स्त्रियाँ स्त्री स्वतंत्रता के लिये, स्त्री अधिकार के लिये, सामाजिक कुरीतियों को दूर करने के लिए, समाजिक समानता के लिये भाषण करती हुई चर्चा करती हुई दिखाई देती है। संस्कार व लाड़ -प्यार के अभाव से जब बच्चे बिगड़ जाते हैं तब बच्चे को कोसते रहते हैं कि हमारे माँ-बाप के जमाने में हम उनकी सेवा किया करते थे

और तुम हमारी बात भी नहीं मानते हो।

कुछ लेख में पहले मैंने यह वर्णन किया था कि स्त्री शिक्षा पुरुष शिक्षा से भी महत्वपूर्ण है। क्योंकि शिक्षा से स्त्रियाँ शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक रूप से उन्नत होती है और बच्चों को भी उन्न्त करने में सहायक बनती हैं। परन्तु वर्तमान काल की अधिकांश साक्षार स्त्रियाँ शिक्षा का फल स्वच्छन्दता, अश्लील वेषभूषा, चाल-ढाल, सफेदपोश नौकरी, शारीरिक श्रम नहीं करना, पारिवारिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, धार्मिक, उत्तरदायित्व से उन्मुक्त होना मानती है।

मेरा प्रायोगिक अनुभव है भले अशिक्षित स्त्रियाँ कुछ धार्मिक, रूढ़िवादी, सामाजिक रूढ़िवादी होती है, स्वच्छ कपड़ा आदि कम पहनती हैं तथापि उनकें दया, करूणा, शालीनता, परोपकार, सहिष्णुता, विनम्रता, प्राकृतिकता, दिखावा की कमी, धार्मिकता, सेवाभाव, परदुःखकातरता, परिश्रम करने की शक्ति, अधिकांश शिक्षित महिलाओं से अधिक होती है। इतना ही नहीं जो शिक्षित महिलाएँ संगठन, परोपकार, सेवा का भाषण झाड़ती हैं उनमें भी कामचोर, झगडालू, असहिष्णुता आदि दुर्गुण पाये जाते हैं। इतना ही नहीं वे गर्भस्थ संतना की निर्मम हत्या करने वाली अधिकांश महिलाएँ शिक्षित एवं नगर की होती है जो स्त्रियाँ स्वयं के कलेजे के टुकड़े की हत्या करती हैं वे अन्य लोगों के प्रति दया, करूणा का क्या भाव रख सकती हैं ? कुछ शिक्षित महिलाएँ जो नौकरी करने लगी हैं वे नौकरी से कुछ धन प्राप्त करके सास, श्वसुर और पति पर भी अनैतिक दबाव डालती हैं, मनमानी करती हैं, उत्श्रृंखल होती हैं। समाचार पत्रिका में अधिकांश चुटकुले एवं कार्टून स्त्रियों के उपर्युक्त दुर्गण के ऊपर आते हैं।

जिस भारत वर्ष में स्त्रियों को माता, लक्ष्मी, दुर्गा, जगदम्बा आदि महनीय उपाधियों से सम्बोधित किया जाता है और पूज्य दृष्टि से देखा जाता है और जिसका आभूषण ही शील है, ऐसी भारतीय स्त्रियाँ भी आज आधुनिकता के नाम पर फैशन के नाम पर अर्द्धनग्न अवस्था में या आँगोपाँग स्पष्ट झलकते हों ऐसी पोशाक में भरे बाजार में हाइहील के जूते चप्पल पहनकर होठ में मासूम

पशुओं के खून (लिपिस्टीक) लगाकर मुख में चर्बी (क्रीम) लगाकर, हाथ में चमड़ा निर्मित बैग (पर्स) लेकर राक्षसी रूप में घूमती रहती हैं। इतना ही नहीं कुछ स्त्रियाँ रूपयों के लोभ में अर्द्धनग्न या नग्न रूप में फोटो खिचाती हैं, मॉडल बनती हैं, सिनेमा में अभिनय करती हैं।

कुछ बच्चियाँ जो स्कूल कॉलेज में पढ़ती है मानों फैशन करना, जहाँ तहाँ अनावश्यक घूमना, टी.वी., सिनेमा देखना, बायफ्रेण्ड एवं सहेलियों के साथ क्लब में जाना, पिकनिक करना ही उनकी पढ़ाई का कोर्स हो गया है। घर में गृहकार्य में माता-पिता की सहायता करने में भी शर्म आती है। माता-पिता की सहायता करना मानों चतुर्थ श्रेणी की नौकरी के बराबर मानती है। भोजन बनाना, गृहकार्य करना, छोटे भाई-बहनों को खिलाना, पिलाना, नहलाना, झूठे बर्तन साफ करना सब नौकर के काम मानती हैं इतना ही नहीं जो बच्चियाँ उपर्युक्त उत्श्रृंखल रूप में काम करती हैं ऐसी लड़कियो को गुरु के पास पढ़ने में, सांस्कृतिक, धार्मिक कार्यक्रम में भाग लेने में, आहार देने में शर्म आती है, अपमान अनुभव होता है। ये लड़कियाँ तो पढ़ती है स्कूल, कॉलेज में परन्तु व्यवहार में अशिक्षित ग्रामीण लड़कियों से भी गई गुजरी रहती हैं। उपर्युक्त काली भारतीय मैडम एवं मिस अंग्रेजी महिलाओं से भी नैतिक दृष्टि से गई बीती रहती हैं, मेरा खुद का अनुभव है कि जब अंग्रेजी महिलाएँ बातचीत करती हैं, व्यवहार करती हैं तब बहुत शालीनता से विनम्रता से करती हैं परन्तु काली भारतीय अंग्रेजी महिलाओं में न ज्ञान है, न विवेक है न नम्रता केवल दिखावा, फैशन, उत्श्रृंखलता है।

आधुनिक युग में स्त्री सम्बन्धी कुछ कुप्रथाएँ कम हो गई है - जैसे- सती दाह प्रथा, पर्दाप्रथा, बाल विवाह प्रथा आदि आदि। परन्तु अभी कुछ नई कुप्रथाएँ प्रारम्भ हो गई हैं यथा- पारिवारिक विघटन, दहेज, प्रताडना, दहेज हिंसा, गर्भपात, फैशनप आदि आदि। पहले स्त्रियों में सहनशीलता, प्रेम, विनम्रता, पतिव्रता धर्म अधिक होने के कारण उनमें परिवार संगठित होकर रहता था परन्तु अभी उपर्युक्त गुण के अभाव में परिवार टूटते जा रहे हैं।

माता-पिता स्वयं क्लब, सिनेमा हॉल में जायेंगे तथा साथ ही अपने

बच्चों को भी ले जायेंगे लेकिन न तो वह स्वयं धार्मिक कार्यक्रम में भाग लेते हैं और न ही बच्चों की प्रवृत्तियों में रुचि पैदा करते हैं। इस प्रकार बच्चों में धर्म के प्रति जब तक रुचि नहीं होगी तब तक उनमें जागरूकता तो नहीं सकती हैं। क्योंकि बालक को जैसा सिखाते है वह वैसा ही सीखते हैं। स्त्रियाँ बच्चों की परवरिश की ओर तनिक भी ध्यान नहीं देती हैं। वह अपने फैशन करने में ही बहुत कीमती समय गवाँ देती है। शायद वे इस बात से अनभिज्ञ है कि (Time is Life) अर्थात् समय ही जीवन है। स्त्रियाँ समय के मूल्य को नहीं समझती है शायद इसी कारण वह राक्षसी बनने में समय गँवाने को महानता समझती है।

कॉलेज, स्कूल में पढ़ने वाल ऐसी बड़ी लड़कियों की बात तो छोड़ो जो 4.5 वर्ष की लड़कियाँ होती है। वह भी फैशन को अभिन्न अंग मानकर फैशन करती हैं और अपने माता-पिता को परेशान करती है भले माता-पिता स्वयं की आवश्यकता होने पर भी वस्त्र नहीं लाये परन्तु अपनी पुत्रियों की हर मांग को पूरा करना ही पड़ता है। बेटियों की रोज नई-नई मांग होती है कभी यह चाहिये तो कभी वो। माँ बाप उनकी जरूरत को जैस-तैसे पूरा करेंगे। यह तो माँ बाप की भी गलती कही जा सकती है। यदि वे अपनी बेटियों को शुरु से अच्छे संस्कार दें और धार्मिक दृष्टिकोण एवं वैज्ञानिक दृष्टि से समझाऐं कि लिपिस्टिक, पाउडर जो लगाते हैं वे कैसे बनते हैं तो व उन्हें अवश्य त्याग देंगी। कॉलेज में जो लड़कियाँ होती है वह ऐसे काम करती हैं जिससे अन्य बच्चियों को माँ-बाप उनको कॉलेज भेजने पर शंकित या चिंतित होते हैं और सभी के मना करने पर भी अन्त में नहीं भेजना पसन्द करते हैं।

अधिकांश शिक्षिता महिला फैशन के द्वारा विश्व सुन्दरी बनाना चाहती है परन्तु सीता, गार्गी, लक्ष्मीबाई आदि के समान अन्तरंग सुन्दरी आदर्श, पूजनीया नहीं बनना चाहती हैं। क्योंकि सुन्दरी बनने के लिए तो बाह्य साधन की आवश्यकता पड़ती है परन्तु अन्तरंग सुन्दरता के लिए तो त्याग, तपस्या, स्वार्थत्याग आत्मनियंत्रण, संयम, सादा जीवन उच्च विचारादि की आवश्यकता पड़ती है। जिसको अपनाना विष को पचाने के समान कष्ट साध्य है।

शिक्षित महिलायें भी गर्भपात करने में अशिक्षित महिलाओं से पीछे नहीं

है। गर्भपात कराने वाली डॉक्टर तो शिक्षित महिलाऐं ही होती हैं। सन्तान की आवश्यकता नहीं है तो संयम में ब्रह्मचर्य में रहना चाहिए। इन्द्रिय संयम के अभाव में रूपी दोष से तो गर्भ धारण होता है। पुनः गर्भ में नियंत्रित मासूम बच्चों की निर्मम, बर्बर हत्या करके पुनःमहादोष करते हैं। गर्भ में यदि बच्ची ने जन्म लिया तो बर्बरता और भी बढ़ जाती है। माता (स्त्री) ही पुत्री (स्त्री) की हत्या एक महिला डॉक्टर (स्त्री) से कराती है। इसीलिए स्त्री के लिये स्त्री ही ज्यादा शत्रु है। जो स्त्री, पुरुष जो राष्ट्र निमंत्रित, मासूम बच्चों की हत्या करते हैं उन्हें अहिंसा का नारा देने का स्वयं के जीवन की सुरक्षा का कोई नैतिक अधिकार नहीं है। यदि कोई निर्दोष बड़ा मनुष्य की हत्या कर देता है तो उसको जेल का दण्ड या प्राणदण्ड तक मिलता है तो क्या निर्दोष, अबोध शिशु की हत्या के कारण वह दण्डनीय नहीं है ? इस प्रकार दहेज हत्या में सास, ननद आदि का रोल अधिक होता है जो कि स्त्रियाँ ही होती है। पारिवारिक समस्या, कलह फूट में भी स्त्रियों की भूमिका अधिकांशतः पुरुषों से भी अधिक होती है।

'गुण सर्वत्र पूज्यते' अर्थात् गुणों की पूजा सर्वत्र होती है। अतः स्त्रियों को जननी 'जन्मभूमिश्च स्वर्गादपि गरियसी' रूपी महती गरीमा प्राप्त करने के लिये स्वयं को पुरुषार्थ करना पडेगा। महिला के विभिन्न रूप होते हैं। गर्भ धारण, पालन-पोषण में माता, संस्कार देने में गुरू, सेवा करने में धायी, क्षमा धारण करने में पृथ्वी, सन्तान की दानवीय प्रवृति को नाश करने के लिये दुर्गा है तो ज्ञान देने से सरस्वती, पोषण करती है अतः लक्ष्मी है। इसलिए कहा जाता है 'यत्र नार्यस्तु पूज्यन्ते रमन्ते तत्र देवता' अर्थात् जहाँ नारी की पूजा की जाती है वहाँ देवता प्रसन्न होते हैं रमण करते हैं। इसका रहस्य यह है कि जहाँ स्त्रियाँ सुशिक्षिता, सुशीला, विनम्रा, सुरक्षिता होती है, उन्हें आदर, सम्मान, योग्य अधिकार, योग्य स्वतंत्रता दी जाती है वहाँ उन्नति होती है, शान्ति होती है, सब प्रसन्न होते हैं।

भारत के महान् क्रांतिकारी नेता सुभाष चन्द्र बोस श्रेष्ठ राष्ट्र के लिये उत्कृष्ट माता की आवश्यकता सर्वोपरि मानते थे। राष्ट्र के लिये वे बोलते थे "A good mother is better than hundred teachers" अर्थात् एक अच्छी

माता सौ शिक्षकों से भी उत्कृष्ट है। और भी कहते थे- "you give me a hundred mother i give you good nation" अर्थात् आप मुझे सौ माता दें, मैं एक उत्तम राष्ट्र दूंगा। इसका भावार्थ यह है कि उत्तम व्यक्तियों का निर्माण सुसंस्कृत उत्तम माताओं से होता है। जैसे शुद्ध स्वर्ण से जो अलंकार बनता है वह अलंकार भी शुद्ध होता है। इसीलिए कहा गया है कि नारी समाज को सुसंस्कृत उन्नत करने से मानव समाज भी पल्लवित पुष्पित - सुसंस्कारित होता है।

पुरुष का नारी के समान कोई बन्धु नहीं। - महाभारत

नारी की उन्नति या अवनति पर ही राष्ट्र की उन्नति या अवनति निर्धारित है। - अरस्तु

बदला लेने और प्रेम करने में नारी पुरुष से अधिक निर्दयी होती हैं। - नीत्शे

सौन्दर्य से नारी अभिमानिनी बनती है, उत्तम गुणों से उसकी प्रशंसा होती है और लज्जाशील होकर वह देवी बन जाती है। - शेक्सपीयर

नारी को अबला कहना उसक अपमान करना है। - गांधी

नारी, जगत् की एक पवित्र स्वर्गीय ज्योति है। त्याग उसका स्वभाव प्रदान उसका धर्म, सहनशीलता उसका व्रत और प्रेम उसका जीवन है। - चतुरसेन शास्त्री

मातृशक्ति उद्धारक शक्ति बने न कि संहारक

(नारी की गरिमावस्था एवं पतितावस्था)

राग :- (हे वनगिरि ! हे लतागिरि...)

आचार्य कनकनन्दी

हे! मातृजाति हे । मातृशक्ति .....

सुनो गरिमा तेरी जाति/(नारी जाति) की... हे!... (स्थायी/टेक)...

तुझसे जन्म लेते, तीर्थंकर व बुद्ध... रामकृष्ण सहित, समस्त ही मानव।
तू ही ब्राह्मी सुन्दरी, चन्दना सीता गार्गी... प्राचीनकाल से ही, अनेक सती साध्वी।।

अनेक वीरांगनाएँ, तेरी जाति में जन्मी... दुर्गा लक्ष्मीबाई व, अहिल्याबाई जन्मीं।
देशहित के हेतु, संग्राम भी लड़ी... जीजाबाई के सम, किंगमेकर बनी।।

ऐसी बेसेन्ट तथा, सरोजिनी नायडू... माता कस्तूरबा व, माता स्वरूप रानी।
कमला मीराबेन, दुर्गा प्रेमवती... स्वतन्त्र संग्राम की, बनी है महानेत्री।।

विजयलक्ष्मी तथा, सुचेता कृपलानी... राजनीति क्षेत्र में, महान् नेत्री बनी।
महान् वैज्ञानिक, मेडम क्यूरी बनी... कल्पना चावला देखो, स्पेस-यात्री बनी।।

श्रीमती अमृता व, महाश्वेता देवी... अरुन्धतीराय व, सुभद्रा भी कुमारी।
राण्डा बर्न शक्ति गवेन, भक्ता मीराबाई... विदुषी लेखिकाएँ, महिलाएँ भी हुई।।

नाईटिंगल नर्स, मदर टेरेसा भी... सेवा के क्षेत्र में, देखो महनीया बनी।
अतएव माता को, गरिमामयी माना... स्वर्ग से भी महान्, माता को स्मृति माना।।

कुछ तो माताएँ भी, कलंकिनी है बनी... मर्यादा शालीनता, ममता सर्व छोड़ी।
कामुक्त ईर्ष्यालु व, मायाचारिणी बनी... बातूनी झगड़ालु, शृंगार प्रिय बनी।।

जिससे बच्चों को, संस्कार नही देती... नर्क समान देखो, परिवार बना देती।
सासु-ससुर बड़ों की, सेवा नहीं करती... गर्भपात के लिए, कारण भी बनती।।
बच्चों को दुग्धपान, माताएँ न कराती... जिससे बच्चों को, निमोनिया होती।
लाखों बच्चों की मृत्यु, प्रतिवर्ष होती... भारत की माताएँ, सब से दोषी होती।।

ऐसी माताओं को, स्तन कैन्सर होता... दूध न पिलाने का, कुफल भी मिलता।
शादी शुदा की आत्म-हत्या तो बढ़ रही... परिवार समाज, समस्या से घिरी।।
अतएव माताओं, स्वयं आदर्श बनो... 'कनकनन्दी' गुरु का, तुम सुनो।
शिक्षा के साथ तुम, संस्कारवान बनो... आधुनिकता के साथ, आध्यात्मिक भी बनो।।

एड्स से भी घातक हुआ निमोनिया

विश्व स्वास्थ्य संगठन की मानें, तो दुनिया में निमोनिया से सबसे ज्यादा बच्चों की मौतें भारत में होती है। इन्टरनेशनल एसेसे वैक्सीन सेन्टर एवं जॉन हॉपकिस ब्लूमबर्ग स्कूल ऑफ पब्लिक हैल्थ की निमोनिया प्रोग्रेस रिपोर्ट 2011 के अनुसार, वर्ष 2008 में भारत कें 3.71 लाख बच्चों की मौतें निमोनिया के कारण हुई। रिपोर्ट ये भी कहती है कि भारत में केवल 46 प्रतिशत ऐसे बच्चे हैं जिन्हें जन्म के छह महीने तक माँ का दूध नसीब होता है। यह आंकड़ा काफी कम है। अगर नवजात को छह महीने तक ही माँ का दूध मिल जाए, तो वह कई बीमारियों से लड़ सकता है।

3.71 भारत 0.84 पाकिस्तान

1.77 नाइजीरिया 0.80 अफगानिस्तान

1.12 कांगो 0.62 चीन

निमोनिया से हुई बच्चों की मौतें (लाखों में)

राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एन सी आर बी) की रिपोर्ट के अनुसार वर्ष 2010 में देश में आत्महत्या करने वालों में से 69.2 फीसदी लोग शादी-शुदा थे। जबकि 22.8 फीसदी कुँआरों ने आत्महत्या की।

-राजस्थान पत्रिका

पावन व पतिता नारी

(तर्ज- हे अम्बे जिनवाणी... 2. बंगला राग ...)

जननी जननी हे जननी, जय हो मानव की जननी। जय... (टेक)
तीर्थेश गणेश की तुम जननी, ऋषि मुनि की श्रेष्ठ जननी

सम्राट चक्री की तुम जननी, मनु आर्य की महति जननी।। (1) जननी...
ब्राह्मी सुन्दरी सीता चन्दना, गार्गी लीलावती तुम प्रसिद्धा,
जीजाबाई व मदरटेरेसा, लक्ष्मीबाई व मीरा माता।। (2) जननी...
जग प्रसिद्धा अनेक माता, कला ममता वात्सल्य दाता,
कोमल करुणा सेवा शुचिता, तुमारे गुण अनेक माता ।।(3) जननी...
गृहणी तुम हो गृह स्वामी की, माता तुम हो सब सन्तान की,
भगिनी तुम हो सब भाई की, पुत्री तुम हो मात पिता की।। (4) जननी...
गृह प्रबन्धिनी पाक कलाज्ञी, संस्कार दात्री सेवा की धात्री,
पर्व उपवास वहन कर्त्री, त्रिवर्ग सहयोगिनी पात्री।। (5) जननी...
साधु संत की आहार दात्री, श्राविका ब्रह्मचारिणी पात्री
क्षुल्लिका आर्यिका गणनी पात्री, विदुषी लेखिका ज्ञान दात्री।। (6) जननी...
गर्भपात व फैशन व्यसन, अश्लीलता व कामुक भाव,
ईर्ष्या झगड़ालु निंदक भाव, बातूनी स्पर्द्धा कुनारी भाव।। (7) जननी...
आधुनिकता का मद तुम त्यागो, शील सुगन्धता तुम फैलाओ,
संस्कार पाओ संस्कार दो, शरीर मोह तुम न पालो।। (8) जननी...
कुभाव त्यागो सुभाव धारो, सम्यक्त्व युक्त व्रत भी पालो,
परम्परा से मोक्ष भी वरो, आध्यात्म सुख तुम भी पा लो।।(9) जननी...

आधुनिक पढी-लिखी रानी
(आधुनिकता से नारी के लिए सुविधा एवं समस्यायें)

तर्ज :- (1. हे गुरुवर धन्य हो तुम... 2. होठों पे सच्चाई...)

आधुनिक पढ़ी-लिखी रानी है, कौन भरेगी (अब) पानी (है)
नदी भी आ गई किचन में, डिनर खाते है होटल में 2 (टेक)...

आटा मसाला न पीसती है, पैकेट में रेडीमेड लाती है
सड़े गले मिलावट मिलते, चमक दमक पैकिंग भाती है 2 (1)...
पानी छानना नहीं आता है, बिसलेरी वाटर (जो) पीती है।
दश रूपयों में मिले एक लीटर जिससे लगे स्टेटस सिम्बल।। (2)...
बाइक से वार्किंग जाती है, मन्दिर पैदल न जाती है।
किटी पार्टी क्लब (में) जाती, आहार दान न करती है।। (3)...
टीवी सिरियल देखती, स्वाध्याय प्रवचन न जाती है।
फैशन से शरीर सजाती है, मन का मंजन न करती है।। (4)...
ब्यूटी पार्लर जाती है, बडों की सेवा न करती है।
गप्प में समय बिताती है, बच्चों को संस्कार न देती है।। (5)...
लिपिस्टीक ओठ में लगाती (है), खाना बनाना न जानती है।
नेलपालिश नखों में लगाती है, घर की सफाई न आती है।। (6)...
अप टू डेट मैडम बनती है, ज्ञान-विज्ञान न जानती है।
हाईहिल सेण्डल पहनती है, स्वास्थ्य रक्षा न जानती है।। (7)...
प्रेमी के साथ घूमने जाती, अनैतिक पूर्ण काम करती।
इससे उसे शर्म न आती, अच्छे कामों में शर्माती है।। (8)...
इन कारणों से होती निष्क्रिय, आलस्य प्रमाद छा जाता है।
व्यवहार ज्ञान सदाचार बिना, बुद्धि का विकास न होता है।। (9)...
हिताहितज्ञान पुण्यपापबिना, महान् विचार न होता है।
इसके बिना सुख-शान्तिमय, जीवन कभी न बनता है।। (10)...
तनाव रहता प्रेम न मिलता, सहयोग भी न मिलता है।
एकली होती उदास रहती, खोटा (छोटा) विचार आता है।। (11)...
मोटापा आता शुगर लाता, दिल भी कमजोर होता है।

हड्डी भी होती कमजोर भंगुर, शरीर होता रोग का घर।। (12)...
इत्यादि से वह दुःखी भी होती, झगड़ा संक्लेश निन्दा होती।
तलाक देती या घर से जाती, आत्महत्या से जीवन देती।। (13)...
इसलिए बहिनों संभल जाओ, शिक्षित बनो, आदर्श बनो
मूल को सींचो विकास करो, कनकनन्दी का आह्वान सुनो।। (14)...

भोली मेरी माँ

(राग - पूछ मेरा क्या नाम रे...)

भोली मेरी माँ है, अनपढ़ गँवार है...
गाँव में जन्मी, गाँव में पली, गाँव में रहने वाली है SS (स्थायी)
चमक दमक फैशन व्यसन, नहीं जानने वाली है
अंग्रेजी बोलना लेक्चर झाड़ना, आधुनिकता से कोरी/(खाली) है....
भोली मेरी माँ है ....(1)
कूट-कपट मायाचारी ढोंग, गप्पाष्टक/(पाखण्ड) से खाली है...
आलस प्रमाद कामचोरी से, सदा सर्वदा कोरी है...भोली मेरी माँ है ....(2)
प्यारे दुलारे खाना खिलाए, अमृत सम भोजन है...
ऐसा भोजन कहाँ खिलाए, पढ़ी-लिखी मम्मी रे...भोली मेरी माँ है ....(3)
सुबह सुबह गैया मैया का, दूध भी दुहने वाली है...
धारोष्ण दूध रोज पिलाए, कामधेनु मनहारी है...भोली मेरी माँ है ....(4)
हमें प्यार दुलार करे, स्पर्श अमृत बोली से
ऐसा कहाँ नसीब होता है, आधुनिक मम्मा से...भोली मेरी माँ है ....(5)
रोग शोक दुःख में देती, दवा सेवा सान्त्वना
ऐसा कहाँ कर पाती है, डिग्री धारी मम्मा...भोली मेरी माँ है ....(6)

गृह कार्य व बाग बगीचा, कृषि करने वाली है...

सबके भरण पोषण वाली, तो भी गँवारू वाली है...भोली मेरी माँ है ....(7)

परिवार का सार संवार, रक्षा करने वाली है

तो भी न होती कामकाजी, पैसा न लाने वाली है...भोली मेरी माँ है ....(8)

हीरोईन न बनना जाने, महामूर्खा है मॉडल में...

तो भी मेरी माता सम, कोई नहीं है मण्डल में...भोली मेरी माँ है ....(9)

सभा समिति क्लब फंक्शन में, भाषण न करने वाली है...

तो भी माँ के अनुभव सामने, कौन टिकने वाली है...भोली मेरी माँ है ....(10)

मेरी माँ कामधेनु या चिन्तामणि रत्न है...

हर काम को बिना सिखाये, करती सदा पूर्ण है...भोली मेरी माँ है ....(11)

मेरी माँ से न करो घृणा, अहिल्या सम माँ है...

अभिशाप से करो न कलंकित, आधुनिकता की शंका से...भोली मेरी माँ है ...

(वर्तमान के बच्चों की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा)

स्व माता-पिता से बच्चों की करुण प्रार्थना

(स्व माता-पिता के अत्याचार से स्व-रक्षा के लिए बच्चों की उनसे ही प्रार्थना)

राग :- (बाबुल की दुआएँ लेती जा...)

हे मेरे मात-पिता मुझे सुख शान्ति से जीने देना।

बनूँ या न बनूँ मैं धन्ना सेठ मुझे अच्छा तो बनने देना।... स्थायी...

मेरे पूर्व के कर्मानुसार तुम्हारे घर में मैं आया।

संयोग बना आपका मुझसे अब सत् विकास करने देना।

माता तो ममतामयी होती पिता जो करे पावन जीवन।

सुख दुःख में जो साथ देते वे ही कहलाते कुटुम्बी जन।

उभयकुल दीपिका सुपुत्री बनकर जब मैं गर्भ में आई।

गर्भ में ही मुझे तुम क्यों मारो ऐसी मेरी क्या गलती हुई।

दैवात् यदि जन्म भी मेरा हुआ पुत्र या पुत्री के रूप में।

अबोध शिशु वय में ही क्यों दबाव डालते हो मुझमें।

शिरीष कुसुम सम अति कोमल मेरा है यह छोटा तन।

मक्खन से भी अति कोमल है मेरा यह नन्हा भोला मन।

दो वरष की वय में ही मुझे, क्यों भेजते हो पाठशाला।

तुम्हारे सानिध्य बिना वह, लगे है जैसे ही बन्दीशाला।

पानी के बिना यथा मत्स्य, तड़प-तड़प कर मरता है।

तुम्हारे बिना मैं भी स्कूल में जीते जी ही मरता हूँ।

मास्टर की है डाँट पड़ती, रसविहीन भी पढ़ूँ है पाठ।

गृहकार्य की घानी में सदा, पीसता रहूँ दिन व रात।

आपकी स्वार्थाकांक्षा के बन्दीगृह में सदा मैं कैद हूँ।

पिञ्जराबद्ध पक्षी के सम, मुक्त भाव से रहित हूँ।

वह है बन्दीगृह आपका मैं बनूँ सबसे टॉपर।

परीक्षा में भी अब्बल रहूँ, प्रतियोगिता में रहूँ सुपर।

नाच व गाना में रहूँ टॉपर, वाद-विवाद व मॉडल में।

हीरो-हीरोईन सम बनूँ मैं सदा, आगे ही रहूँ सब में।

इसी बन्दीशाला के अति योग्य, जब मैं न बन पाता हूँ।

प्रताड़ना, निन्दा, उपेक्षा द्वारा, विभिन्न दण्ड सहता हूँ।

जिससे मैं भारी डिप्रेशन, व टेन्शन सदा भोगता हूँ।

असहनीय होने पर मैं आत्महत्या कर छूटता हूँ।

गत दशक में बारह प्रतिशत (12%) तक मेरी आत्महत्या बढ़ी।

विकसित पूर्व किशोर कली की आत्महत्या है बढी।

दशलाख किशोरों में हाय! नौ आत्महत्या करते हैं।

तीन वर्ष में सोलह हजार छात्र आत्महत्या करते हैं।

अहिंसक देश भारत के आज विद्यार्थी ये कृत्य करते हैं।

जिस देश के बच्चे भी देखो!, आध्यात्मिक ऊँचाई पाते थे।

मैं हूँ विशाल वृक्ष के अंकुर, स्वेच्छा से विकसित होने दो।

स्वार्थ के संकीर्ण गमला के मध्ये मुझे नहीं रोपने दो।

मैं हूँ कोमल सुवास कली, मुझे ही स्वयं खिलने दो।

खिलने से पहले मसलकर, निर्दयता से मरने न दो।

'कनकनन्दी' के लेखन द्वारा, प्रकटा यह मेरा निवेदन।

मेरे माता-पिता कृपा करके, स्वीकार करो मेरा आवेदन।

मैं हूँ अकाजकारी गृहणी

(गृहणी की आत्मकथा एवं आत्मव्यथा)

तर्ज :- (ओठों पे सच्चाई...)

मैं हूँ अकाजकारी गृहणी, घर के काम से फुरसत नहीं।

खाना बनाती, बच्चे पालती, तो भी कहें कुछ काम नहीं।।...2 (टेक)

मैं न जाती आफिस क्लब, मिटींग व किट्टी पार्टी में,

सद्गृहणी के कर्त्तव्य पालने से, अवकाश नहीं दिनरात में।....2

ब्रह्ममुर्हूर्त में उठकर मैं, नित्यकर्म सदा ही करती हूँ,

प्रभुस्मरण, शौच, स्नान, पूजा-पाठ भी करती हूँ।।...2 मैं... (1)

शुद्धतापूर्वक आहार बनाके, आहारदान मैं करती हूँ

परिवारजन व सास ससुर को, भोजन कराकर खाती हूँ,...2

गृह-पालित गाय भैंस का, भरण पोषण भी करती हूँ,

दूध दुहना, दही जमाना, घी भी मैं बनाती हूँ।।... 2 मैं... (2)

घर की सफाई, रोगी की सेवा, अतिथि सत्कार मैं करती हूँ,

बाग-बगीचा खेता का काम, आटा भी पीसा करती हूँ...2

वस्त्र धोना, घर पोतना, बर्तन मांजना सदा काम है,

पानी लाना, सब्जी लाना, घर संभालना काम है।...2 मैं... (3)

मध्यान्ह बेला में मन्दिर जाकर, साधु से पढ़ना कर्त्तव्य है,

प्रवचन सुनना, समाधान करना, धर्म को जानना कर्त्तव्य है...2

सन्ध्या से पूर्व खाना बनाकर, खिलाना-पिलाना काम है,

बर्तन मांजकर घर सम्हारकर, मन्दिर जाना काम है।।....2 मैं... (4)

आरती, वन्दना, प्रार्थना, प्रवचन, प्रश्नमंच में भाग लेती हूँ,

आर्यिका आदि की वैयावृत्तकर, घर जा शयन करती हूँ...2

दिन-रात में सोलह घंटे भी, मैं हाड़तोड़ काम करती हूँ,

माता, प्रबन्धक, दासी तक, समस्त काम सदा मैं करती हूँ।।...2 मैं...(5)

तो भी मुझे वेतन में, एक भी पैसा नहीं मिलता है।

चतुर्थ श्रेणी के नौकर सम, मुझे न सन्मान मिलता है...2

भारत में तो वह ही महती जो, फर्जी भी डिग्री धारी होती,

फैशन करती, व्यसन करती, नौकरी पार्टी में जाती है।।...2 मैं... (6)

गोगल्स पहनती, लिपिस्टिक लगाती, हिंगिलिस भाषा बोलती है,

हाइहि सेण्डेल पहनकर, फर्राटे में गाड़ी चलाती है...2

भले घर में खाना न बनाती, होटल में खाना खाती है,

धाई के द्वारा बच्चों को पालती, बोतल का दूध पिलाती है।।...2 मैं...(7)
सास-ससुर की आज्ञा न पालती, पति से स्वकाम कराती है,
क्लब पार्टी से देररात आती, सिनेमा व घूमने जाती है...2
तीर्थंकर साधू-साध्वी के बदले, नट-नटी को आदर्श मानती है,
उन्हीं का गाना, पहनना उनका, उनका स्टाइल जो करती है।।...2 मैं...(8)
ब्राह्मी, सुन्दरी, गार्गी, सीता, आउट ऑफ डेट हो गई,
अश्लील, हुल्लड़, नृत्यगानवाली, हीरोइन अप टू डेट हो गई...2
इसलिये तो आज इंडिया देश में, पढ़े-लिखे अधिक भ्रष्ट हुये,
माता, मातृभूमि, मातृभाषा रहित, भारतीय संस्कृति से दूर हुये।।...2 मै...(9)
जीजाबाई, तीर्थंकर माता, भक्तमीरा क्या कामकाजी थी,
तो भी क्या वे महती न हुई, मेरी अभी क्या कसर हुई...2
अभी हे! भारत नौकरवृत्ति छोड़ो, आत्मगौरव को स्मरण करो,
'''कनकनन्दी' के माध्यम से अभी, मेरे महत्व को पहिचानो।।...2 मैं...(10).

प्रकरण- 6

(नेता का स्वरूप)

नेता की आत्मकथा

तर्ज :- (1. नाम तिहारा... 2. भोली मेरी माँ... 3. जीना यहाँ... 4. नगरी-नगरी...)

नेता मेरा नाम है, नेतृत्व मेरा काम है।
स्वपर के हित साधने, होता मेरा काम है।... (टेक)

कर्मभूमि के प्रारंभ में ''**कुलंकर**'' मेरा नाम है।
मानवों के हित करने से '**मन**' मेरा नाम है।।

आदि महानेता ऋषभ हुए ''**आदिनाथ**'' शुभ नाम है।
शिक्षा संस्कृति राजनीति के आद्य प्रवर्तन काम है।।...(1) नेता मेरा...

उनके पुत्र भरत हुए प्रथम चक्री अभिराम है।
जिनके नाम पर आर्यावर्त का भारत हुआ नाम है।।

और भी तेईस तीर्थंकर जो धर्म साम्राज्य के नेता हैं।
और भी ग्यारह चक्रवर्ती राज्यशासन के नेता हैं।।...(2) नेता मेरा...

और भी अनेक अर्द्धचर्की हुए राजा व महाराजा हैं।
राज्यशासन के नेता हुए पाले अपनी प्रजा है।।

प्राचीनकाल में भारत में हुए लोक तंत्रात्मक नेता हैं।
लिच्छीवि आदि गणतंत्र के प्रजापालक नेता हैं।।...(3) नेता मेरा...

नेतृत्व द्वारा मानव जाति को आगे बढ़ावे सो नेता है।
सामाजिक से आध्यात्म तक होते विभिन्न नेता हैं।।

धर्म, अर्थ, काम मय राज्य होता राज्य शासन में।
धर्म मोक्ष मूलक, शासन होता है आत्मिक शासन में।।...(4) नेता मेरा...

भारत में जब राजतंत्र में न रहा सही नेतृत्व।
दीर्घकाल तक गुलाम रहा भारत जैसा प्रभुत्व।।

राणा प्रताप शिवाजी तथा लक्ष्मीबाई के नेतृत्व।
मंगलपाण्डे खुदीराम बोस सुभाष चन्द्र प्रभुत्व।।...(5) नेता मेरा...

विवेकानन्द अरविन्द दयानन्द प्रभुत्व।
लाल-बाल पाल गाँधी सावरकर के नेतृत्व।।

भारत पुनः आजाद हुआ, तोड़ पराधीन बन्धन।
ऐसा है मेरा काम काटे जो सबका बन्धन।।...(6) नेता मेरा...

मेरा भी जन्म विदेशों में होता विविध रंग रूप में।
कन्फूसियस, कार्लमॉर्क्स, वार्सिगटन आदि रूप में।।

लिंकन, आब्राहिम, लथुरकिंग, मंडेला आंग सानसू हैं।
लोकतंत्र व समाजवाद, इनकी महान् देन है।।...(7) नेता मेरा...

मेरे नाम पे आज कलंक, लगाये इण्डियन नेता हैं।
लोक सेवक बनके आज, बने तानाशाही नेता हैं।।

भ्रष्टाचार व स्वार्थसिद्धि के, आज पुरोधा नेता हैं।
देश बेचकर आज बने हैं राष्ट्र के सर्वोच्च नेता हैं।।...(8) नेता मेरा...

''कनकनन्दी'' तो काव्य द्वारा, जगाये भारतीय आत्मा को।
भारत जगकर विश्वगुरु बने, दे नेतृत्व विश्व को।।...(9) नेता मेरा...

आचार्य श्री कनकनन्दी- साहित्य कक्ष की सूची

भारत के 14 प्रदेशों के 57 विश्वविद्यालयों में साहित्य कक्ष की स्थापना अभी तक हो चुकी है, आगे प्रायः 100 वि.वि. में स्थापना होगी। विश्व विद्यालयों के अतिरिक्त अन्य स्थानों पर साहित्य स्थापित होने की सूची-

1. श्री दि. जैन पार्श्वनाथ मन्दिर, कविनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
2. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, शास्त्रीनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
3. श्री दि. जैन मन्दिर, दादरी गाजियाबाद (उ.प्र.)
4. श्री दि. जैन मन्दिर, ऐल्लकजी, माण्डोला, गाजियाबाद (उ.प्र.) (श्री विज्ञान सागर द्वारा स्थापित)
5. श्री दि. जैन मन्दिर, बुलन्दशहर (उ.प्र.)
6. प.पू. मुनिश्री विहर्षसागर जी
7. श्री सिद्धान्त तीर्थक्षेत्र, शिकोहपुर, गुडगाँव (हरियाणा)
8. श्री दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, वसुन्धरा, गाजियाबाद (उ.प्र.)
9. श्री दि. जैन मन्दिर, शंकरपुर, शाहदरा, दिल्ली
10. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, वहलना, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
11. डॉ. (पं.) ताराचन्द्र पाटनी ज्योतिषाचार्य, 1132, मनिहारों का रास्ता, जयपुर (राज.)
12. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, गोरेगाँव, मुम्बई (महा.)
13. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर लाइब्रेरी, सेक्शन-16, फरीदाबाद (हरियाणा)

14. श्री एल.डी.जैन, अनिल जैन, श्री महावीर भगवान् दि. जैन मन्दिर, हरिनगर, घण्टाघर, दिल्ली
15. ऋषभाञ्चल जैन मन्दिर, ध्यान केन्द्र, मोरटा, गाजियाबाद (उ.प्र.)
16. श्री वासुपूज्य पार्श्वनाथ दि.जैन मन्दिर, कांधला, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
17. श्री दि. जैन मन्दिर, सासनी, अलीगढ़ (उ.प्र.)
18. श्री दि. जैन मन्दिर, राधोपुरा, शाहदरा, दिल्ली
19. श्री दि. जैन मन्दिर, कैलाशनगर, गली-2, शाहदरा, दिल्ली
20. श्री दि. जैन मन्दिर, कैलाशनगर, गली-12, शाहदरा, दिल्ली
21. श्री दि. जैन मन्दिर, राधोपुरा
22. श्री दि. जैन मन्दिर, रघुबरपुरा, दिल्ली
23. श्रमती कुंकुम जैन, श्री विनोद कुमार जैन 1-3/9 कृष्णानगर, दिल्ली
24. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, सूरजमल विहार, दिल्ली
25. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, सूरजमल विहार, दिल्ली
26. श्री रूप कुमार जैन, ए-236, सूरजमल विहार, दिल्ली
27. श्री अनिल कुमार अग्रवाल जैन, दिलशाद गार्डन मन्दिर दिल्ली
28. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर, घण्टाघर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
29. श्री दि. जैन मन्दिर, त्रिलोकधाम तीर्थ, बड़ागाँव, बागपत (उ.प्र.)
30. श्री चन्द्रवती जैन महिलाश्रम, बड़ागाँव , बागतपत (उ.प्र.)
31. श्री दि. जैन मन्दिर, सञ्जयनगर, गाजियाबाद (उ.प्र.)
32. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, मुनीम कॉलोनी, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)

33. श्री शान्तिनाथ दि. जैन मन्दिर, पंचायती मन्दिर, अनुपुरा, मुजफ्फरनगर (उ.प्र.)
34. श्री हस्तिनापुर तीर्थक्षेत्र पुराना मन्दिर, हस्तिनापुर, मेरठ (उ.प्र.)
35. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, जनरलगंज, कानपुर (उ.प्र.)
36. श्री दि. जैन मन्दिर, मसूरी रोड, देहरादून (उत्तरांचल)
37. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, अशोकनगर फेज-1, नई दिल्ली
38. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, रोशनपुरा, नई सड़क, दिल्ली
39. श्री भगवान् महावीर दि. जैन मन्दिर, N-10 ग्रीनपार्क एक्सटेन्शन, नई दिल्ली
40. श्री दि. जैन मन्दिर, नोएडा सेक्टर 29, नोएडा (उ.प्र.)
41. श्री दि. जैन मन्दिर, सेक्टर 7, अहिंसा विहार, नई दिल्ली (रोहिणी)
42. उत्तर प्रदेश भवन लाइब्रेरी, शिखरजी, जि. गिरीडीह (झारखण्ड)
43. श्री दि. जैन मन्दिर, मुंगाणा, जि. उदयपुर (राज,)
44. श्री दि. जैन मन्दिर, श्री महावीर जी पुस्तकालय, श्री महावीरजी (राज.)
45. श्री दि. जैन मन्दिर लाईब्रेरी, चूलगिरी, जयपुर, राजस्थान
46. श्री आदिनाथ दि. जैन मन्दिर लाईब्रेरी, सेठी कॉलोनी, जयपुर, (राज.)
47. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर, साहिबाबाद, गाजियाबाद
48. श्री दि. जैन मन्दिर, जम्बूद्वीप, हस्तिनापुर, मेरठ (आ. ज्ञानमती माता जी)
49. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर पुस्तकालय, जैन मोहल्ला, पानीपत (हरियाणा)
50. श्री दि. जैन मन्दिर, अहियागंज, लखनऊ (उ.प्र.)
51. श्री दि. जैन मन्दिर, मुन्नालाल कागजी धर्मशाला, लखनऊ (उ.प्र.)

52. श्री दि. जैन मन्दिर, विवेक विहार, शाहदरा, दिल्ली

53. श्री रतनलाल जैन लाईब्रेरी, यूसूफ सराय, नई दिल्ली

54. श्री पार्श्वनाथ दि. जैन मन्दिर (पुराना), बड़ागाँव, बागपत

55. श्री दि. जैन मन्दिर, देवलगाँव राजा (महाराष्ट्र)

56. श्री दि. जैन मन्दिर, औरंगाबाद (महाराष्ट्र)

57. श्री दि. जैन मन्दिर, समनेवाडी (कर्नाटक)

58. श्री दि. जैन धर्मतीर्थ (महाराष्ट्र) कचनेर के पास

59. कन्थुगिरि, आलते, जिला-कोल्हापुर (महाराष्ट्र)

60. अभिनन्दन साधना केन्द्र, त्रिमूर्ति, शेषपुर मोड, जिला-उदयपुर (राज.)

31 वाँ शिविर में आ.कनकनन्दी ससंघ

31 वाँ धर्म दर्शन विज्ञान प्रशिक्षण शिविर में आचार्य श्री कनकनन्दी गुरुदेव ससंघ। (साधुतीर्थ पाडवा 2008)

विश्वधर्म सभा का नगर

पाँचवी विश्वधर्म संसद के कन्वेन्शन सेंटर से मेलबर्न नगर आस्ट्रेलिया का एक दृश्य। इस धर्मसभा में आचार्य कनकनन्दी के शिष्य प्रो.डॉ. कछारा ने भाग लिया। (2006)

सर्व शिक्षा अभियान में आ. कनकनन्दी ससंघ

सर्वशिक्षा अभियान में आचार्यश्री कनकनन्दी गुरुदेव ससंघ। आचार्यश्री ने उद्बोधन में ''सर्वोदय शिक्षा का स्वरूप एवं फल तथा संकीर्ण शिक्षा का कुफल'' के बारे में प्रकाश डाला। (ऋषभदेव-2006)

विश्वधर्म सभा का उद्घाटन

पाँचवी विश्वधर्म संसद का कन्वेन्शन सेंटर के प्लेनरी हॉल में उद्घाटन सत्र। इस सभा में आचार्यश्री कनकनन्दी के शिष्य डॉ.प्रो. कछारा ने भाग लिया। (मेलबर्न-आस्ट्रेलिया 2009)